CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योग के चमत्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री जनक राज चौबे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योग के चमत्कार

(भारतीय योगियों की सच्ची असाधारण
चमत्कारिक घटनाओं का खोजपूर्ण संग्रह)

**
**

लेखक :
डॉ० भगवान शरण भारद्वाज 'प्रदीप'
एम० ए० पी० एच० डी०
बरेली (स्नातकोत्तर) कॉलेज, बरेली

**
**

सम्पादक :
डॉ० चमनलाल गौतम

**
**

प्रकाशक :
संस्कृति संस्थान,
खवाजा कुतुब; वेदनगर,
बरेली-२४३००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब, वेद नगर,
बरेली - २४३००१ (उ. प्र.)

*

लेखक :
डॉ० भगवान शरण भारद्वाज 'प्रदीप'

*

सर्वाधिकार :
प्रकाशकाधीन

*

प्रथम संस्करण
१९७७

*

मुद्रक :
कान्ता प्रिन्टिंग प्रेस
जनरल गंज, मथुरा.

*

मूल्य :
चार रुपये पचास पैसे मात्र

भूमिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामान्य बुद्धि जब किसी कार्य या परिणाम के कारण और प्रक्रिया का सन्धान नहीं कर पाती, तब उसे चमत्कार की संज्ञा दी जाती है। वस्तुतः वहाँ कारण का अभाव नहीं होता, किन्तु वह सामान्य रूप से गोचर या दृश्यमान न होकर तिरोहित रहता है। साधारण व्यक्ति जब अपने सम्मुख घटित होने वाली घटना की कार्य-कारण-परम्परा को विचार-चक्षु से भी उद्घटित नहीं कर पाता, साथ ही घटित की प्रमाणिकता को अस्वीकार करना और सन्दिग्ध भावना भी उसके विवेक को ग्राह्य नहीं होता तब विस्मय से उसका मन आक्रान्त हो उठता है। कभी-कभी कुछ ऐसा घटित हो जाता है जिसके कारण का निर्देश कर पाना वैज्ञानिकों तथा मनोविदों के लिए भी सम्भव नहीं होता और उनकी मनीषा और प्रज्ञा भी विस्मित-विमुग्ध खड़ी रह जाती है। यही चमत्कार की विशिष्टता है।

मनुष्य ने जीवन के विविध क्षेत्रों में जो कुछ उपलब्ध किया है वह अन्तिम और सर्वोच्च नहीं है। उससे यह सिद्ध नहीं होता कि अब इस बिन्दु से आगे नहीं बढ़ा जा सकता या आगे प्रगति की सम्भावना लुप्त हो चुकी है। मनुष्य ने जो कुछ अर्जित किया है उसका महत्त्व कम नहीं है किन्तु मानवीय कर्तृत्व वहीं तक बँध या सिकुड़कर नहीं रह सकता। समस्त अध्यात्म, दर्शन और संस्कृति इस बात की घोषणा पूर्ण विश्वास के साथ करते हैं कि मानव में अनन्त शक्तियाँ निहित हैं और उसकी क्षमताएँ असीम हैं। जीव को ईश्वर का अंश मानने, सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति घोषित करने या परम सत्ता की प्रति कृति स्वीकार करने का आशय यह भी है कि मनुष्य का व्यक्तित्त्व रहस्यपूर्ण है, उसकी थाह लेना या उसकी इयत्ता-अस्मिता को पूरे तौर से नाप लेना कभी सम्भव नहीं। आदमी का अध्ययन, उसकी जाँच-पड़ताल, परीक्षण-निरीक्षण हमेशा होगा, होना चाहिए मगर तब भी उसके व्यक्तित्त्व का बड़ा भाग सारी परिभाषा और व्याख्या-विश्लेषण की लक्ष्मण-रेखा में नहीं अँट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकेगा। भगवान् व्यासदेव जब मनुष्य से बढ़कर कुछ भी नहीं (नमानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्) की घोषणा करते हैं या चण्डीदास गा उठते हैं—

शबार उपर मानुष सत्य
ताहार उपर किछु नाइ।

तब वे मनुष्य के व्यक्तित्त्व में गर्भित, निहित तथा ओतप्रोत अकूत शक्ति पुंज की ओर ही संकेत करते हैं।

मानव की विराट्ता और अनन्त शक्तिमयता का साक्षात्कार, मानवीय अस्तित्त्व का पूर्णतम विकास कैसे हो? मनुष्य जो कुछ हो सकता है, उस स्थिति तक किस मार्ग से अग्रसर हो? समस्त ज्ञान-विज्ञान के मूल में आदमी की विराट्ता के साक्षात्कार का संकल्प अन्तर्हित है। योग हमारे व्यक्तित्त्व के उच्चतम विकास का व्यावहारिक शास्त्र है।

योग हम में आत्मविश्वास जगाता है, अपने प्रति आशावादिता भरता है और विकास की सम्भावनाओं के प्रति हर स्थिति में आस्थावान् रखता है। वह आशा और आस्था के साथ हमारे मंगल का मार्ग प्रशस्त करता है, मूढ़ता, विवेकहीनता और आत्मद्रोह के मूल पर आघात करता है। वह हमें ऐसी सम्पत्ति नहीं दिलाता जो छिन सके या क्षीण हो जाय वरन् हमारे भीतर छिपे हमारे अपने ऐश्वर्य से परिचय कराता है।

विभिन्न योगियों के चमत्कारपूर्ण जीवन-प्रसंगों का संकलन करते समय लक्ष्य यह रहा है कि पाठक हतबुद्धि होकर हक्का बक्का न रह जाय वरन् उसमें यह विवेक जगे कि भौतिक विज्ञान की अपेक्षा आत्मविज्ञान (योग) से घटित होने वाला व्यक्तित्त्व-रूपान्तर स्थायी आनन्द और स्वाधीनता का मार्ग उन्मुक्त करता है। पाठक को यह अनुभव कराना हमारा उद्देश्य रहा है कि यह चमत्कार जादू टोना या हाथ की सफाई नहीं हैं बल्कि पातञ्जल योग दर्शन के विभूति-पाद में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्णित या संकेतित विभूतियाँ हैं जिनकी प्राप्ति पवित्र, सेवा परायण और प्रभु-समर्पित जीवन द्वारा होती है। हम यह नहीं मानते कि पुराने योगियों ने जैसी सिद्धियाँ प्राप्त की थीं, वैसी आज के युग में या भविष्य में नहीं होंगी। योगशास्त्र ने जिन सिद्धियों की गारण्टी दी है, उन्हें कभी पाया जा सकता है पर उसके लिए मूल्य पूरा चुकाना पड़ता है। वहाँ कोई शॉर्ट-कट या पगडंडी नहीं।

योगियों के चमत्कार असम्भव के प्रति हमारी पुरानी धारणा पर चोट करते हैं। योगियों की किताब में 'असम्भव' जैसा कोई शब्द ही नहीं। सामान्यतः जिसे असम्भव कह कर पुकारा जाता है उसे सम्भव कर दिखाना योग के लिए स्वाभाविक और सहज है। इसकी प्रक्रिया भी वैज्ञानिक है जिसका अपना अनुशासन और विधान है। यह पवित्र जीवन का विज्ञान है जहाँ पायी हुई सफलताएँ व्यावसायिक सौदे की चीज नहीं बनतीं। यह श्रद्धा और तप का रास्ता है।

प्रस्तुत पुस्तक .. जिन योगियों के जीवन-प्रसंग दिए गये हैं, उनमें से अधिकांश पिछले तीन चार साल की विभूतियाँ हैं और प्रामाणिक व्यक्तियों ने जाँच-पड़ताल करने के बाद ही अपने ग्रन्थों में उन्हें स्थान दिया है। आशा है प्रस्तुत पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल होगी। मैं इस पुस्तक को गुरु चरणों में तुच्छ भेंट के रूप में अर्पित करता हूँ।

—भगवानशरण भारद्वाज 'प्रदीप'

वसन्त पञ्चमी, २०३३ वि० सं०
हिन्दी विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

१. सिद्धदेह सम्पन्न अमर योगी-दत्तात्रेय १३
२. चैतन्य महाप्रभु के यौगिक चमत्कार १५
३. समर्थ गुरु रामदास की चमत्कारी घटनाएँ १५
४. तैलंग स्वामी के अद्भुत चमत्कार १६
५. काठिया बाबा के अलौकिक कृत्य २३
६. उड़िया बाबा के वरदान सत्य सिद्ध हुए २६
७. कबीर ने मरुभूमि में सरिता प्रवाहित की ३०
८. योगेश्वर रामलाल की यौगिक विभूतियाँ ३१
९. मुर्दों को जीवन दान देने वाले योगी ३६
१०. दूरवर्ती शिष्य की प्राण रक्षा ४२
११. कटा हाथ पुनः जुड़ गया ४३
१२. मृत गाय में प्राणों का संचार हुआ ४३
१३. हृदय गति रोकने की क्षमता वाले योगी ४४
१४. दिल की धड़कन तथा श्वास के अभाव में भी जीवित रहने वाले योगी ४५
१५. नाड़ी की गति में असाधारण उतार-चढ़ाव होने पर भी शारीरिक स्थिति सामान्य रही ४६
१६. सूक्ष्म शरीर से दिव्य-लोकों की यात्रा ४६
१७. सूक्ष्म शरीर से स्वर्ग की यात्रा ४८
१८. सूक्ष्म शरीर से हिमालय की यात्रा ४८
१९. सूक्ष्म शरीर से वृन्दावन यात्रा ४९
२०. सूक्ष्म शरीर से कलकत्ता यात्रा ५१
२१. सूक्ष्म शरीर से लन्दन यात्रा ५२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२२ बाबा गम्भीरनाथ की सूक्ष्म शरीर से विदेश यात्रा ५३
२३. आकाश मार्ग द्वारा भ्रमण करने वाले योगी ५४
२४ भूमि से ऊपर उठने वाले योगी ५८
२५. योगी के स्पर्श से ही शरीर हलका होकर ऊपर उठने लगा ६०
२६. योगियों का सहज में प्रकट और अदृश्य होना ६१
२७. अन्तर्धान होने वाला योगी ६६
२८. अदृश्य होने वाला योगी जिसने नवाब की विचारधारा बदली ६७
२९. योगी देश और विदेश में कहीं भी प्रकट होकर आशीर्वाद देते हैं ६९
३०. योगी के अदृश्य हाथ काठिया बाबा को तीव्र जलधारा से निकाल कर पृथ्वी पर लाये ७१
३१. गंगा में छलांग लगाने से अपने आश्रम पहुँच गये। ७३
३२. योगी ने अचानक प्रकट होकर अधिकारी के कठोर व्यवहार का स्मरण दिलाया। ७३
३३. अचानक प्रकट होकर चेतावनी दी। ७४
३४. योगियों की डाक और पार्सल भी दिव्य मार्ग से जाते हैं। ७५
३५. परकाया प्रवेश करने वाला योगी। ७५
३६. योगी ने मरणासन्न शरीर में प्रविष्ट होकर प्राण वायु ब्रह्म-रन्ध्र से निकलवाया। ७६
३७. अनेक शरीर धारी योगी। ७७
३८. योगियों ने कुत्ते का शरीर धारण किया। ७८
३९. साईं बाबा कुत्ते और भिखारी के रूप में प्रकट हुए। ८०
४०. जिन्होंने दूसरे शरीर द्वारा तूफान से रक्षा की। ८१
४१. भँवर से नाव बचाई। ८१
४२. योगी ने सूक्ष्म शरीर द्वारा बालक की रक्षा की। ८२
४३. सर्वव्यापक योगी। ८३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४४. स्वामी विशुद्धानन्द की सर्वज्ञता । ८४
४५. आनन्दमयी माँ की उपस्थिति सभी लोकों में पाई गई । ८४
४६. अन्तर्यामी माँ । ८५
४७. काल पर नियन्त्रण करने वाला योगी । ८५
४८. भूत-भविष्य के वक्ता-योगी । ८६
४९. योगी की सच्ची भविष्यवाणियाँ । ८७
५०. योगियों की मृत्यु सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ सत्य निकलीं । ८८
५१. भगोड़े लड़के के लौटाने की भविष्यवाणी । ९१
५२. भावी प्रश्न का उत्तर पहले ही देने वाले योगी । ९१
५३. बिना पूछे प्रश्नों के उत्तर दिये गये । ९२
५४. योगी गुरु की अलौकिक सूक्ष्म दृष्टि । ९३
५५. योगी किसी भी घटना की जानकारी क्षण भर में करने की क्षमता रखता है । ९४
५६. बिना देखे लेखक का मनोभाव जाना । ९५
५७. मनोदशा का स्पष्ट अध्ययन । ९५
५८. दूरदर्शन और दूर श्रवण । ९६
५९. भावी दुर्घटना से बचाया । ९६
६०. अतिथियों के आने की सूचना पहले ही दे दी गई । ९७
६१. दूरवर्ती विषय का ज्ञान । ९७
६२. बाबा ने अन्तरंग रहस्य बताया । ९८
६३. दूरदर्शी योगी । ९८
६४. वेष बदल कर कोई योगी से छिप नहीं सकता । ९९
६५. योगी पर शस्त्रों का प्रभाव नहीं हो सका । १००
६६. सिद्धदेह योगी जिनके शरीर पर से बस निकल गई । १००
६७. हजारों वर्षों की आयु वाला योगी । १०१
६८. १५०० वर्ष की अवस्था के योगी । १०१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६९. अन्न जल के बिना जीवित रहने वाला योगी। १०२
७०. योगी अपनी इच्छा से कहीं से भी कोई भी वस्तु मँगा सकता है। १०४
७१. भोजन सामग्री अक्षय हो गई। १०४
७२. इच्छित वस्तु देने वाली-अक्षय झोली। १०७
७३. सब को अपनी रुचि का भोजन दिया। १०९
७४. अतिथि संख्या बढ़ने पर भी फल कम नहीं पड़े। १०९
७५. शून्य से अलभ्य वस्तुएँ प्रकट करने वाला ब्राह्मण। ११०
७६. औषधि का विवरण सुनते ही उसका आविर्भाव हुआ। ११०
७७. ३२ वर्ष से निराहार सती। १११
७८ मृतात्माओं को दीक्षा देने वाले योगी। ११३
७९. छः सप्ताह तक भू-गर्भ में स्वस्थ रहने वाला योगी। ११४
८०. योगी ने अपनी नाभि से कमल उत्पन्न कर दिखाया। ११५
८१. सूर्य रश्मियों से नवीन सृष्टि करने वाला योगी। ११६
८२. ज्ञानेश्वर का चबूतरा चल पड़ा। ११८
८३. भैंसे ने वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ किया। ११९
८४. योगी ने टेढ़ी दीवाल सीधी कर दी। ११९
८५. चलती ट्रेन रुक गई। १२०
८६. जेल के ताले अपने आप टूट गये। १२१
८७. जला हुआ कागज पूर्व रूप में परिणत हो गया। १२१
८८. सिद्ध संत ने पानी को घी बनाया। १२२
८९. नदी का जल दूध बन गया। १२३
९०. पानी के छींटे से मरुस्थल में आम ही आम उगाये। १२३
९१. योगी का शरीर बाढ़ के जल में भी सुरक्षित रहा। १२४
९२. बालशंकर ने नदी की धारा मोड़ दी। १२५
९३. आचार्य शंकर ने घड़े से बाढ़ रोकी। १२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९४. अलकनन्दा की तीव्र धारा में पैदल ही नदी को पार किया १२६
९५. सूखी नदी में बाढ़ आई। १२८
९६. सूखा कुआं जल से भर गया। १२८
९७. सूखा पौधा हरा भरा हो गया। १२८
९८. सूखे और अकाल में पानी बरसा। १२९
९९. गोदावरी के सभी पाषाण खण्ड पारस हो गये। १२९
१००. जल में सब ओर हीरे की अँगूठियाँ ही अँगूठियाँ दिखाई दीं। १३०
१०१. सोने की अँगूठी बनाई। १३०
१०२. माँस से फूल बनाये। १३१
१०३. वन्ध्या के स्तनों में दुग्ध आ गया। १३२
१०४. क्षणमात्र में तिब्बत से लैन्स मँगाया। १३२
१०५. शक्तिपात से वृद्धावस्था को यौवन में परिणत किया गया १३३
१०६. योगीराज भयंकर विष-पोटाशियम सायनाइड़ से भी सुरक्षित रहे। १३३
१०७. नाइट्रिक एसिड विष योगी का कुछ न बिगाड़ पाया। १३५
१०८. पानी का दीपक जलाया। १३५
१०९. भीलनी के रूप में नर्वदा ने गो दुग्ध पिलाया। १३५
११०. वर्फ का चमत्कार। १३६
१११. योगी ने अंग्रेज सेनापति का गर्व चूर किया। १३७
११२. योगी के स्पर्श से मानसिक परिवर्तन हुआ। १३८
११३. सूर्य के प्रचण्ड तेज से योग द्वारा निर्मित बादल द्वारा संरक्षण। १३८
११४. अभिमानी का पैर टेढ़ा हो गया। १३९
११५. योगी की निन्दा से घर में आग लगी। १४०
११६. योग से विकसित शरीरिक शक्ति के अलौकिक चमत्कार। १४०
११७. गुरु ने अपनी भेट अलौकिक रूप से ली। १४१
११८. माँ भैरवी द्वारा चमत्कारिक दान ग्रहण। १४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
११९. चारों ओर शिवलिंग ही शिवलिंग दिखाई देने लगे। १४३
१२०. योगी की दिव्य कान्ति ज्योतिर्मय शंकर जैसी दिखाई दी। १४३
१२१. योगियों के शरीर से दिव्य गंन्ध का अविर्भाव होता है। १४४
१२२. पतञ्जलि ने स्वप्न में महाभाष्य की शिक्षा दी। १४६
१२३. मस्तक में पारे की शिवलिंग की स्थापना। १४८
१२४. देशकालातीत आश्रम। १४९
१२५. योगियों के शारीरिक चित्र न खींचे जा सके। १५०
१२६. दिव्य सहायक का दिव्य प्रकाश। १५१
१२७. विना नशे के आपरेशन कराया। १५२
१२८. विधाता का लेख टल गया। १५२
१२९. स्पर्श से जीवन में क्रान्ति लाने वाले परमहंस देव। १५३
१३०. भक्त महिला को ऊर्ध्व गति प्रदान की। १५४
१३१. स्पर्श से दीर्घ समाधि। १५४
१३२. गुरु ने मूर्ख को महापण्डित बनाया। १५५
१३३. योगी ने सोते समय भी रक्षा की। १५६
१३४. योग शक्ति द्वारा शिष्य की रक्षा। १५७
१३५. गुरु के चित्र ने वज्रपात से रक्षा की। १५८
१३६. योगी द्वारा दावाग्नि से रक्षा हुई। १५९
१३७. हिंसक पशुओं ने हिंसावृति छोड़ी। १५९
१३८. बाघ से निर्भय योगी। १५९
१३९. बाघ ने बाबा की बात मानी। १६०
१४०. बाघ चरणों में लोटा। १६१
१४१. बाघिन और योगी। १६२
१४२. योगी जिनकी बाघों से मित्रता थी। १६३
१४३. बाघ की पीठ सहलाने वाले योगी। १६३
१४४. योगी के तेज से भयभीत शेर भागा। १६४
१४५. शेर से आत्मीय सम्बन्ध। १६५
१४६. सांप का काटा हुआ बच गया। १६५
१४७. सर्प को आमंत्रण दिया। १६६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४८. योगी ने सर्प का आतिथ्य ग्रहण किया। १६६
१४९. सर्प का स्तम्भन। १६७
१५०. सर्प अपनी हिंसावृति भूल गया। १६७
१५१. सर्प से आत्मीय सम्बन्ध। १६८
१५२. मौत के मुँह से बचाया। १६८
१५३. अन्धे का अन्धकार दूर हुआ। १७०
१५४. चेचक से खोई दृष्टि फिर मिली। ३७१
१५५. आनन्दमयी मां की कृपा से रोगी निरोग हुए। १७२
१५६. ध्यान से पीड़ा का शमन। १७३
१५७. स्पर्श मात्र से रोग निवारण की अनोखी घटनाएँ। १७३
१५८. आशीर्वाद मात्र से रोग मुक्ति। १७५
१५९. स्मरण करते ही आविर्भाव और रोग मुक्ति। १७६
१६०. योगीराज के प्रसाद सेवन से जीर्ण रोग नष्ट हुआ। १७७
१६१. चित्र से प्रकट हुई दिव्य ज्योति ने भक्त का रोग निवारण किया। १७७
१६२. योगी के पैर के आघात से हानियाँ दूर हुआ। १७८
१६३. महारानी को दर्द से छुटकारा मिला। १७९
१६४. सर्पदंश का अनोखा उपचार। १८०
१६५. दुःखहारी योगी। १८०
१६६. कष्ट शमन के लिए योगी का दिव्य आविर्भाव। १८१
१६७. एक मास में कष्ट निवारण किया। १८२
१६८. गंगा की मिट्टी से असाध्य रोग दूर किया। १८३
१६९. गंगा-रज से भयंकर रोग निवारण। १८४
१७०. फल खिलाकर प्राणघाती रोग से रक्षा की। १८४
१७१. कुपथ्य द्वारा रोग निवारण का यौगिक चमत्कार। १८५
१७२. बेलपत्र से कुष्ठ शमन किया। १८६
१७३. योग शक्ति से मस्तिष्क का विकार दूर हुआ। १८६
१७४. मृत्यु के बाद भी सदेह दर्शन दिये। १८७
१७५. साधु अवज्ञा का कुफल-अग्नि देवता का कोप। १८७

—×—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योग के चमत्कार

सिद्धदेह सम्पन्न अमर-योगी दत्तात्रेय

भगवान् दत्तात्रेय नैषधीय चरित के रचयिता श्री हर्ष के अनुसार 'अद्वयमयेऽध्वनि सरन्तम्' (२१।९४) अद्वैतमार्ग के महिमाशाली पथिक थे और शिशुपाल वध के रचयिता माघ के शब्दों में 'अविनाशी विग्रह' (१४।७९)अथवा सिद्धदेह सम्पन्न योगी हैं। समस्त भारतीय वाङ्मय में उनकी योग विभूतियों का श्रद्धापूर्वक निरूपण किया गया है। जावालोपनिषद् के अनुसार वह संवर्त्त, आरुणि, श्वेतकेतु, दुर्वासा, रैवतक आदि की कोटि के अवधूत परमहंस हैं।

आदि गुरु दत्तात्रेय ने मध्य युग में गुरु गोरखनाथ को उपदेश दिया। यही नहीं श्रीपाद, श्री वल्लभ, नृसिंह सरस्वती, एकनाथ जी, जनार्दन स्वामी, कीनारामजी, सदाशिव ब्रह्मेन्द्र स्वामी, अक्कलकोट स्वामी, साईं बाबा, वासुदेवानन्द सरस्वती आदि महात्माओं पर उनकी विशेष कृपा रही है। समर्थ स्वामी रामदास को गुरु दत्तात्रेय ने दर्शन देकर अपनी पादुकाएँ और दण्ड प्रदान किए थे, जो आज भी सज्जनगढ़ के मठ में सुरक्षित हैं। स्वयं श्रीपाद वल्लभ और नृसिंह सरस्वती भी सिद्ध महात्मा हैं जो विभिन्न समयों पर भक्तों को दर्शन देकर अनुगृहीत करते रहे हैं। जनार्दन स्वामी (१५०४—१५७४ ई०) दौलताबाद के दीवान थे। उन्हें दक्षिण सतारा में अंकलखोप के पास एक गूलर वृक्ष के नीचे कृष्णा नदी के तट पर नृसिंह सरस्वती का दर्शन हुआ

१४CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। डा० रानाडे ने 'Mysticism in Maharashtra में स्पष्ट लिखा है—

It is said that Janardan Swami was converted by Guru Dattatreya who appeared before him and placed his hand on his head as a sign of his blessings. This was immediately followed by the revelation of his own self in the Course of which the world was altogether forgotten and he began to rest in his own eternal self conciousness."

दत्तात्रेय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत बताया जाता है। डॉ० गोपीनाथ कविराज जी के शब्दों में—'साधुसमाज में प्रसिद्ध है कि वे सह्याद्रि की तराई में रेणुकापुर या मातापुर नामक स्थान में प्रतिदिन विश्राम करते हैं। सह्याद्रि के शिखर पर उनका निवास-स्थान है। यह उनका पीठ-स्थान है। भगवान् काशीक्षेत्र या वाराणसी में प्रतिदिन गंगा स्नान करने आते हैं। कुल्नाड क्षेत्र में अर्घ्यदान और प्रातः सन्ध्या करते हैं। महालक्ष्मी का पीठ-स्थान कोल्हापुर या दक्षिण काशी में वे भिक्षा ग्रहण करते हैं और पांचाल पुर में उस भिक्षान्न का भोजन करते हैं। विट्ठलपुर में यानी चन्द्रभागा के किनारे पर बसे पण्ढरपुर (जि० सोलापुर) में तिलक धारण करते हैं। भीमा और अमरजा नदी के संगम स्थल गणगापुर में योग साधना करते हैं। कुरुक्षेत्र के स्यमन्तक तीर्थ में आचमन करते हैं। इस तरह यद्यपि भगवान् दत्तात्रेय प्रतिदिन लीला के काज से भिन्न-भिन्न स्थानों में संचार करते रहते हैं, फिर भी उनका स्मरण करने वाले भक्तों के लिए वे अत्यन्त निकट हैं। इससे मालूम पड़ता है कि प्रतिदिन सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किसी न किसी कर्म के बहाने वे सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा करते रहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, कारण, सिद्ध देह में देश और काल का व्यवधान गति का बाधक नहीं होता।'

—*—

चैतन्य महाप्रभु के यौगिक चमत्कार

श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक बार श्री अद्वैत प्रभु को विश्व रूप का दर्शन कराया था तथा नित्यानन्द को षड्भुजनारायण, चतुर्भुज और द्विभुज रूप का। गोदावरी के तट पर ये राय रामानन्द के सामने श्री कृष्ण और श्री राधा के रूप में प्रकट हुए। अपने जीवन के शेष भाग में जब ये नीलाचल में रहते थे, एक बार ये बन्द कमरे से बाहर निकल आये थे। उस समय इनके शरीर के जोड़ खुल गये थे जिससे इनके अंग बहुत लम्बे हो गये थे। एक दिन इनके अवयव कछुए के अंगों की भाँति सिकुड़ गये और ये मिट्टी के लोटे की भाँति जमीन पर पड़े रहे। इन्होंने कई कोढ़ियों को अपने स्पर्श से ही रोगमुक्त कर दिया। एक बार चैतन्य देव भक्त नरहरि सरकार ठाकुर के गांव श्रीखण्ड पहुँचे वहाँ नित्यानन्द को मधु की आवश्यकता हुई। महाप्रभु ने उस समय एक सरोवर के जल को ही मधु के रूप में बदल दिया, तब से अब तक वह तालाब मधुपुष्करिणी के नाम से प्रसिद्ध है।

—*—

समर्थ गुरु रामदास की चमत्कारी घटनाएँ

समर्थ स्वामी रामदास उस समय नासिक के समीप टाफली ग्राम में एक गुफा में त्रयोदशाक्षर राममन्त्र का पुरश्चरण कर रहे थे। एक दिन उधर से एक विधवा स्त्री ने आकर प्रणाम किया। स्वामी जी ने उसे आशीर्वाद दिया—'अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव।' स्त्री ने पूछा महाराज, इस जन्म में या दूसरे जन्म में? बात यह थी कि उस स्त्री के पति की मृत्यु अभी हुई थी और वह सती होने से पूर्व सन्त को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रणाम करने आयी थी। रामदास जी ने कहा—अच्छा, शव को यहाँ ले आओ। सामने आते ही उन्होंने श्रीराम नाम लेकर तीर्थ-जल छिड़का और अन्नपूर्णा बाई का पति गिरधर पन्त 'राम-राम' उच्चारण करता हुआ जीवित हो उठा।

तीर्थयात्रा समाप्त करने के बाद समर्थ ने पैठण में कीर्तन किया और किसी चमत्कार का प्रदर्शन किया। वहाँ उन्हें जानकारी मिली कि माता जी की नेत्र ज्योति समाप्त हो चुकी है। महाराज तुरन्त जाम्ब गाँव गये। द्वार से आवाज दी 'जय जय रघुवीर समर्थ।' माता ने आवाज सुनली और पूछा —'कौन मेरा बेटा नारायण? समर्थ ने कहा—'हाँ, माताजी, मैं ही हूँ।' यह कह कर जननी के चरणों में मस्तक रख दिया। चौबीस वर्ष के दीर्घ काल के बाद माता-पुत्र का मिलन हुआ। समर्थ ने माता के नेत्रों पर अपना हाथ फेरा जिससे उन्हें खोयी हुई नेत्र ज्योति मिल गयी।

—*—

तैलंग स्वामी के अद्भुत चमत्कार

१— योगीवर तैलंग स्वामी अपनी इच्छा से यत्र तत्र विचरण करते रहते थे। वे नग्न अवस्था में ही घूमा करते थे। एक बार काशी के एक अँग्रेज मजिस्ट्रेट ने स्वामी जी के इस प्रकार भ्रमण पर आपत्ति प्रकट की तथा इसके विरुद्ध कार्यवाही करने का निर्णय किया।

एक सिपाही को स्वामी जी के पास भेजा गया और उसे आदेश दिया गया कि उन्हें किसी प्रकार थाने में लाये। सिपाही अन्य कई सिपाहियों की सहायता से एक डोला पर चढ़ाकर स्वामीजी को मजिस्ट्रेट के सामने लाया। मजिस्ट्रेट ने आदेश के स्वर में स्वामी जी से कहा कि अब आप नग्न अवस्था में इधर-उधर न घूमें। किन्तु स्वामी जी तो ध्यानाविष्ट थे, उन्होंने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। क्रोधित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर मजिस्ट्रेट ने स्वामी जी को हथकड़ी पहना कर हवालात में बन्द करने का हुक्म दिया।

किन्तु यह क्या ? क्षण भर में ही पहरे से घिरे कमरे सब के देखते-देखते स्वामी जी गायब हो गये। स्वामी जी को हर जगह खोजा गया। अन्त में वे उसी स्थान पर चुपचाप खड़े पाये गये, जहाँ से उन्हें सिपाही ले गया था। मजिस्ट्रेट ने अब स्वामी जी की शक्ति को जान लिया था किन्तु कुछ और परीक्षा करने के विचार से कहा—'यदि स्वामी जी मेरे सामने मेरा भोजन ग्रहण कर लें तो मुझे विश्वास हो जायगा कि इन्हें सब वस्तुओं में समज्ञान है।' मजिस्ट्रेट ने सोचा था कि वह स्वामी जी को मांस युक्त भोजन करने को बाध्य करेगा।

स्वामी जी के समक्ष जब यह बात रखी गयी तो वे तैयार हो गये, किन्तु एक शर्त के साथ। स्वामी जी की शर्त थी कि मजिस्ट्रेट को पहले स्वामी जी के साथ भोजन करना होगा।

मजिस्ट्रेट साहब ने सोचा कि भारतीय योगी तो फलाहारी होते हैं। अतः स्वामी जी के साथ भोजन करने में क्या आपत्ति हो सकती है। उन्होंने स्वामी जी की शर्त स्वीकार कर ली।

इजलास में स्वामी जी व मजिस्ट्रेट साहब के विशिष्ट भोजन को देखने के लिए अपार जन समूह एकत्रित हो गया। सबके सामने ही स्वामी जी ने अपने हाथों पर मल त्याग किया और मजिस्ट्रेट के सामने हाथ बढ़ाकर कहा—'मेरा आज का भोजन यही है। आइये, साथ दीजिए। स्वामी जी उसे खाने लगे। हाँ, स्वामी जी के मुख की ओर जाते ही योग शक्ति के प्रभाव से वह विष्टा स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों में बदल जाती थी। यह कृत्य देख मजिस्ट्रेट साहब भौचक्के रह गये। उन्होंने स्वामी जी को प्रणाम किया तथा क्षमा याचना पूर्वक इच्छानुसार भ्रमण की स्वीकृति प्रदान कर दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२—काशी में एक नये मजिस्ट्रेट आये थे। वे मिजाज से बहुत कड़े थे। एक दिन उन्होंने स्वामी जी को नग्न विचरते हुए देखा। तैलंग स्वामी को नग्न देख मजिस्ट्रेट बहुत क्रोधित हुआ और स्वामी जी को हवालात में बन्द करवा दिया। बाहर से ताला डाल कर कड़ा पहरा बिठा दिया गया।

दूसरे दिन मजिस्ट्रेट नये कैदी को देखने पधारे। उन्होंने देखा कि स्वामी जी बरामदे में टहल रहे हैं। वे किस प्रकार कोठरी से बाहर आ गये, यह कोई न जान सका। पहरेदार से पूछा गया, ताले, दरवाजे, दीवाल आदि की जाँच की गयी, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। परेशान होकर मजिस्ट्रेट ने स्वामी जी से पूछा कि वे बन्द कोठरी में से बाहर कैसे आ गये। स्वामी जी ने कहा—'सवेरा होते ही बाहर घूमने की इच्छा हुई, सो बाहर आ गया। इसमें बाधा की क्या बात है।'

क्रोधित मजिस्ट्रेट ने अपने हाथों से दोहरा ताला लगाकर स्वामी जी को कोठरी में बन्द कर दिया। कुछ क्षणों बाद स्वामी जी नग्न अवस्था में मजिस्ट्रेट साहब की अदालत में खड़े पाये गये। इस असम्भव घटना को देख मजिस्ट्रेट के होश उड़ गये। स्वामी जी ने साहब से कहा—'आप लोग जड़ शक्ति में विश्वास रखते हो। सृष्टि में जड़ जगत् के साथ महाचैतन्य लोक भी है। जिसका उसके साथ सम्पर्क हो गया, उसके लिए कोई बाधा नहीं हो सकती। आप इतने आश्चर्य-चकित क्यों हैं? भारतीय योगियों के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है। मुझ जैसे साधु-सन्यासी को परेशान करने से तुम्हें क्या लाभ है? दूसरे तुम में शक्ति ही कितनी है? तुम सन्यासियों को क्या परेशान कर सकोगे?

अब मजिस्ट्रेट साहब प्रबुद्ध हुए। उन्होंने तुरन्त एक विशेष आदेश जारी किया जिसके अनुसार स्वामी जी इच्छानुसार किसी भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप में चाहे जहाँ घूम सकते हैं। उन्हें कोई रोक-टोक नहीं है। भविष्य में भी कोई इन्हें परेशान नहीं करेगा।

३—काशी भ्रमण के लिए आये हुए उज्जैन के राजा एक दिन नौका से गंगा में विहार कर रहे थे। उसी समय तैलंग स्वामी उस नौका के निकट से तैरते हुए चलने लगे। राजा के कुछ नौकर स्वामीजी को पहचानते थे। निकट आने पर उन लोगों ने स्वामी जी को धारा में से उठाकर नौका में बैठा लिया। तथा राजा को महायोगी स्वामी जी का परिचय दिया।

नौका पर बैठने के बाद राजा के साथ सभी लोगों ने स्वामीजी को प्रणाम किया। स्वामी जी भी बालक की भांति आचरण करते हुए नौका पर बैठ गये। शीघ्र ही उनकी दृष्टि राजा की कमर में लटकती तलवार पर पड़ी। स्वामी जी ने राजा से तलवार माँग ली और उसे अपने हाथों में घुमाने लगे। एकएक उन्होंने उसे गंगा में फेंक दिया।

राजा को वह तलवार अँग्रेज सरकार से खिलअत के रूप में मिली थी, अतः वे उसे अपनी बहुमूल्य सम्पत्ति समझते थे। तलवार चले जाने से वे बहुत रुष्ट हुए तथा सन्यासी को कठोर दण्ड देने की धमकी देने लगे।

स्वामी जी के प्रताप के जानकार लोगों ने राजा को बहुत समझाया किन्तु राजा ने उनकी एक न मानी। नौका घाट पर रुकी किन्तु राजा सन्यासी को बिना दण्ड दिये छोड़ने को तैयार नहीं थे। स्वामी जी चुपचाप उन सबके वार्तालाप को सुन रहे थे। जब राजा का क्रोध सीमा पार कर गया तो स्वामीजी ने गंगा जल में अपना हाथ डाला और गंगा में से दो चमकती हुई तलवारें निकाल लीं। राजा को तलवारें दिखाते हुए स्वामी जी ने कहा कि इन तलवारों में एक तुम्हारी है, जो तुम्हारी तलवार हो उसे तुम ले लो। राजा अब मूढ़-बुद्धि हो गये थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे नहीं समझ पा रहे थे कि उनमें कौन सी उनकी तलवार है क्योंकि दोनों तलवारें एक जैसी ही थीं।

तैलंग स्वामी राजा की ओर देखकर हँसने लगे और बोले—'मूर्ख ! तुम अपनी वस्तु को ही नहीं पहचान सके। तुम मोह, दम्भ एवं अभिमान के कारण अपने स्वरूप से पृथक हो गये हो। तुम्हें अपने पराये का ज्ञान नहीं है। मृत्यु के बाद यह तलवार तुम्हारे साथ नहीं जायगी और जो तुम्हारे साथ नहीं जायगी, वह तुम्हारी कैसे हो सकती है।' यह कहकर स्वामी जी ने राजा की तलवार राजा को देकर दूसरी गंगा में फेंक दी।

४—एक बार तैलंग स्वामी रामेश्वर धाम पधारे। वहाँ उस समय एक बड़ा मेला लगा था। सहस्रों लोगों की भीड़ थी। मेले में अचानक एक रोगी ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु हो गयी। संगी-साथी करुण क्रन्दन एवं चीत्कार करने लगे। कुछ लोगों ने आश्वस्त होकर मृतक के अन्तिम संस्कार की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

उसी समय तैलंग स्वामी उस स्थान से होकर कहीं जा रहे थे। मृतक के साथियों का करुण विलाप सुनकर स्वामी जी का हृदय द्रवीभूत हो उठा और उन्होंने अस्फुट स्वर से मन्त्रोच्चारण करते हुए अपने कमण्डलु से जल की कुछ बूँदें मृतक के शरीर पर छिड़कीं और वहाँ से अदृश्य हो गये।

अब तो उपस्थित जन-समूह के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मृतक ने अपनी आँखें खोल दीं तथा धीरे-धीरे उसके हृदय की गति बढ़ने लगी। कुछ ही देर में वह उठकर बैठ गया। बाद को उस व्यक्ति ने स्वामी जी से अपनी भेंट की बात सभी को बता दी और कहा 'जब मेरा सूक्ष्म शरीर इस लोक से जा रहा था तभी मुझे एक महात्मा के दिव्य प्रकाशमय स्वरूप के दर्शन हुए। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा पुनः उसी शरीर में लौट जाने की आज्ञा दी। उन्हीं की आज्ञा मानकर मैं यहाँ आया हूँ।

इस घटना के सम्बन्ध में साधारण लोग तो जान नहीं सके कि किस महात्मा का प्रताप है किन्तु सिद्ध पुरुषों से यह छिपा न रह सका कि यह तैलंग स्वामी ही थे जिन्होंने उस ब्राह्मण-पुत्र को जीवन-दान दिया था।

५—श्री तैलंग स्वामी विचरण-शील स्वभाव के व्यक्ति थे। एक बार वे मानसरोवर की यात्रा समाप्त कर समतल भूमि में नीचे उतर रहे थे। मार्ग में एक स्थल पर उन्होंने ग्रामवासियों की एक भीड़ को देखा। भीड़ में एक विधवा महिला करुण-क्रंदन कर रही थी। उसके सामने उसका सात वर्ष का एक बालक मरा पड़ा था। पति की मृत्यु के बाद यही उसके जीवन का आधार था, इसीलिए महिला को अपार वेदना हो रही थी।

भीड़ में कुछ लोग बच्चे के अन्तिम संस्कार की तैयारी कर रहे थे। इतने में योगीराज वहाँ पधारे। उस स्त्री ने योगीराज को देख तथा उन्हें देवदूत समझकर उनकी गोद में अपने पुत्र को डाल दिया तथा करुण क्रंदन करने लगी। उस स्त्री के विलाप से योगीराज का अन्तर द्रवीभूत हो उठा। उन्होंने मृत बालक के शरीर को अपने दिव्य हाथों से छू दिया। धीरे-धीरे उसमें प्राण संचार होने लगा। सब लोग आनन्द मग्न हो गये। कुछ लोग स्वामी जी के सत्कार के लिए दौड़े किन्तु इसी बीच स्वामी जी कहीं अदृश्य हो गये। 'स्वामी जी कहाँ चले गये' यह कोई नहीं जान पाया।

६—एक बार तैलंग स्वामी रामतारण भट्टाचार्य के साथ त्रिवेणी संगम के घाट पर बैठे भगवत्चर्चा कर रहे थे। इतने में बादल उमड़ने लगे, बिजली चमकने लगी। ऐसा प्रतीत हुआ कि शीघ्र ही वर्षा होगी। भट्टाचार्य ने स्वामी जी से निवेदन किया कि इस वर्षा में यहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठना उचित नहीं। पास की किसी कुटी या घर में आसन जमाना चाहिये जिससे वर्षा से रक्षा हो सके। भटटाचार्य का कथन सुनकर स्वामी जी ने कहा—'मेरी चिन्ता तुम मत करो। मुझे कहीं कोई कष्ट नहीं होगा। हाँ! अभी उस नाव के यात्रियों की रक्षा करनी है।'

रामतरण बाबू की दृष्टि एक साथ गंगा-प्रवाह की ओर मुड़ गयी। उन्होंने देखा कि नदी के बीचोबीच एक नाव जोरों से हिल रही है। कुछ देर में नौका ने पलटा खाया और डूब गयी।

नौका को डूबा देख रामतरण रोने लगे। किन्तु यह क्या? स्वामी जी आसन पर नहीं हैं। पता नहीं क्षण भर में स्वामी जी किस समय और कहाँ चले गये? जब दूसरी बार रामतरण ने नौका की ओर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। न मालूम किस जादू के बल से नौका ठीक हो गयी।

जब घाट पर नौका आयी तो रामतरण भटटाचार्य ने देखा कि अन्य यात्रियों के साथ स्वामी जी भी नाव से उतर रहे हैं। नाव पर स्वामी जी किस समय पहुँचे, इसका पता न तो यात्रियों को ही था और न नाविकों को।'

७—तैलंग स्वामी मिताहारी थे। वे लम्बा उपवास करते तथा किसी भक्त द्वारा लाये गये दही या अन्य किसी पेय पदार्थ को पीकर अपना उपवास तोड़ते। एक बार किसी व्यक्ति ने उन्हें परेशान करने के विचार से सफेदी करने वाला चूना घोलकर एक बाल्टी में स्वामी जी की सेवा में प्रस्तुत किया तथा बड़े भक्ति-भाव से उसे ग्रहण करने की प्रार्थना की। तैलंग स्वामी ने बिना किसी हिचक के सारा चूना पी लिया। किन्तु यह क्या? कुछ ही मिनटों बाद उस व्यक्ति ने चीखना शुरू किया—'स्वामी जी! मुझे बचाइए। मेरा अपराध क्षमा कर दीजिये। इस आग से मुझे उबारिए।' इस प्रकार प्रलाप कर पीड़ा से छटपटाता हुआ भूमि पर लोटने लगा। स्वामी जी ने कहा—'तुमने मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो विष पिलाया है, वह मेरे साथ तुमने भी पिया है क्योंकि तुम और हम एक ही हैं। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे और मेरे अन्दर एक ही ईश्वर का निवास है। अब तुम कर्म-फल-भोग का अर्थ समझ गये होगे। भविष्य में किसी के साथ इस प्रकार की चालाकी करने की कोशिश मत करना।'

इतना कहकर स्वामी जी ने उसके सिर पर हाथ रखा और पीड़ा मुक्त कर दिया। वह व्यक्ति स्वामी जी को बार-बार प्रणाम कर चुपचाप वहाँ से चला गया।

—※—

काठिया बाबा के अलौकिक कृत्य

१—एक बार सन्त रामदास काठिया बाबा किसी ग्राम में पंचधूनी जलाकर तप कर रहे थे। समीप ही एक और संन्यासी आकर टिक गये। रामदास की तप सिद्धि और योग बल देख कर उन्हें ईर्ष्या होने लगी।

एक दिन उसने काठिया बाबा के प्राण नष्ट करने की योजना बनाई। जब सन्त काठिया बाबा ध्यानस्थ थे, उसने उनकी धूनी पर चारों ओर बड़ी मात्रा सूखी लकड़ियाँ रख दीं। बाबा के चारों ओर लकड़ियाँ प्रचण्ड ताप के साथ जलने लगी। गाँव वालों ने आग चलती देखी तो अनुमान लगाया कि अब सन्यासी जी नहीं बचेंगे। इस आग से उनका शरीर अवश्य दग्ध हो जावेगा। जल्दी जल्दी सबने आग बुझायी। किन्तु जब लोगों ने बाबा को देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बाबा के शरीर पर उस आग का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

बाद में बाबा ने स्वीकार किया कि योग बल और मन्त्र-शक्ति के कारण ही इस आग से उनका शरीर बच पाया। बाबा ने कहा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब महात्मा पंचधूनी तपने बैठता है तो आत्मरक्षा के मंत्र को जाग्रत करना होता है । जिस योगी का शरीर आग में जल जाता है, वह सच्चा योगी नहीं होता ।'

२—श्री तारा किशोर बाबू के मित्र विजय बाबू ने एक बार संथाल परगने में रामदास काठिया बाबा के दर्शन किये थे। पूरे तीन दिन विजय बाबू ने बाबा से योग सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण की थी, किन्तु इस बीच उन्हें बाबा का परिचय प्राप्त नहीं हो सका ।

एक दिन वे अपने मित्र तारा किशोर के घर गये । वहाँ काठिया बाबा के चित्र को टँगा देखकर चकित हो परिचय जानना चाहा । तारा किशोर ने बताया कि 'यह मेरे गुरु वृन्दाबन के प्रसिद्ध महन्त रामदास काठिया बाबा हैं।' परिचय पाकर विजय बाबू ने बाबा के साथ हुए अपने साक्षात्कार की बात बतायी ।

वास्तविक बात का पता तारा किशोर को वृन्दावन आकर लगा । जिन दिनों विजय बाबू का साक्षात्कार बाबा के साथ हुआ, उन दिनों बाबा वृन्दावन में ही थे, कहीं गये ही नहीं थे । जब तारा किशोर ने विजय बाबू द्वारा कथित बात बतायी तो बाबा ने सहज भाव से उत्तर दिया—'मैं यहाँ रहते हुए भी दूसरे स्थानों पर भी सशरीर जा सकता हूँ । इस सम्बन्ध में अधिक ज्ञातव्य बातें तुम्हें तुम्हारी प्रगति के साथ ज्ञात होंगी ।

३—एक बार रामदास काठिया बाबा यमुना के किनारे होकर आगरे की ओर जा रहे थे । उस समय भारत में सैनिक विद्रोह छिड़ा हुआ था । अतः स्थान-स्थान पर गोरों की सेना लगी हुई थी । गोरों की सेना का एक जहाज यमुना में पड़ा था । जब स्वामी जी उस जहाज के समीप से निकले तो एक सिपाही ने इन्हें भारतीयों का जासूस समझ कर गोली चला दी । गोली बाबा के कान के पास से होकर निकल गयी । काठिया बाबा रुके नहीं, निर्भय होकर चलते ही रहे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहला निशाना चूक जाने पर उस गोरे सिपाही ने दूसरी गोली चलानी चाही। यह देख काठिया बाबा मन ही मन खीझ उठे। अतः कुछ देर रुक कर ध्यानस्थ हो गये। उसी क्षण उस सैनिक के हाँथ से किसी अलौकिक कारण से बन्दूक छूट गयी और यमुना में डूब गयी।

यह कृत्य देखकर गोरे सिपाही सशंकित हो उठे। वे समझ गये कि यह कोई साधारण नहीं, शक्तिशाली योगी है। जहाज से उतर कर उन सिपाहियों ने बाबा को प्रणाम किया।

४—संत रामदास काठिया बाबा के आश्रम में एक हनुमान की मूर्ति थी। मूर्ति के निकट ही बाबा के निवास का कमरा था। वह बड़ा ही अधंकार पूर्ण एवं संकीर्ण था। कमरे में स्थान स्थान पर दरारें थीं जिनमें विषधर सर्प रहते थे किन्तु बाबा अपनी योग-शक्ति के कारण कभी सांपों से भयभीत नहीं हुए तथा सांपों ने कभी बाबा का अहित नहीं किया।

एक सांप तो प्रतिदिन रात को हनुमान की मूर्ति से लिपट जाता था। सवेरे उठकर नित्य ही बाबा एक छड़ी के सिरे पर कपड़ा लपेट धीरे धीरे उसे वहाँ से हटाते और कहते जाते 'अरे जल्दी हट जा, पूजा को देर होती है।' सर्पराज भी अपनी सुख निद्रा को भंग कर सहर्ष वहाँ चले जाते। उसके पश्चात ही बाबा अपना पूजन भजनादि नित्य-कर्म करते थे।

५—तारा किशोर ने काठिया बाबा से दीक्षा लेकर योग-सम्बन्धी क्रियाओं का अभ्यास करने का विचार किया था। इस प्रसङ्ग में वे दो बार स्वामी जी से मिल भी चुके थे तथा उन्हें स्वामी जी की ओर से आश्वासन भी मिल चुका था। किन्तु जब दूसरी बार तारा किशोर स्वामीजी से वृन्दावन में मिले थे तो स्वामी जी का ऊपरी व्यवहार उन्हें प्रभावित न कर सका। वे बार-बार सोचते कि इस प्रकार का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यवहार करने वाला व्यक्ति क्या इतना बड़ा ब्रह्म ज्ञानी हो सकता है ? यह स्वामी जी गुरु बनाने के लिए उचित हैं या नहीं। तात्पर्य यह कि उन्हें अभी स्वामी जी पर पूरी श्रद्धा नहीं थी। स्वामी जी ने भी उनके मनश्चाञ्चल्य को ताड़कर दीक्षा-कार्य कुछ समय के लिए टाल दिया था।

एक दिन रात्रि को जब चिन्तन करते-करते तारा किशोर की मनोव्यथा बहुत बढ़ गयी तो उन्होंने सब कुछ ईश्वर पर छोड़ देना अच्छा समझा और चुपचाप शयन करने लगे। सहसा उनकी दृष्टि के सामने तीव्र प्रकाश चमक उठा। वे शय्या पर उठ बैठे। देखा, सामने काठिया बाबा का ज्योतिर्मय स्वरूप चमक रहा है। शीघ्र ही तारा किशोर ने गुरुदेव को प्रणाम किया। अब काठिया बाबा ने उन्हें समझाया और कान में एक मंत्र प्रदान किया। आश्वासन एवं आशीर्वाद देकर महापुरुष वहाँ से आकाश मार्ग से अदृश्य हो गये।

गुरुदेव के इस अलौकिक आविर्भाव एवं दीक्षा-प्रदान से तारा किशोर के सारे संशय दूर हो गये और निर्धारित समय पर विधिवत् दीक्षा-ग्रहण कर वे काठिया बाबा के शिष्य बन गये।

६—एक बार किसी बात को लेकर रामदास काठिया बाबा का कुछ चोरों से प्रबल विवाद हो गया। चोरों ने बाबाजी को धमकी दी कि वे बाबा को हानि पहुँचावेंगे। काठिया बाबा धमकी सुनकर क्रोधित हो गये, बोले—'यह चोर तो सिर पर सवार हो गये हैं। साधुओं को भी धमकाते हैं। आज ही इनको पुलिस पकड़ कर ले जावेगी।'

चोर हँसते हुए उपेक्षापूर्वक बोले—'हाँ हाँ, जाओ। हमने थाने पहुँचाने वाले भी देख लिये हैं।'

बाबा ठहरे परम योगी। उनका वचन मिथ्या कैसे हो सकता था ? उसी रात में पुलिस उन चोरों को पकड़ ले गयी। वे संख्या में तीन थे।

कुछ दिन बाद तीनों चोर जमानत पर रिहा हुए। दो चोर तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाबा की योग-शक्ति से प्रभावित हुए। अतः जमानत पर आने के बाद बाबा से क्षमा-याचना करने आ पहुँचे। बार-बार प्रार्थना करने पर बाबा ने उनसे कहा—'तुम उचित समय पर आये हो। अब तुम्हारा जीवन सुधर जायगा। प्रतिज्ञा करो कि अब अपराध नहीं करेंगे तथा साधु-सन्तों की मर्यादा की रक्षा में तत्पर रहेंगे।'

दोनों चोरों ने तत्क्षण यह प्रतिज्ञा कर ली और बाबा के प्रभाव से उस मुकदमे से छूटकर साधुओं की जमात में मिल गये। तीसरा चोर जो बाबा के पास अभिमान वश नहीं आया, कठोर दण्ड का भागी हुआ।

कुछ समय बाद बाबा मथुरा के मार्ग से जा रहे थे। देखा कि पूर्व-परिचित तीसरा चोर राजमार्ग की मरम्मत में लगा दिया गया है। उसकी कमर से जंजीर बंधी थी जो उसके कैदी होने का चिह्न थी। बाबा को देखकर वह बड़ी जोर से रो पड़ा और अनुनय-विनय करने लगा।

बाबा ने देखा कि अब इसका अन्तर निर्मल हो गया है। अतः उसे आशीर्वाद दिया और कहा—'आज से तीसरे दिन तुम रिहा हो जाओगे। खबरदार, अब कभी भी साधु-सन्तों का निरादर मत करना।'

बंदी चकित रह गया क्योंकि अभी तो उसकी सजा पूरी होने में बहुत बिलम्ब था। अपील भी खारिज हो चुकी थी। किन्तु बाबा भविष्य के ज्ञाता हैं। झूठ कैसे बोलेंगे। अतः वह चोर चुप रहा।

सचमुच तीसरे दिन उसकी रिहाई का आदेश आ पहुँचा। सरकार की ओर से किसी खुशी में हर जेल से तीन तीन कैदी छोड़े गये थे जिनमें उसका भी नम्बर था।

अब तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। दौड़ा-दौड़ा सीधा बाबा के पास आया और साष्टाङ्ग प्रणाम कर आशीर्वाद लेकर घर गया। परवर्ती काल में वह व्यक्ति बहुत ही सज्जन और धार्मिक व्यक्ति बन गया। T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७—योगीवर रामदास काठिया बाबा का एक शिष्य था—साधु चरित एवं धर्मनिष्ठ किन्तु कभी कभी क्रोधित होकर अनुचित आचरण कर बैठता। एक दिन गाँजा पीकर नशे की झोंक में कई पड़ोसी ब्रजवासियों को अनाप-सनाप गालियाँ देने लगा। बाबा उससे स्नेह करते थे। अतः समीप बुलाकर कहा—'अरे, तुम तो बड़े क्रोधी हो गये हो। इस क्रोध को दबाने के लिए आज से मौन व्रत धारण कर लो। बारह वर्ष तक तुम किसी के साथ बोलोगे भी नहीं।'

बाबा के इस निर्देश के साथ ही शिष्य को ऐसा लगा जैसे किसी ने जीभ में ताला लगा दिया हो। बाबा की योग-शक्ति से उसकी वाक्शक्ति नष्ट हो चुकी थी। अब वह केवल इशारे से बात कर सकता था। एक बार भयंकर विषधर सांप के डस लेने पर भी उस शिष्य के मुख से चीख न निकल सकी। वे केवल इशारे से बता सके और उपचार के बाद भयंकर विष से बच गये।

निरन्तर मौन रहने के कारण लोग उन्हें मौनी बाबा कहकर पुकारने लगे। बारह वर्ष पश्चात् जब गुरु कृपा से उनकी वाक्-शक्ति उन्हें पुनः प्राप्त हुई, तब कहीं वे बोलने में समर्थ हो सके। परवर्ती काल में मौनी बाबा कहा करते थे—'मुझे बाध्य होकर उन बारह वर्षों में मौनी बनकर रहना पड़ा था।'

उनका मौन-व्रत भी अलौकिक ढंग से समाप्त हुआ। मौन-व्रत समाप्त होने वाले दिन बाबा ने एक भंडारा दिया। आश्रम में सैकड़ों निमंत्रित लोग उपस्थित थे। कुछ व्यक्तियों ने उनसे कहा कि अब आप अपना मौन-भंग करें। किन्तु मौनी बाबा की शक्ति इतनी नहीं थी कि वे गुरु द्वारा रुद्ध की गयी वाणी से कुछ बोल पाते। अतः संकेत से उन लोगों को बता दिया कि महाराज की आज्ञा होने पर ही वे बोल सकेंगे। कुछ ही देर बाद काठिया बाबा ने आकर व्रत-भंग का आदेश दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलौकिक रीति से उनकी लुप्त वाक्-शक्ति पुनः प्राप्त हो गयी। इस बार वे बड़ी ही शान्त-प्रकृति के महात्मा बन गये थे।

—:※:—

उड़िया बाबा के वरदान सत्य सिद्ध हुए

उड़िया बाबा सिद्ध महापुरुष थे। एक बार कुछ लोग परीक्षा करने की दृष्टि से अपने कुछ प्रश्न लेकर उनके पास गये। बाबा ने प्रश्न प्रस्तुत किये जाने से पूर्व ही उनके उत्तर देकर आगन्तुकों का समाधान कर दिया। एक बार एक व्यक्ति परीक्षा के लिए एक पुड़िया में कुछ इलायची लाया। बाबा ने बाँटने के लिए कहा। उपस्थित लोगों की संख्या अधिक होने के कारण उक्त व्यक्ति के मन में संकोच हो रहा था। बाबा बोले—देखता क्या है ? दो-दो इलायची बाँट दे। सबको दो-दे। इलायचियाँ दीं। तब भी पुड़िया में बच रहीं। कई बार ऐसा देखा जाता है कि आप चटाई पर बैठे होते और आस-पास अनेक भक्त भी होते थे। उस समय एक साँप आपकी परिक्रमा करने के लिए आता। वह कभी फन उठाता तो कभी नीचाकर लेता। आपकी आज्ञा थी कि कोई उसे छेड़े नहीं। उड़िया बाबा का एक भक्त था मुंशीलाल। उसके कोई पुत्र न था। एक दिन बाबा ने कहा—मुंशीलाल, तुम्हारे कोई पुत्र नहीं है। सो पुत्र तो हो जायगा, किन्तु स्त्री नहीं रहेगी।' मुंशीलाल ने कहा—ऐसे पुत्र को गले बाँधकर क्या करूंगा ? मुझे नहीं चाहिए। तब बाबा ने कहा—अच्छा, तुम्हारी पुत्री के एक लड़का होगा और वह तुम्हारे पास ही रहेगा।' कालान्तर में दौहित्र ने जन्म लिया जिसका नाम हरिशंकर रखा गया।

मोहनपुर के कारिन्दा अब्दुल मजीद को भयंकर गुर्दे का दर्द होता था। उसने उड़िया बाबा से प्रार्थना की कि मेरा दर्द कैसे ठीक हो। उसे शिकार करने और माँस खाने का व्यसन था। महाराज ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा—अगर तुम मांस खाना छोड़ दो तो तुम्हारा दर्द ठीक हो सकता है। कारिन्दा ने शिकार करने और मांस भक्षण का परित्याग कर दिया। तब से उसका दर्द भी ठीक हो गया।

१९३५ ई० की घटना है। अनूपशहर के वैद्य लक्ष्मण वल्लभ वल्लभ की पत्नी एक दिन सारे कामों से निपट कर अपने कमरे में सोयी। प्रातः काल वह अचेत अवस्था में मिली। यह हालत एक महीने तक रही। अनेक इलाज किये गये, दुर्गापाठ और महामृत्युंजय का जप आदि कराया गया किन्तु कोई परिणाम न निकला। वैद्यजी ने कर्णवास जाकर उड़िया महाराज जी को सारा हाल सुनाया। दस-बारह दिन बाद महाराज जी वैद्य जी के घर पहुँचे। अपने अँगूठे और अंगुलियों से रोगिणी के सिर के पिछले भाग को उन्होंने दबाया और उसे खड़ी होने के लिए कहा। महाराज जी ने उसे गंगा स्नान के लिए भेजा और अपने हाथ से कटोरी में दाल-चावल खाने को दिये। उसी क्षण से उसके सारे कष्ट की निवृत्ति हो गयी।

—※—

कबीर ने मरुभूमि में सरिता प्रवाहित की

मघर के निकट एक बड़ा आम का पेड़ था। एक दिन कबीर और योगीराज गुरु गोरखनाथ की इस पेड़ के नीचे भेंट वार्ता हुई। गोरखनाथ ने अपनी यौगिक भूमि का प्रदर्शन इस प्रकार से किया कि भूमि में एक छोटा सा गढ़ा खोदा। उसमें फव्वारे की तरह जल निकलने लगा। कबीर को इस चमत्कार से सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि इस थोड़े से जल से किसी को विशेष लाभ नहीं हैं। यह मरुभूमि है। यहाँ पर एक नदी की आवश्यकता है। यदि आप में शक्ति है तो एक सरिता को प्रवाहित कर दें। कहते हैं गोरखनाथ प्रयत्न करने पर भी इसमें सफल नहीं हुए। तब कबीर ने भूमि पर तीन लकीरें खींचीं। कुछ ही क्षणों में वहाँ से ऐसे अलौकिक जल स्रोत का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आविर्भाव हुआ जो एक सरिता के रूप में परिणत हो गया जो आमी नदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

—※—

योगेश्वर रामलाल की यौगिक विभूतियाँ

१—एक बार योगेश्वर रामलाल व हरिहरानन्द गोहाटी में भ्रमण कर रहे थे, अकस्मात् एक अवधूतानी से उनकी भेंट हुई। उसने योगेश्वर प्रभु जी का नाम सुन रखा था। अतः प्रभुजी को प्रणाम कर वार्तालाप करती रही। उसके बाद कई बार प्रभु जी के दर्शनार्थ आयी। यहाँ उसे भक्तों द्वारा हरिहरानन्द की योग की उच्चावस्था का पता चला। मन ही मन उसने हरिहरानन्द की योग शक्ति की परीक्षा लेने का विचार कर लिया।

जब हरिहरानन्द ध्यानस्थ बैठे थे, वह अवधूतानी भी अपने घर में ध्यान करने लगी। सूक्ष्म शरीर द्वारा वह हरिहरानन्द के पास आई तथा हरिहरानन्द की भुजा पकड़कर अपनी ओर खींचने लगी। हरिहरानन्द ने भी उसके आन्तरिक अभिप्राय को जान उसके सूक्ष्म शरीर को ही पकड़ लिया और उसको वे प्रभुजी के निकट जाने लगे। सारा बल लगाकर भी अवधूतानी अपने सूक्ष्म शरीर को न छुड़ा सकी। इधर योगेश्वर प्रभुजी भी ध्यान द्वारा इस घटना को देख रहे थे तथा मुस्करा रहे थे।

कुछ ही देर में हरिहरानन्द उस अवधूतानी के सूक्ष्म शरीर को लेकर प्रभुजी के पास पहुँचे। प्रभुजी ने सारी कथा सुनकर उसके सूक्ष्म शरीर को समीप पड़े हुए खोखले बाँस में डलवा दिया और उससे सारा वृतान्त पूछा। अवधूतानी ने भी 'प्रभुजी तो सर्वज्ञ हैं', ऐसा जानकर सारा हाल सच सच कह सुनाया और अपने कृत्य के लिए बार-२ क्षमा माँगी। प्रभुजी ने भी भविष्य में किसी के साथ बल-आजमाई न करने की प्रतिज्ञा कराकर उसे छुड़वा दिया।

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२—एक बार योगेश्वर रामलाल अपने शिष्यों मुखराम व कृष्णानन्द के साथ पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा कर रहे थे। मार्ग में एक खरबूजे के खेत में से मुखराम ने खरबूजा खा लिया। वह खेत एक तांत्रिक बुढ़िया का था। बुढ़िया ने खेत के चारों ओर लकीर खींच कर मन्त्र से बाँध दिया था। अतः खरबूजा खाते ही मुखाराम के पेट में दर्द होने लगा।

थोड़ी ही देर में बुढ़िया वहाँ आयी और मन्त्र के प्रभाव से मुखराम को अपने घर की ओर ले चली। योगेश्वर प्रभुजी ने उससे बार-बार मुखराम को छोड़ देने को कहा और खरबूजा की कीमत दस रुपये तक दे देने को राजी हो गये किन्तु वह बुढ़िया न मानी।

जब प्रभुजी ने यह देख लिया कि यह बुढ़िया किसी प्रकार भी मानने वाली नहीं है तो मुखराम की पीठ पर हाथ रखकर कहा—'बेटा, आओ, चलें।' उसी समय मुखराम प्रभुजी के साथ हो लिया। कुछ देर बाद बुढ़िया बहुत तेजी से चिल्लाती हुई प्रभुजी के पास आयी और लूट लिया, लूट लिया कहने लगी।

योगेश्वर प्रभुजी ने भी रुक कर उससे पूछा कि उन्होंने उसका क्या लूट लिया। इस पर बुढ़िया बोली—'महाराज! मैंने बहुत परिश्रम करके मन्त्र शक्ति प्राप्त की थी, वह आपने आज क्षण भर में लूट ली। आप मेरे अपराध को क्षमा कर दें तथा मेरी मन्त्र-शक्ति मुझे वापस कर दीजिए।' जब वह बुढ़िया बहुत रोने लगी तो प्रभुजी ने भविष्य में मन्त्र-शक्ति से किसी को दुःख न देने की प्रतिज्ञा कराकर मन्त्र-शक्ति वापस कर दी। उसके बाद कृष्णानन्द व मुखराम के साथ आगे चल दिये।

३—जब योगेश्वर रामलाल अपनी मण्डली के साथ नैपाल पहुँचे तो उनके साथ एक बूढ़ा वैरागी भी गया। एक दिन यह बूढ़ा वैरागी शौच के लिए जा रहा था। मार्ग में एक दण्डी स्वामी मिले,

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने वैरागी को बताया कि शौच को इस दिशा में मत जाना क्योंकि इधर एक ज्ञानगिरि नामक अघोरी रहता है जो मनुष्य को मार कर खा जाता है। बूढ़े बैरागी ने योगेश्वर प्रभुजी का स्मरण किया और उसी दिशा में चल दिया। जब उसे ज्ञानगिरि अघोरी मिला तो ज्ञानगिरि बोला—'आज तो विधाता ने बैठे बैठाये भोजन भेज दिया।' तो बूढ़े वैरागी ने कहा - 'हाँ–हाँ, आधा तुम्हारा आधा हमारा।' यह सुनकर अघोरी बड़ी चिन्ता में पड़ गया और वैरागी की ओर देखा तो उसे वैरागी के सिर पर रक्षा करते हुए श्री प्रभुजी के दिव्य स्वरूप के दर्शन हुए।

अघोरी इससे बहुत प्रसन्न हुआ और वाक् सिद्धि का वरदान देकर वापस कर दिया। जब दण्डी स्वामी पुनः बूढ़े वैरागी को मिले तो सारा वृतान्त जान बड़े प्रसन्न हुए और वैरागी से बोले कि तुम्हारा यह वाक् सिद्धि का वरदान तुम्हारा अहित ही करेगा क्योंकि इससे कुछ को शाप भी मिलेगा। यह सुन वैरागी ने एकान्त में भजन करने का निश्चय किया और प्रभुजी से बिना मिले ही पहाड़ों में चला गया। बाद में हरिहरानन्द ने उस वैरागी को खोजने का बड़ा प्रयास किया किन्तु वह कहीं न मिला।

४—मंग गाँव के राजा रणसिंह बड़े तान्त्रिक थे। जब योगेश्वर प्रभु जी कृष्णानन्द व मुखराम के साथ मंग ग्राम पहुँचे तो पहले तो रणसिंह ने बड़ा आदर सत्कार किया किन्तु रात को प्रभुजी पर अपनी मंत्र-शक्ति का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। एक एक कर उसने अपनी सारी मन्त्र-शक्ति नष्ट कर दी किन्तु योगेश्वर रामलाल पर कोई प्रभाव न पड़ा। यह देख रणसिंह बहुत डर गये।

सवेरा होते ही रणसिंह दौड़ते हुए आए और योगेश्वर के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगे। प्रभु जी ने चकित होकर क्षमा माँगने का कारण पूछा। रणसिंह ने कहा—'रात मैंने अपनी सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्त्र शक्ति आपको वश में करने के लिए प्रयुक्त की, किन्तु आप पर कोई प्रभाव न पड़ा। निश्चय ही आप मनुष्य रूप में देवता है। कृपा करके मेरा उद्धार कीजिए।'

प्रभुजी ने हँसते हुए कहा—'भाई हम तो ब्राह्मण मात्र हैं।' परन्तु रणसिंह तो योगेश्वर के प्रभाव को जान चुके थे। वे कब छोड़ने वाले थे। अन्त में प्रभुजी ने प्रसन्न होकर रणसिंह को योग की दीक्षा दी। फिर वह परिवार सहित प्रभुजी का भक्त बन गया।

५—एक साधु को खप्पर सिद्ध था। वह उसमें जितनी चाहता खाने की वस्तुएँ भर लेता। यह बड़ी तामसी प्रकृति का साधु था। जहाँ कहीं भन्डारे की बात सुनता, वहीं पहुँच जाता तथा प्रबन्धकों को तंग करता था। एक बार योगेश्वर रामलाल के निर्देशन में एक भण्डारे का आयोजन किया गया। इसमें भी वह साधु आ पहुँचा और अपने खप्पर में खीर भरवाने लगा। भक्त उसमें खीर भरते गये। वह खप्पर तो मन्त्र सिद्ध था, भरने का नाम ही न लेता। यहाँ तक कि कड़ाहे की लगभग सारी खीर खप्पर में समा गयी।

अब भक्त गण भागे-भागे प्रभुजी के पास आये। इधर हरिहरानन्द को ध्यानावस्था में यह घटना देखने को मिली। वे शीघ्रता-पूर्वक उठे और उस साधु की ओर चल दिये। जो भक्तगण प्रभुजी के पास जा रहे थे, उन्हें भी वापस अपने साथ ले लिया। हरिहरानन्द ने साधु के पास पहुँच कर एक लोटा खीर हाथ में ली। और प्रभुजी का स्मरण कर खीर उसके खप्पर में डालने लगे। देखते-देखते खप्पर भर गया। उसके बाद हरिहरानन्द ने कड़ाह को उठवाकर खप्पर के नीचे रखवा दिया। थोड़ी ही देर अक्षय पात्र बने उस लोटे से निकलती खीर से कड़ाह भी भर गया। वह साधु अपनी पराजय को देख बड़बड़ाने लगा और हरिहरानन्द को गालियाँ बकने लगा। हरिहरानन्द ने भी उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ को पकड़ कर जोर से दबा दिये जिसमें थोड़ी ही देर में खून निकलने लगा। कुछ देर बाद वह साधु बेहोश हो गया।

इतने में प्रभुजी रामलाल वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने दया करके साधु को छुड़वा दिया और भविष्य में किसी को तंग न करने की प्रतिज्ञा कराकर वहाँ से भगा दिया।

६- एक दिन गया में वाममार्गी साधुओं ने भैरवी चक्र लगाया। आनन्द कन्द प्रभुजी रामलाल जी वहीं एक पण्डा के यहाँ ठहरे थे। वे भी उस भैरवी चक्र को देखने गये। भैरवी चक्र में बहुत से स्त्री पुरुष गोलदायरा बनाये मुद्रा लगाकर स्थित थे। बीच में कपाल एक खप्पर में एक बड़ा दीपक जल रहा था। सभी स्त्री पुरुष पाँच मकारों का सेवन कर रहे थे।

ये वाममार्गी साधु भोली भाली जनता को आतंकित करते हैं। स्पष्ट हो जाने पर ये जनता का कुछ भी बिगाड़ सकते हैं। अतः प्रभुजी ने इन वाममार्गियों को उचित शिक्षा देने का निश्चय किया। अपनी योग-शक्ति से उन्होंने उस दीपक को खप्पर सहित वहाँ से हटाकर अपने हाथ में धारण कर लिया। दीपक के बीच में से हट जाने पर मुद्रा में स्थित स्त्री पुरुष स्तम्भित रह जाते हैं वे हिल भी नहीं पाते। इस बार भी वैसा ही हुआ।

जब वाममार्गियों के प्रधान ने प्रभुजी की इस योग-शक्ति को देखा तो भयभीत हो गया और भाँति-भाँति से प्रार्थना करने लगा। प्रभुजी ने कहा कि तुम जनता को आतंकित करते हो और साधु चरित के विरुद्ध आचरण करते हो। यदि तुम इस अनुचित पंथ को छोड़ने की प्रतिज्ञा करो तो मैं तुम्हें क्षमा कर सकता हूँ।' प्रभुजी की बात सुन कर उस प्रधान ने अपने अनुचरों सहित भविष्य में कभी भैरवी चक्र न लगाने तथा किसी को भी कष्ट न देने की प्रतिज्ञा की। तब प्रभुजी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपक वापस उसी स्थान पर भेज दिया और उन स्त्री पुरुषों को मुक्त कर दिया।

इसके बाद उन साधुओं ने भैरवी चक्र भंग कर दिया तथा स्त्री पुरुष अपने अपने स्थानों को चले गये।

७—एक बार योगेश्वर रामलाल नर्मदा के किनारे भ्रमण करते हुए एक ग्राम के समीप पेड़ों के नीचे तम्बू लगाकर ठहर गये। भोजनादि से निवृत्त होकर हरिहरानन्द व दण्डी स्वामी महाराज जी के पास ही विश्राम करने लगे। शेष साधुओं ने बाहर मैदान में आसन लगाया।

एकाएक आधीरात के लगभग बाहर बैठे साधु चिल्लाने लगे। तब महाराज जी ने हरिहरानन्द को साधुओं के चिल्लाने का कारण जानने व उनको अपने साथ लिवा लाने का आदेश देकर भेजा। हरिहरानन्द जी के उन साधुओं के पास पहुँचते ही उन साधुओं का भय दूर हो गया, क्योंकि उनको भयभीत करने वाली भयंकर आत्माएँ अदृश्य हो गयीं। हरिहरानन्द साधुओं को प्रभु जी के पास ले आये। प्रभुजी के पास आकर साधुओं ने बताया—'बहुत से लम्बे-लम्बे दाँत आकार वाली आत्माओं ने हम सबको खाना चाहा। भयभीत होकर हम चिल्ला पड़े। हरिहरानन्द के हमारे पास पहुँचते ही वे आत्माएँ जाने कहाँ लुप्त हो गयीं। आज आप की कृपा से ही हमारी रक्षा हुई है।'

—**—

मुर्दों को जीवनदान देने वाले योगी

१—लाहिड़ी महाशय का एक शिष्य था-राम। एक बार राम को एशियाटिक हैजा हो गया। गुरुदेव के परामर्श से दो विशेषज्ञ डाक्टरों को बुलाया गया। डाक्टरों ने राम की चिकित्सा में पूरी सावधानी से काम किया किन्तु राम की हालत गिरती गयी। यहाँ तक कि वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरणासन्न हो गया। शिष्य-गण बार-बार गुरुदेव के पास जाते और राम चिन्ता जनक स्थिति के विषय में निवेदन करते। किन्तु गुरू जी का एक ही उत्तर था—'डाक्टर सहृदय व्यक्ति हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राम शीघ्र ही अच्छा हो जायगा।'

ईश्वर का विधान, राम ने गुरूजी से अन्तिम आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की और शरीर त्याग दिया। युक्तेश्वर नामक एक शिष्य ने गुरूदेव को सिसकते हुए दारुण सम्वाद सुनाया। गुरुदेव ने कहा—'यों दुःखी होना व्यर्थ है। तनिक धीरज धारण करो और मन को एकाग्र कर ध्यान लगाकर बैठो।' इतना कहकर गुरुदेव समाधि में प्रविष्ट हो गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल गुरुदेव ने समाधि भंग की और शिष्यों से कहा कि तुम राम के लिए दवा चाहते हो तो किसी शीशी में उस दिए में से रेंडी का थोड़ा सा तेल ले लो और सात बूँद राम के मुँह में डाल दो। यह सुनकर शिष्यों ने बताया कि राम तो कल से मृतक अवस्था में है, अब किसी दवा आदि से क्या लाभ ?

'कोई चिन्ता नहीं। तुम लोग मेरा कहना मानो।' गुरुदेव ने आदेश दिया। शिष्यों ने शीघ्रता पूर्वक तेल ले जाकर किसी उपाय से राम के मुँह में तेल डाला। सातवीं बूँद पड़ते ही राम के शरीर में एक कम्पन हुई और कुछ देर बाद वह उठकर बैठ गया।

थोड़ी ही देर में राम का शरीर पूर्ण स्वस्थ हो गया। उसने वस्त्र पहने और जाकर गुरुदेव को प्रणाम किया। वस्तुतः राम को पुनः जीवन दान लाहिड़ी महाशय का ही प्रताप था, रेंडी का तेल तो एक बहाना मात्र था।

२—गोरखपुर के प्रसिद्ध डाक्टर कांतिचन्द्र सेन बाबा के अनन्य भक्त थे। एक बार उनका पुत्र मरणासन्न हो गया। उसके बचने की कोई आशा न रही। अन्ततः सेन बाबा की शरण में गये और पुत्र की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थिति के विषय में बाबा से निवेदन किया। बाबा ने अपनी धूनी से एक सुलगती धूप की लकड़ी दी। उस धूप के धुँए को बालक की नाक के अन्दर प्रविष्ठ कराया गया। शीघ्र ही बालक का रोग दूर हो गया और वह भला चंगा हो गया।

३—अक्कू और मुन्नी सहोदर भाई तथा योगीवर गम्भीर नाथ जी के शिष्य थे। एक बार अक्कू किसी कठिन रोग से पीड़ित होकर मर गया। आत्मीय जनों ने मृतक के दाह संस्कार की व्यवस्था प्रारम्भ कर दी। इसी बीच मुन्नी करुण विलाप करता हुआ योगीवर के समीप गया और रोते हुए बोला—'बाबा, आपका प्रिय सेवक अक्कू अब इस संसार में नहीं है। अब मेरा क्या होगा? आप दया कर या तो अक्कू को वापस बुला लीजिए या मेरे ही प्राणों को परलोक भेज दीजिए?

बाबा ने शान्त चित्त से मुन्नी का कथन सुना तथा बोले—'तुम शीघ्रता पूर्वक जाकर शव का अग्नि संस्कार रोको। मैं अभी आ रहा हूँ।' मुन्नी भाग कर गया तथा उसने स्वामी जी के आगमन की बात सबको सुना दी। कुछ देर बाद स्वामी जी भी अक्कू के घर पहुँच गये। बाबा गम्भीरनाथ ने अक्कू के शरीर पर हाथ रखा तथा कमण्डलु से कुछ बूँदे उसके मुँह में डाल दीं। कुछ देर बाद अक्कू जीवित हो गया। उसके बाद वह बहुत दिनों जीवित रहा तथा निरन्तर बाबा की सेवा करता रहा।

४—एक बार सन्त त्यागराज ने तिरुपति मन्दिर के समीप ही किसी स्त्री का करुण विलाप सुना। उस स्त्री का पति तिरुपति मन्दिर के कुँए में कूद पड़ा था। त्यागराज का हृदय दया से पिघल उठा। उन्होंने पाषाण से अहल्या की सृष्टि करने वाले राम के स्तवन में एक पद गाया जिससे मृत ब्राह्मण जीवित हो उठा।

५—नामदेव किसी स्थान पर हरिकीर्तन कर रहे थे। मुसल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मान बादशाह ने कीर्तन को कुफ्र समझकर अपमान करने के लिए नामदेव के समुख एक गौ को लाकर हत्या कर दी और संवके सामने कहा कि अगर तुम्हारा विट्ठल सच्चा है तो गौ को जिला कर दिखाओ नहीं तो तुम्हारी गर्दन भी इसी तलवार से उतार लूँगा। गुरु ग्रन्थ साहब में वर्णन है कि नामदेव की प्रार्थना से गौ जीवित हो गयी।

६—क्षेपा बाबा श्मशान के निकट सेमल के वृक्ष के निकट सो रहे थे। इतने में कुछ आदमी एक खाट को कन्धों पर रख कर ले आये। उसमें मरणासन्न यक्ष्मा का रोगी पड़ा हाँफ रहा था। बाबा बोले—क्यों जी, क्या इसे जीते ही जला दोगे। साले ने बहुत पाप किया है। उनमें से एक व्यक्ति बोला—'बाबा, ऐसा मत कहिए। हम लोग उसे आपके चरणों में लाये हैं। दया कर इसे बचा लीजिए। यह अपनी वृद्ध माता की इकलौती सन्तान और एक मात्र आधार है।'

बाबा ने तेज स्वर में कहा—"भाग जा साले! मैं क्या वैद्य हूँ।'

किन्तु भक्तों ने बहुत अनुनय विनय की। सहसा क्षेपा बाबा ने रोगी का गला दबा दिया और कहा—'क्यों वे साले, फिर पाप करेगा।' इससे रोगी बेहोश हो गया। लोग सोचने लगे कि अब बाबा पर खून करने का अभियोग लगेगा। कुछ देर बाद बाबा ने रोगी के शरीर को मिट्टी पर रखा और कहा—'जा, साला बच गया।'

कुछ देर बाद रोगी होश में आया और अब वह बिल्कुल ठीक हो गया, कहने लगा—'मुझे जल्दी से कुछ खाने को दो, बड़े जोर की भूख लगी है।' अब वह अपने आप उठकर बैठ गया। सब लोग आश्चर्य चकित हो इस दृश्य को देख रहे थे। क्षेपा बाबा बोले—'साला, तारामाई की दया से अच्छा हो गया। अब इसे पेट भर कर तारामाई का प्रसाद खिलाओ।

७—एक बार आचार्य शंकर गोकर्ण के देवी विग्रह के दर्शन करके मन्दिर के बाहर आ रहे थे। मन्दिर निकट ही उन्होंने करुण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीत्कार की ध्वनि सुनी। एक दरिद्र ब्राह्मण और स्त्री-वियोग में अधीर भाव से रो रहे थे। सामने मृत शिशु पड़ा था। एक मात्र पुत्र की मृत्यु से वे पागल से हो गये थे।

आचार्य शंकर जैसे ही मन्दिर से बाहर आये, वे दोनों आचार्य के चरणों में लोट गये और कातर स्वर से प्रार्थना करने लगे। आचार्य दयाभिभूत हो गये। उन्होंने अपना वरद-हस्त मृत बालक के मस्तक पर रखा। धीरे-धीरे शव में प्राण संचार होने लगा और कुछ देर बाद बालक उठ बैठा। उपस्थित सभी लोगों ने शंकराचार्य की जयध्वनि की तथा प्रसन्नता पूर्वक आचार्य का अभिनन्दन किया।

८—पण्डित साईं दत्त पंजाब के एक बहुत ही श्रेष्ठ योगी एवं विद्वान् थे। एक बार वे अपने मामा के यहाँ गये थे कि दैवयोग से एक सिख का इकलौता बेटा मर गया। पूरे गाँव में इस शोक-समाचार से विह्वलता छा गयी। चीत्कार एवं रोने पीटने के कोलाहल के बीच उसके अन्तिम संस्कार की तैयारी की गयी।

थोड़ी देर बाद पण्डितजी को इस हृदय विदारक समाचार की सूचना मिली। वे शीघ्रतापूर्वक शव के पास आये और बोले—'अरे अभी तो यह जीवित है। इसे कहाँ ले जा रहे हो।' सब लोग चकित होकर पण्डित जी की ओर देखने लगे। अभी भी उस बालक में जीवन के कोई लक्षण नहीं थे। आपने लोगों के मन की बात समझ कर कहा—'हाँ, अभी थोड़ी देर में यह जीवित हुआ जाता है।'

सबको चुप कराकर आपने एक वृद्धा सती स्त्री को अपने निकट बुलाया और उसके हाथ कुछ अक्षत और लोटा जल मँगाया। शव के निकट दक्षिण दिशा की ओर कुछ मार्ग खाली छुड़वाने के बाद पण्डितजी ने शव के चारों ओर जल छिड़का। उसके बाद के दक्षिण दिशा की ओर अक्षत फेंकने लगे।

कुछ क्षण बाद ही एक बदसूरत बिखरे केशों वाली स्त्री रोती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई दक्षिण से रोती हुई आकर महाराज के सामने खड़ी हो गयी और बोली—'महाराज, क्या आज्ञा है।' पण्डित जी ने गुस्से में आकर उससे कहा—'अरी दुष्टे ! इस प्रकार के अधम कृत्यों के कारण ही तेरी यह दशा हुई है। अभी भी तू नहीं सँभलती। बता, तूने इस इकलौते निरपराध बालक के प्राण क्यों छीने ?'

अब वह स्त्री पण्डित जी से बार बार क्षमा मांगने लगी। किन्तु पण्डित जी ने कहा कि मैं तुझे तभी क्षमा कर सकता हूँ, जब तू इसे जीवित कर देगी। इसके साथ ही तुझे यह प्रतिज्ञा भी करनी होगी कि भविष्य में ऐसा अपराध नहीं होगा।' उस स्त्री ने आगे अपराध न करने की प्रतिज्ञा तो करली किन्तु इस बार के लिए वह फिर क्षमा-याचना करने लगी।

क्रोधित होकर पण्डित जी ने नाई से छुरा मंगाया और अपने जंघा के बाल उतारने लगे। ज्यों ज्यों पण्डित जी अपनी जंघा के बाल उतारते त्यों ही उस स्त्री के सिर से बाल उतरने लगे। अब तो वह स्त्री बहुत रोयी, चिल्लायी और बोली—'जिस काम को करने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है, वह मैं कैसे कर सकती हूँ।'

स्त्री के इस उत्तर से पण्डित जी और क्रोधित हो गये तथा उसके प्राण ले लेने पर उतारू हो गये। पण्डित जी के इस निश्चय को अडिग जान स्त्री ने कहा—'महाराज ! इसके जीवित बचने का एक-मात्र उपाय यह है कि इसके स्थान पर किसी अन्य प्राणी की आहुति दी जाय।'

स्त्री के इस कथन को सुनकर माता-पिता कह उठे—'हम दोनों में से किसी एक के प्राण ले लो। किन्तु पण्डित जी इसके लिए तैयार न हुए। अन्त में एक भैंस के प्राण उस स्त्री को दिये गये। वह स्त्री खुशी खुशी उस बालक को जीवित कर एवं भविष्य में अपराध न करने की प्रतिज्ञा कर चली गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६—पागल बाबा के सम्बन्ध में एक और अलौकिक घटना का उल्लेख मिलता है। शैशव ने इन्हें एक विषधर सर्प ने काट लिया था, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी। सम्बन्धियों ने उन्हें मृत जानकर मिट्टी में गाढ़ दिया था। वस्तुतः वे मर भी गये थे। दूसरे दिन वहां एक महात्मा आये उन्होंने पागल बाबा के शव को निकाल कर योग प्रक्रिया द्वारा अपनी अलौकिक शक्ति से उन्हें पुनः जीवन दान दिया था। सुना जाता है—कुछ वर्षों बाद पागल बाबा ने पुनः अपना काया परिवर्तन किया था।

—:※:—

दूरवर्ती शिष्य की प्राण रक्षा

एक बार बाबा गम्भीरनाथ गोरखपुर में अपने कमरे में ध्यान-मग्न बैठे थे। अकस्मात् किसी कारण से उनका ध्यान टूट गया तथा उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर पूछा—'उमेश बाबू का कुछ समाचार मिला है क्या ? वह ठीक तो हैं न ?'

उमेश बाबू बाबा के शिष्य थे और सपरिवार हरिद्वार में रहते थे। बाबा के इस प्रकार प्रश्न करने पर उन्होंने समझा कि उमेश अवश्य किसी विपत्ति में हैं, नहीं तो गुरुदेव द्वारा इस प्रकार प्रश्न करने का क्या प्रयोजन है। अतः शिष्यों ने तार द्वारा समाचार मँगाने की इच्छा प्रगट की। कुछ क्षण मौन रहने के बाद गुरुदेव ने कहा—'अभी छोड़ो, कल देखा जायगा।' दूसरे दिन जब शिष्यों ने उमेश के प्रसंग को गुरुदेव के समक्ष छेड़ा तो गुरुदेव ने संक्षेप में कहा—'अब कोई चिन्ता की बात नहीं है।'

कुछ दिन बाद उमेश बाबू का पत्र आया जिसमें उन पर आयी एक विपत्ति का विवरण लिखा था। जिस दिन बाबा का ध्यान टूटा था, उमेश सपरिवार रेल में यात्रा कर रहे थे। परिवार के अन्य सदस्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो डिब्बे में बैठ गये थे किन्तु उमेश को ट्रेन का हैंडिल पकड़ कर यात्रा करनी पड़ी थी। एक्सप्रेस ट्रेन, हर समय प्राण-नाश का भय था। उस समय उन्हें रह-रह कर गुरुदेव याद आ रहे थे। इसीलिए गुरुदेव का ध्यान टूट गया था।

—:※:—

कटा हाथ पुनः जुड़ गया

सदाशिव ब्रह्मेन्द्र स्वामी सिद्ध महापुरुष और विद्वान थे। वे दिगम्बर रहते और आत्मरूप में ही मस्त रहते थे। एक बार वे टीपू सुलतान की सेना के पड़ाव के पास से निकले। उन्हें नग्न देश में देखकर किसी अधिकारी की पत्नी ने उनकी शिकायत कर दी। फलतः उस अफसर ने क्रोध के आवेश में तलवार का प्रहार कर स्वामी जी का एक हाथ काट डाला। किन्तु इससे स्वामी जी के आनन्द में रंचमात्र भी कमी नहीं आयी। यह देखकर उक्त मुसलमान अधिकारी भयभीत हो उनके चरणों पर गिर पड़ा और आँसू बहाते हुए बार-बार क्षमा माँगने लगा। उसके रोने कलपने से स्वामी जी का ध्यान अपने शरीर की ओर गया और जैसे ही उनकी दृष्टि अपने कटे हुए हाथ पर पड़ी, कटा हुआ हाथ अपने आप आकर जुड़ गया। अधिकारी की प्रार्थना पर स्वामी जी ने उपदेश दिया और निजानन्द की मस्ती में फिर किसी ओर निकल गये।

—:※:—

मृत गाय के प्राणों का संचार हुआ

एक बार योगेश्वर रामलाल समाधि से उठे तो देखा कि एक जंगली गाय समीप ही पड़ी है, जिसके शरीर में कीड़े पड़ गये हैं तथा दुर्गन्ध आ रही है। इससे रामलाल ने सोचा कि महाप्रभु को भी इसकी दुर्गन्ध आ रही होगी। अतः इसे कहीं दूर हटा देना चाहिए। योगेश्वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मन में यह विचार आते ही वह गाय उठ खड़ी हुई और अपने सींगों से रामलाल का वदन खुजलाने लगी, किन्तु रामलाल महाप्रभु का ध्यान करते हुए वैठे ही रहे। कुछ देर खुजलाने के बाद वह जंगली गाय स्वतः ही दो तीन फर्लांग दूर जाकर गिर गयी।

—:*:—

हृदय गति रोकने की क्षमता वाले योगी

डॉक्टर उषारंजन मजुमदार ब्रह्म समाजी थे। वे प्रभु श्री जगद्वन्धु के कट्टर विरोधी थे। वैष्णवीय आचारों पर अनेक आक्षेप लगाते तथा निन्दा करते। वे उन दिनों उस क्षेत्र के सफलतम चिकित्सक माने जाते। मिढफोर्ड अस्पताल में वे नियुक्त थे।

उन डॉक्टर साहव को अपने प्रकृत स्वरूप का परिचय प्रदान करने के लिए एक दिन प्रभु श्री जगद्वन्धु ने एक लीला की। प्रभु नंगे वदन वैठ गये और इस प्रकार आचरण करने लगे जैसे प्रभु को भयंकर पीड़ा हो। उन्होंने समीप के एक भक्त को वुलाकर किसी अच्छे डॉक्टर को लाने की आज्ञा दी।

भक्त सुधनु वावू शीघ्रतापूर्वक गये और डाक्टर उषारंजन को वुलाकर ले आये। डॉक्टर ने जव रोगी की जाँच की तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। प्रभुजी डाक्टर साहव से स्वस्थ व्यक्ति के समान वातें कर रहे थे किन्तु उनके हृदय की धड़कन और नाड़ी की गति का कहीं पता नहीं था।

जगद्वन्धु ने डॉक्टर साहव से कहा—'डाक्टर, मुझे आप शीघ्र औषधि दीजिए। मुझे एक व्याधि नहीं, छत्तीस करोड़ व्याधियाँ हैं।'

डाक्टर की वैज्ञानिक बुद्धि बड़े पेशोपेश में पड़ गयी थी। वे कुछ भी नहीं समझ पा रहे थे। कुछ ही देर वाद उनके ज्ञान चक्षु खुल गये और उन्हें यह समझते देर न लगी कि विज्ञान की सीमा से परे भी एक अलौकिक जगत् है। प्रभु श्री उसी जगत् के प्राणी हैं, अतः इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित चिकित्सा विज्ञान द्वारा उनकी चिकित्सा सम्भव नहीं है। इस निर्णय के बाद डाक्टर उषारंजन प्रभु के शरणागत हुए और उनके अनन्य भक्त बन गये।

—:※:—

दिल की धड़कन तथा श्वास के अभाव में जीवित रहने वाले योगी

लाहिड़ी महाशय का पड़ोसी युवक चन्द्रमोहन डाक्टरी की परीक्षा पास करके आया था। एक दिन वह योगीराज से आशीर्वाद ग्रहण करने आया। कुछ देर बैठने पर योगीराज ने शरीर विज्ञान से सम्बन्धित वार्ता आरम्भ करके चन्द्रमोहन से चिकित्सा के विषय में कुछ प्रश्न पूछे। उनका अन्तिम प्रश्न था—'आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान में मृतक की क्या परिभाषा है?' इसके बाद अपने शरीर का परीक्षण करने को कहा।

चन्द्रमोहन ने जब लाहिड़ी महाशय के शरीर का परीक्षण किया तो उसके होश उड़ गये। योगीराज के शरीर में जीवन के कोई भी लक्षण शेष नहीं थे। न श्वास की गति, न हृदय में धड़कन, न नाड़ी में कोई स्पन्दन, पूरे शरीर में कोई क्रिया प्रतिक्रिया नहीं, सारा शरीर निश्चल और निस्पन्द था। कुछ समय बाद उन्होंने आँखें खोलीं और डॉक्टर से कहा—'चन्द्रमोहन ! अतीन्द्रिय जगत् विलक्षण है। उसके अनेक तथ्य अभी तक अज्ञात हैं। तुम्हारा आधुनिक विज्ञान वहाँ तक अभी नहीं पहुँचा है। हाँ भारतीय योगियों की सदा से उसमें गति है।' चन्द्रमोहन इस घटना से बहुत प्रभावित हुआ और लाहिड़ी महाशय का शिष्य हो गया। बाद में वह लब्ध प्रतिष्ठित चिकित्सक बना।

—:※:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाड़ी की गति में असाधारण उतार चढ़ाव होने पर भी शारीरिक स्थिति सामान्य रही

एक भारतीय योगी भ्रमणार्थ लन्दन गये। वहाँ डाक्टरों की एक कान्फ्रेंस में उन्होंने सभी डाक्टरों को आश्चर्य में डाल दिया क्योंकि उनकी नाड़ी की गति २० प्रति मिनट थी। डाक्टरों के अनुसार इस गति पर कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। दूसरी बार परीक्षण करने पर डाक्टरों ने उनकी नाड़ी की गति १२० प्रति मिनिट पायी।

नाड़ी की गति में इतना उतार-चढ़ाव होने के बाद भी योगीजी की मानसिक एवं शारीरिक स्थिति पूर्णतः अप्रभावित रही।

—**—

सूक्ष्म शरीर से दिव्य लोकों की यात्रा

केदार मालाकर एक अद्भुत बालक था। यह अपने स्थूल देह से निकल कर लोक लोकान्तर में भ्रमण किया करता था। घर पर उसकी माता व बड़ी बहिन रहती थीं। पिता का पहले ही देहावसान हो गया था। जब से इस बालक का यह व्यापार प्रारम्भ हुआ था, तभी से वे दोनों स्त्रियाँ बहुत चिन्तित रहने लगीं। वे समझती थीं कि इसे कोई रोग हो गया। इसलिए उन्होंने कई बार डाक्टरों से परीक्षण कराया था। किन्तु डाक्टर गण उस बालक के अद्भुत व्यापार के विषय में कुछ भी न समझ सके।

एक बार डा० गोपीनाथ कविराज उस बालक से भेंट करने गये। उस समय बालक केदार स्वस्थ अवस्था में था। कविराज जी ने उससे उसके अद्भुत चरित्र के विषय में प्रश्न किया। बालक ने उन्हें बताया—'मुझे कोई रोग आदि नहीं है। मैं ऊर्ध्व लोक से आये हुए दिव्य-पुरुषों के बुलाने पर उनके साथ चला जाता हूँ। मेरा शरीर यहीं पड़ा रहता है। उसी को संज्ञा-हीन समझकर ये लोग चक्कर में पड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं।' कविराज जी ने आगे पूछा—'ये दिव्य-पुरुष कहाँ से आते हैं।' इसके उत्तर में केदार ने कहा—'ये दिव्य पुरुष भिन्न-भिन्न लोकों से आते हैं। कभी विष्णु लोक से आते हैं, कभी शिव लोक से आते हैं। मुझे उन उन लोकों में पहुँच कर अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है।'

इसके बाद के एक घटना का विवरण बताया। उसने कहा—'एक बार मैं दशाश्वमेध सट्टी में बाजार करने गया। वहां पेड़ पर स्थित एक ज्योतिर्मय सत्ता ने मुझे दर्शन दिये। सबसे पहले उनके दर्शन से मेरा शरीर गरम हो गया। कई दिनों तक बुखार बना रहा। धीरे-धीरे बुखार ठीक हो गया। उसके बाद यदा कदा वे दिव्य पुरुष मुझे दर्शन देने लगे। एक दिन उन्होंने मुझे अपने साथ ले जाने की अभिलाषा व्यक्त की, मैं अपना लोभ-सवरण न कर सका और स्थूल-शरीर को छोड़कर उनके साथ चला गया। तभी से जब दिव्य पुरुष आते हैं, मैं उनके साथ चला जाता हूँ।'

सम्पूर्ण विवरण सुनकर कविराज जी ने उसकी माता व बहिन को समझाया और उनके भय को दूर कर दिया।

कुछ समय बाद केदार को अपनी शक्ति से अपनी इच्छानुसार भी अपने शरीर से बाहर निकलने की शक्ति प्राप्त हो गयी। केदार के सम्बन्ध में एक बात और ज्ञातव्य है कि केदार जिस लोक में जाते थे, उस समय वे उसी भाषा का व्यवहार करते थे। इस सम्बन्ध में उनका कहना था कि इन लोकों की भाषाओं को इन्हें सीखना नहीं पड़ता है। जिस लोक में वे जाते थे, उस लोक के अधिष्ठाता के भ्रूमध्य से एक ज्योति निकल कर केदार के भ्रूमध्य को स्पर्श करती थी। उसके बाद वे जो भाषा बोलते थे, वह उसी लोक की भाषा होती थी। उन्हें उस भाषा को बोलने की शक्ति उसी लोक में छोड़ देनी पड़ती थी।

—※—

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूक्ष्म शरीर से स्वर्ग की यात्रा

योगेश्वर रामलाल की शिष्या रामा ने कई प्रकार की विलक्षण यौगिक सिद्धियाँ प्राप्त करली थीं। यहां तक कि वे स्वर्गादि दूसरे लोकों से भी वस्तु ला सकती थीं।

एक वार योगेश्वर कुछ भक्तों के साथ वगीचे में बैठे थे। सहसा आकाश से कोई प्रकाशवान वस्तु आती दिखायी पड़ी जिसे देख सव लोग डर गये। तब योगेश्वर ने उन्हें वताया कि 'आप डरें नहीं। यह रामा ने स्वर्ग से दिव्य पुष्प हमारे लिये भेजा है। इस समय रामा ध्यानावस्था में अपने घर वैठी हैं किन्तु उनका सूक्ष्म शरीर स्वर्ग में भ्रमण कर रहा है।' कुछ ही देर में वह दिव्य पुष्प प्रभु जी के हाथों में आ गिरा।

कुछ भक्तों ने रामा के घर जाकर देखा कि रामा अपने घर एकान्त कमरे में ध्यानावस्था में मग्न बैठी हैं।

—※—

सूक्ष्म शरीर से हिमालय की यात्रा

महात्मा ज्योति जी अद्भुत प्रकृति के व्यक्ति थे। इनके विचारानुसार पूर्ण वस्तु का साक्षात्कार अभी तक किसी व्यक्ति को नहीं हुआ है। इन्होंने ध्रुवलोक में जाकर भक्त ध्रुव से वहुत कुछ प्राप्त किया था। ये ज्ञानार्जन के लिए अनेक लोकों में भ्रमण करते रहते थे।

प्रारम्भ में एक दिन एक महात्मा ने ज्योति जी के सूक्ष्म शरीर का आकर्षण कर उनसे कहा—'मेरे साथ चलो।' ज्योति जी उस समय तो कुछ न समझ सके, किन्तु किसी अज्ञात कारण से सूक्ष्म शरीर के रूप में महात्मा के साथ जाने लगे। उनका शरीर एक मन्दिर में पड़ा रहा। कुछ देर बाद वे हिमालय के एक रमणीक स्थान पर पहुँचे। वहाँ एक मन्दिर था जिसमें पाषाणमयी काली मूर्ति स्थापित थी। मन्दिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के निकट ही एक आश्रम था। उस पवित्र स्थान पर ज्योति जी को अलौकिक शान्ति का अनुभव हुआ।

कुछ देर बाद ज्योति जी की पूर्व स्मृति जागृत हो गयी। वे अपने पूर्व जन्म में वहाँ के सिद्ध योगी थे। वे एक सन्यासी के प्रति किये किसी अपराध के कारण अपने स्थान से च्युत हो गये थे। उनके लाने वाले महात्मा साथी सन्यासी थे। इस स्मृति के साथ ही ज्योति जी की पुरानी शक्तियाँ उन्हें पुनः प्राप्त हो गयीं और वे अलौकिक शक्ति सम्पन्न महात्मा बन गये।

—:※:—

सूक्ष्म शरीर से वृन्दावन यात्रा

एक बार वर्द्धमान के प्रसिद्ध एवं प्रतापी जमींदार श्री भगवानदास बाबा जी के दर्शनार्थ कालना पधारे। उस समय महासाधक बाबजी के नेत्र अर्द्ध निमीलित अवस्था में थे। वे हाथ में माला लिए ध्यानावस्था में जप कर रहे थे। जैसे ही जमींदार साहब कुटीर में प्रविष्ट हुए, वैसे ही एकाएक बाबा ने माला आसन पर पटक दी और चिल्ला पड़े—'अरे, अरे! मारो, मारो, यहाँ से निकालो।'

बाबाजी के इस कथन से जमींदार साहब बड़े खिन्न हुए तथा सोचने लगे—'मुझसे ऐसे कौन से पाप बन पड़े हैं जो बाबा मुझे कुटी में प्रवेश नहीं देना चाहते। अवश्य ही मुझ जैसे विषयी पुरुष के संस्पर्श से बाबा दूर रहना चाहते हैं।'

किन्तु बाबा जी उक्त शब्द कहकर शान्त हो गये थे, तथा जप में तन्मय हो गये थे। कुछ देर बाद बाबा ने आसन छोड़ा। सामने एक अतिथि को खड़ा देखकर बाबा बड़े आदर पूर्वक उनका स्वागत करने लगे और कुशल क्षेम पूछने लगे। बाबा के व्यवहार में यह परिवर्तन देख जमींदार साहब आश्चर्य चकित हो गये। मन में बाबा के इस परिवर्तन पर कुछ देर विचार कर साहस करके जमींदार साहब ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछा—'बाबा, जब मैं कुटी में प्रविष्ट हुआ था, उस समय आपने मुझे आश्रम से मार कर निकालना चाहा था। सम्भवतः मैं विषयी तथा अपराधी पुरुष हूँ, इसलिए आप दर्शन देना नहीं चाहते थे। महात्मन्! आप मेरा अपराध बताने की कृपा करें।'

बाबा ने कहा—'अरे यह आप क्या कह रहे हैं। वैष्णव साधुओं के लिए तो अतिथि मात्र ही आराध्य होता है। उसका अनादर करने पर भगवान का अनादर होता है। मैं आपके साथ ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता हूँ।'

'नहीं बाबा, जब मैं कुटी में प्रविष्ट हुआ तो आपने यहाँ से निकाल दो।' कहकर अपना रोष प्रकट किया था।'

जमींदार साहब ने अपना मन्तव्य प्रकट किया।

अब बाबा को सारी घटना याद आयी। वे लज्जित होकर बोले—'आप अपने मन में दुःखी न हों। मैंने यह सब कुछ आपसे नहीं कहा था। मुझे तो पता नहीं आप कब आये। उस समय वृन्दावन धाम में गोविन्द-मन्दिर में जो तुलसी-चबूतरा है, उस पर एक बकरी तुलसी पत्रों को खा रही थी। प्रभु की सेवा में विघ्न समझकर मैंने उसे वहाँ से भगाया था।'

वर्द्धमान के जमींदार के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने तुरन्त घड़ी से समय नोट किया और बाबा से कुछ देर बात करके चले गये। मन्दिर से जाने के बाद उन्होंने वृन्दावन के अपने एक मित्र को तार देकर उक्त घटना की सत्यता की जाँच की। जमींदार साहब के मित्र ने जो उत्तर भेजा उससे यह प्रमाणित हो गया कि कथित समय पर गोविन्द मन्दिर के तुलसी चबूतरे पर वास्तव में एक बकरी तुलसी के पत्र खा रही तथा अकस्मात बाबा ने वहाँ प्रकट होकर उसे मारा भी था। वहाँ उपस्थित व्यक्तियों ने बाबा भगवानदास के दर्शन भी किये थे।

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस अलौकिक घटना से जमींदार बहुत प्रभावित हुए और वे बाबा के अनन्य भक्त बन गये।

—:※:—

सूक्ष्म शरीर से कलकत्ता यात्रा

अभया ने दीर्घकाल तक अपने गुरुदेव ल हिड़ी महाशय की सेवा की थी, किन्तु दुर्भाग्य ! इतने प्रभावशाली गुरुदेव के होते हुए भी उसकी गोद अभी सूनी थी। उसने आठ बच्चों को जन्म दिया परन्तु दैव-वश वे सब काल की गोद में समा गये। अन्ततः अभया ने गुरुदेव से कातर स्वर में प्रार्थना की। प्रार्थना के प्रत्युत्तर में गुरुदेव ने अभया को बताया कि यदि वह उनके आदेशों का अक्षरशः प लन करेगी तो उसकी नौवीं सन्तान जीवित रहेगी। गुरुदेव ने कहा—'तुम्हारे एक कन्या का जन्म रात में होगा। उस समय अत्यन्त सावधानी पूर्वक ध्यान रखना कि प्रसव काल से सूर्योदय तक तेल का दीपक निरन्तर जलता रहे। प्रसूति-गृह के लोग सोयें नहीं तथा दीपक बुझ न पाये।"

गुरुदेव की भविष्यवाणी के अनुरूप कुछ काल बाद अभया ने रात्रि में एक कन्या को जन्म दिया। तुरन्त दीपक की व्यवस्था की गयी और सब लोग जगने लगे। रात्रि के अन्तिम प्रहर में नींद अधिक आती ही है, अभया व नर्स दोनों को नींद ने घर दबाया। दीपक का तेल कम हो गया और वह बुझने लगा।

लाहिड़ी महाशय रात्रि को ध्यान लगाकर बैठते थे, ध्यान में उन्होंने देखा कि उनकी शिष्या अभया के घर का रक्षा दीप बुझा जा रहा है। तुरन्त उन्होंने अपनी आत्मा को प्रेरित किया और अपने दूसरे शरीर से कलकत्ता पहुँच कर प्रसूति-गृह की किवाड़ों को तेज आवाज के साथ खोला। उस ध्वनि से अभया व नर्स चौंक कर जग गयीं। तुरन्त ही उन्होंने लाहिड़ी महाशय के स्वरूप को देखा तथा उसे देख गुरुदेव की आज्ञा का स्मरण कर दीपक की ओर दृष्टि घुमाई। नर्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र ही दौड़कर गयी तथा दीपक में तेल डाला जिससे दीपक तेज
के साथ जलने लगा। इसी बीच गुरुदेव की छायाकृति अदृश्य हो ग
तथा प्रसूति-गृह की किवाड़ तथा कुण्डा फिर से बन्द हो गये।

—:※:—

सूक्ष्म शरीर से लन्दन यात्रा

श्यामाचरण लाहिड़ी के आफिस के सुपरिटेंडेंट एक अंग्रेज
उनकी पत्नी इग्लैण्ड में बहुत बीमार थीं। कई दिनों से उनका
समाचार साहब को नहीं मिला था। इसलिए साहब कुछ परेशान
थे। 'लाहिड़ी महाशय' ने जब उन्हें बहुत चिन्तित देखा तो एक
उनकी व्यथा का कारण पूछ ही लिया। व्यथा का कारण बीमार
का समाचार ज्ञात न होना है, यह जानकर लाहिड़ी ने साहब से
कि वे आज ही लन्दन से उनकी पत्नी का समाचार ला देंगे। पहले
साहब को लाहिड़ी महाशय की बात पर विश्वास ही नहीं हुआ,
फिर भी उन्होंने उदास दृष्टि से लाहिड़ी को देखा, मानो वे अति-
पत्नी का समाचार जानने के इच्छुक हों।'

लाहिड़ी महाशय साहब को आश्वासन देकर समीपस्थ कम
ध्यानाविष्ट हो गये। कुछ समय बाद उन्होंने साहब को बताय
'आपकी पत्नी अब ठीक हो गयी हैं। वह शीघ्र ही आपको पत्र लिख
इतना ही उन्होंने साहब को पत्र की कुछ पंक्तियां भी बतायीं और
कि वह कुछ समय बाद आपसे मिलने भारत भी आयेंगी।

साहब ने लाहिड़ी महाशय की बात सुन तो ली किन्तु उन्हें
पर विश्वास नहीं हुआ। कुछ दिन बाद उन्हें अपनी पत्नी का पत्र
हुआ जिसकी वही भाषा थी जो लाहिड़ी ने बतायी थी। इस
से साहब आश्चर्यचकित हो गये और अत्यधिक प्रभावित हुए।

कुछ महीने बाद साहब की पत्नी भारत आयीं। जब उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाहिड़ी महाशय को देखा तो तुरन्त पहचान लिया तथा साहब को बताया—'इग्लैण्ड में मैं इन्हीं महात्मा की कृपा से रोगमुक्त हुई थी। जब मेरे जीवन की कोई आशा नहीं रही थी, तो इन्हीं महात्मा ने मेरी रोगशय्या के निकट आकर अपनी कृपापूर्ण दृष्टि से देखा, जिससे मुझे पुनर्जीवन मिला।'

पत्नी का कथन सुनकर साहब के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे लाहिड़ी महाशय से बहुत प्रभावित हुए।

—००—

बाबा गम्भीरनाथ की सूक्ष्म शरीर से विदेश यात्रा

एक महिला का पुत्र बैरिस्टरी पढ़ने विलायत गया था। लगभग चार मास से महिला को उसका कोई कुशल-पत्र नहीं मिला था। महिला ने अन्य सम्भव उपायों से भी पुत्र की कुशल क्षेम जाननी चाही, किन्तु कोई परिणाम न निकला।

उन दिनों बाबा गम्भीरनाथ की यौगिक शक्तियों की चर्चा हर जगह हो रही थी। महिला ने भी अब योगीवर की शरण ग्रहण की। बाबा के दोनों चरण पकड़ कर वह करुण क्रन्दन करने लगी और रो-रो कर सारा हाल बाबा को कह सुनाया।

बाबा गम्भीरनाथ ने उसे टालना चाहा अतः बोले—'भाई, मैं एक दरिद्र सन्यासी हूँ। विलायत की खैर-खबर कैसे जान सकता हूँ।' किन्तु महिला ने बाबा के चरण नहीं छोड़े और कहा कि 'आप सर्व-शक्तिमान और समर्थ हैं। आप इच्छा मात्र से ही मेरे पुत्र की कुशल जान सकते हैं। कृपा करके मुझ पर दया कीजिए। मेरे कष्ट को दूर कर दीजिए।'

सरल-प्रकृति बाबा करुणार्द्र हो गये और महिला को आश्वासन देकर अपने कमरे में चले गये, द्वार अन्दर से बन्द कर लिया। लगभग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चालीस मिनट बाद कमरे से निकल महिला से बोले—'माई, आगामी सोमवार को आपका पुत्र घर आ जायगा। इस समय वह जहाज पर है। अब तुम उसकी चिन्ता मत करो।'

आश्वस्त होकर महिला घर चली गयी। ठीक सोमवार को उसका पुत्र घर आ गया। अब महिला को स्वामी जी के प्रति बड़ी श्रद्धा हुई। उसने अपने पुत्र को स्वामीजी की चरण वन्दना करने भेजा। वकील पुत्र ने जब स्वामीजी को देखा तो आश्चर्य चकित रह गया और बोला—'हलो बाबा! यू आर हियर।' पास बैठे एक सज्जन ने उसे बताया कि बाबा अंग्रेजी नहीं जानते। अब वकील साहब ने हिन्दी में कहा—'बाबा आप यहाँ कब आये? जहाज से उतर कर जिस ट्रेन से मैं आया था, उससे तो आप आये नहीं क्योंकि आप मुझे केवल जहाज पर मिले थे, रेल में कहीं नहीं मिले।'

बाबा ने हँसकर बात टाल दी। बाबा जब कमरे में गये थे तथा चालीस मिनट बाद वापस आये थे। उसी बीच वे सूक्ष्म शरीर से जहाज पर पहुँचे थे और उन्होंने उस महिला-पुत्र से बातचीत भी की थी।

—:o:—

आकाश मार्ग द्वारा भ्रमण करने वाले योगी

१- एक दिन योगेश्वर रामलाल ने शिष्यों से कहा कि 'अब हम कुछ समय गुफा के अन्दर रहेंगे।' ऐसा कहकर वे गुफा में चले गये। द्वार अन्दर से बन्द कर लिया। दूसरे दिन जब शिष्य गुफा द्वार पर आये तो द्वार बन्द देख चकित रह गये। शिष्यों ने स्वामी जी को पुकारा भी किन्तु केवल एक बार आवाज आयी, उसके बाद पूर्ण निस्तब्धता छायी रही। थोड़ी देर में एक किसान वहाँ आया और बोला—'अभी-अभी मैंने स्वामीजी को आकाश-मार्ग से जाते देखा है।' यह सुनकर सब लोग आश्चर्य में पड़ गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वार अन्दर से बन्द था। अतः किवाड़ तोड़कर कुछ भक्त अन्दर गये। किन्तु स्वामीजी वहाँ न मिल सके। वे तो आकाश मार्ग से कहीं जा चुके थे।

२—राम ठाकुर बंगाल के एक प्रसिद्ध तथा अलौकिक शक्ति सम्पन्न महात्मा थे। ये किसी भक्त के स्मरण करने के साथ ही स्थूल शरीर में प्रकट हो जाते थे। आसन पर बैठकर इच्छानुसार इनका शरीर शून्य में उठ जाता था। यह प्रायः आकाशमार्ग से भ्रमण करते थे। एक दिन नवीन बाबू के घर इनका आकस्मिक आविर्भाव हुआ था। नवीन बाबू अपने कमरे बरामदे की ओर मुँह किये हुए बैठे थे। सहसा उनके सामने राम ठाकुर खड़े दिखाई दिये। रामठाकुर को उन्होंने सामने से आते नहीं देखा था। कमरे में आने का कोई दूसरा मार्ग नहीं था। अतः नवीन बाबू को विश्वास हो गया कि रामठाकुर आकाश मार्ग से आकर कमरे में प्रादुर्भूत हुए हैं।

इस घटना के बाद नवीन बाबू ने अन्यत्र भी दो तीन स्थानों पर रामठाकुर के आकाशमार्ग से आगमन की बात सुनी, जिससे उनका विश्वास और पक्का हो गया।

३—एक बार औरंगजेब ने सन्त मलूकदास को दो व्यक्ति भेजकर बुलवाया। वे कड़ा में सत्संग कर रहे थे। वहां से अदृश्य होकर वे रात में ही बादशाह के महल पहुंचे और थोड़ी देर अपने सत्संग से उसे लाभान्वित कर पुनः सत्संगियों के बीच आविर्भूत हो गये। मलूक दास जी ने प्रकट होकर कहा कि अब समय अधिक हो गया है, इसलिए अपने घर लौट जाओ। रात में लौटते समय उन्होंने बादशाह को आदेश दिया कि जिन दो व्यक्तियों को तुमने मुझे बुलाने भेजा है उन्हें सूबेदार बना दो और मुझे पत्र लिखकर देदो कि अब कभी मुझे आगरे नहीं बुलाओगे। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने औरंगजेब के दोनों सेवकों को बादशाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का पत्र दिखाया। उनमें से एक सूबेदारी करने के लिए लौट आया और दूसरे ने सूबेदारी के मोह को तिलांजलि देकर सन्त के चरणों की शरण ली। कड़ा में सन्त मलूकदास की समाधि के निकट उसकी भी समाधि बनी हुई है।

४—एक बार बालानन्द ब्रह्मचारी उत्तराखण्ड में कांगड़ा उपत्यका के भाकसुत स्थान पर गोमती स्वामी के निकट वास कर रहे थे। एक दिन उनके निकट एक योगिराज पधारे। कुछ देर वार्तालाप करने के बाद वे चले गये। कुछ दूर जाकर उन्होंने 'जय गुरुदेव, जय गुरुदेव' कहकर ताली बजायी। 'जय गुरुदेव' एवं ताली की आवाज़ सुनकर गोमती स्वामी एव बालानन्द ब्रह्मचारी बाहर निकल आये। कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि वे साधक धीरे-धीरे आकाश की ओर उठ रहे हैं। कुछ देर बाद महात्मा पर्वत शिखर की ओर उड़ गये।

महात्मा के इस आकाश गमन को देख बालानन्द जी चकित रह गये तथा सोचने लगे कि आकाश में इस तरह भ्रमण किस शक्ति के आधार पर किया जा सकता है?

गोमती स्वामी ने बालानन्द जी के भाव समझकर समझाया कि आकाश में उड़ने की विद्या योग-साधना द्वारा सम्भव है। कुछ साधु 'पारा' के द्वारा एक गुटिका बनाते हैं जिसे मुँह में रखकर वे लोग आकाश में उड़ जाते हैं। इसमें द्रव्य का अधिक खर्च आता है।

५—सर विलियम क्रुक्स, मायर्स और अन्य अनेक विश्वसनीय महानुभावों ने श्री होम के धरती से ऊपर उठने की क्षमता को प्रमाणित किया है। क्रुक्स ने लिखा है—'तीन अलग-अलग अवसरों पर मैंने होम को कमरे के फर्श से ऊपर पूर्णतः उठे हुए देखा है। अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति में कम से कम सौ बार होम ने धरती से ऊपर उठने का सफल प्रदर्शन किया। लार्ड लिण्डसे, कैप्टेन वाइन और डनरे वनके अर्ल ऐसे ही लोगों में सम्मिलित हैं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय पुरोहित स्वामी ध्यान के समय धरती से ऊपर उठ जाते थे और काफी समय ऐसी स्थिति में रहते थे। अपनी पुस्तक 'इण्डियन मॉक' में स्वामी ने एक ऐसे योगी का जिक्र किया है जो हवा में आराम से बैठते थे। श्री निरोखेकर ने बुद्बुदाचार्य नामक एक योगी को अपनी आँखों से हवा में ऊपर उठते हुए और तालाबन्द कमरे से बाहर निकलते हुए देखा था। अलैक्जेण्डर कैनन को एक योगी ने अपनी शक्ति से हवा में उड़ाया।

६—एक बार राजगृह के एक सेठ गंगा में जल क्रीडा करने गये। उन्होंने गंगा तीर पर अपने वस्त्राभूषण एक पात्र में सुरक्षित रूप से रख दिये। कुछ दिनों पूर्व नदी तट से एक लाल चन्दन का पेड़ जड़ से उखड़ कर नदी में गिर गया था और पानी के तेज बहाव तथा पत्थर से घिस-घिस कर अनेक टुकड़ों में बँट गया था। काठ का एक टुकड़ा सेठ के पात्र के समीप आकर रुक गया। सेठ ने उससे एक कमण्डलु बनवाया। एक दिन बांस के डण्डों को जोड़कर सेठ ने ६० हाथ ऊँचा एक डण्डा बनाया और उसे जमीन पर गाड़कर उसके ऊपर कमण्डलु को टांग दिया। सेठ ने सबमें घोषणा कराई कि यदि कहीं कोई अर्हत् हो तो शून्य मार्ग से आकर उसे ग्रहण करे। छः दिन छः साधुओं के प्रयत्न के लिए सुरक्षित थे। वे सब विफल रहे। सातवें महामौद्गल्यायन और पिण्डोल भारद्वाज राजगृह में भिक्षा के लिए आये। वे लोग एक समतल पहाड़ पर खड़े होकर कपड़े पहन रहे थे। वहीं कुछ शिकारी आपस में बातें कर रहे थे कि आजकल कोई अर्हत् नहीं जो सेठ के कमण्डलु को ले सके। दोनों ने सोचा कि यह तो तथागत के धर्म का अपमान है। अतः वे समाधि विशेष से व्युत्थित हुए और प्रदक्षिणा करके आसमान में उड़ गये। पहाड़ भी रुई की तरह हलका होकर उठ गया। उस पहाड़ के साथ राजगृह के ऊपर शून्य पथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने सात बार परिक्रमा की। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे नगर पर कोई ढक्कन आ पड़ा है। समस्त नगरजन डर गये। सातवीं बार प्रदक्षिणा करते समय पहाड़ फटा और उसके बीच से पिण्डोल सबके सामने प्रकट हुए। उनकी ठोकर से पहाड़ पूर्व में चला गया। सेठ द्वारा अनुरोध किये जाने पर भारद्वाज नीचे उतरे और उन्होंने भिक्षा ग्रहण की। उसी समय उस मार्ग से भगवान् बुद्ध भिक्षा के लिए आ रहे थे। चारों ओर सभी लोग पिण्डोल की ऋद्धि की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। भगवान् ने पिण्डोल को बुलाया और कहा—'भारद्वाज! तुमने इस तरह योगशक्ति का प्रदर्शन क्यों किया? यह कहकर उन्होंने उस लाल चन्दन के पात्र को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और उसे घिस कर दान करने का आदेश भिक्षुओं को दे दिया।

—:※:—

भूमि से ऊपर उठने वाले योगी

१—काशी का जन-संकुल बाजार। योगेश्वर रामलाल एक पण्डा के साथ आज इस बाजार में भ्रमण करने के लिए आये हैं। वे देखते हैं, सामने से एक पीत वस्त्र धारी ब्रह्मचारी बाबा आ रहे हैं, किन्तु इन्होंने यह क्या स्वांग बनाया है? साथ में एक वेश्या है जिसके कंधे पर ब्रह्मचारी हाथ रखे हैं। दूसरे हाथ में शराब की बोतल है। योगेश्वर इन ब्रह्मचारी की साधना से परिचित हैं। अवश्य ही किसी प्रयोजन से ब्रह्मचारी ने यह खेल रचा है।

ब्रह्मचारी जी ने सामने आते योगेश्वर को देख लिया। शीघ्रता-पूर्वक वेश्या को छोड़कर वे आगे आये। प्रणाम करके आदर, विनय सहित योगेश्वर से वार्तालाप कर वे चले गये। रामलाल प्रभु के साथ आये पण्डे को आश्चर्य हुआ—'महाराज! यह ब्रह्मचारी नहीं, लोलुप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और कामी व्यक्ति है।' देखो, इसके साथ वेश्या और शराब है। इसके साथ आपका यह मधुर मिलन कैसा ?

प्रभु जी हँसे और बोले—'तुम इसके वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते। यह पहुँचा हुआ योगी है।'

किन्तु पण्डा को विश्वास नहीं हुआ। अतः प्रभुजी उसे साथ लेकर ब्रह्मचारी जी के निवास पर गये। वहाँ वे ब्रह्मचारी जी की योग शक्ति पण्डा को दिखाना चाहते थे। उन्होंने पण्डा को एक मघ के समीप खड़ा कर दिया और कहा यहाँ से देखो। ब्रह्मचारी जी उस समय ध्यानाविष्ट थे। उनका आसन जमीन से काफी ऊंचाई पर था। थोड़ी ही देर में उनका आसन इतना ऊँचा उठ गया कि ब्रह्मचारी जी का सिर मघ से आ लगा। कुछ देर उसी स्थिति में रहने के बाद धीरे-धीरे उनका आसन नीचे उतरने लगा। प्रातः काल से कुछ देर पहले वे भूमि पर बिछे आसन पर विराजमान थे।

पण्डा ब्रह्मचारी जी के इस आचरण पर चकित था। कहाँ तो इतनी बड़ी योग सिद्धि और कहाँ वेश्या के साथ भ्रमण जैसा कुत्सित व्यवहार। जब ब्रह्मचारी जी से इस सम्बन्ध में प्रभुजी ने पूछा तो उन्होंने कहा—'दुनियाँ के लोगों से बचने के लिए मुझे ऐसा करना पड़ा है। दुनियाँ वाले योगियों से भांति-भांति के वरदान चाहते हैं, जो कभी कभी अनुचित भी होते हैं। अतः मजबूरन यह स्वांग मैंने रचा है। कृपा करके इस रहस्य को गुप्त रखियेगा।' यह सुनकर योगेश्वर रामलाल ने ब्रह्मचारी को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गये।

२—भादुड़ी महाशय पतंजलि प्रणीत योग दर्शन के महान् ज्ञाता थे। वे प्रायः अष्टाङ्ग-योग की प्रक्रिया के अनुसार प्राणायाम लगाया करते थे। कलकत्ता में आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रोड पर उनका निवास स्थान था। वे सदैव घर के अन्दर रहकर ही ईश्वर सम्बन्धी चिन्तन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
एवं मनन करते थे। जो जो दर्शनार्थी उनके दर्शन के लिए आते, वे सभी उनके सौम्य मुख मण्डल एवं सरल स्वभाव से प्रभावित तो होते ही थे, प्राणायाम की उनकी प्रक्रिया को देखकर आश्चर्य चकित रह जाते थे। स्वामी योगानन्द परमहंस अपनी किशोरवस्था में उनके पास बहुत अधिक आते जाते थे। उन्होंने भादुड़ी महाशय के विषय में लिखा है कि भादुड़ी महाशय प्रार्थना-सभा में या साधन-प्राणायाम में धरती से ऊपर कई फट की ऊंचाई पर पद्मासन लगाकर बैठते थे।

इस प्रकार शून्य में बैठ पाना कैसे सम्भव हो सकता है? इसके लिए योगानन्द जी के यह शब्द दृष्टव्य हैं जो उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखे हैं—"प्राणायाम की कुछ प्रक्रियाओं द्वारा योगियों के शरीर का जड़त्व दूर हो जाता है। तब वे शून्य में झूल सकते हैं तथा मेढ़कों की तरह कुदान मार सकते हैं। यहाँ तक कि ऐसे साधु-सन्यासी भी हैं जो कोई औपचारिक योग साधना नहीं करते, फिर भी वे ईश्वर की गहन-भक्ति की अवस्था में हवा में झूलते पाये गये हैं।"

—※—

योगी के स्पर्श से ही शरीर हल्का होकर ऊपर उठने लगा

एक समय योगेश्वर रामलाल नैपाल देश में 'गुंजेश्वरीदुर्गा' के मन्दिर से बारह मील आगे जगल में एक झाड़ी के निकट विश्राम कर रहे थे। सहसा अर्द्धरात्रि के समय पर उन्होंने महाप्रभु जी के दर्शन किये। महाप्रभु जी ने मधुर शब्दों में कहा—'वत्स उठो, हमारे साथ आओ।' महाप्रभु की आज्ञा पाकर योगेश्वर उठे और महाप्रभु के चरणों में लिपट गये। महाप्रभु ने आशीर्वाद दिया और अपने चिमटे का स्पर्श कराकर आँखें मूंदने को कहा। आंखें मूंदते ही योगेश्वर का शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल्का हो भूमि से उठने लगा। इस प्रकार महाप्रभु की कृपा से योगेश्वर आकाश मार्ग से महाप्रभु के आश्रम पर पहुँचे।

—*—

योगियों का सहज में प्रकट और अदृश्य होना

१ – एक बार स्वामी निगमानन्द कोटा राज्य के जंगल भरे इलाके से जा रहे थे। सन्ध्या हो चली थी, किन्तु उन्हें रात्रि विश्राम के उपयुक्त कोई स्थान नहीं मिल पा रहा था। उन्हें भूख-प्यास भी कातर बना रही थी। सहसा एक स्त्री ने उन्हें नाम लेकर पुकारा। स्वामी जी ने उस स्त्री को जीवन में पहली बार देखा था। उस स्त्री का शरीर बहुत सुन्दर तथा सुगठित था। स्वामी जी के समीप आकर वह स्त्री बोली—'तुम बहुत थके और भूखे-प्यासे दिखाई देते हो। अभी लगभग आधा मील और आगे जाओ। वहाँ एक कुटिया है। आज उसी में विश्राम करना।' स्वामी जी जब उस रमणी के निर्देशानुसार चले तो थोड़ी ही देर उन्हें एक कुटी मिली। यह कुटी स्त्री की थी जो अभी मार्ग में स्वामी जी को मिली थी। यह एक योग-सिद्धा-साधिका थीं। इनकी आयु साठ वर्ष से भी अधिक थी, किन्तु अभी भी उनका शरीर यौवनोचित श्री से शोभित था। यह दीर्घ काल से इस निर्जन वन में स्थित कुटी में निवास कर रहीं थीं।

कुछ ही देर में वे साधिका आ पहुँची तथा अतिथि का यथोचित सत्कार किया। विश्राम के समय योगिनी रमणी ने स्वामी जी से कहा—'देखो, अब तुम अधिक मत घूमो, कलकत्ता वापस चले जाओ। जिन गुरू को तुम खोज रहे हो, वे तुम्हें वहीं मिलेंगे।'

यह सुनकर स्वामी जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह योगिनी कैसे जानती हैं कि मैं गुरू की खोज में हूँ। स्वामी जी सोचने लगे कि कलकत्ता जाने के लिए पैसे कहाँ से जुटाऊंगा? कुछ देर योगिनी स्वयं ही बोलीं—'तुम पैसों की चिन्ता मत करो। सारा प्रबन्ध हो जायगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन प्रातःकाल योगिनी ने स्वामी जी को स्टेशन पहुँचा दिया तथा स्टेशन के समीप कुछ रुपये निगमानन्द के हाथ में रखकर वे अदृश्य हो गयीं।

आश्चर्य-चकित निगमानन्द दौड़कर उस कुटी की ओर आये, किन्तु वहाँ वह कुटी थी ही नहीं। स्वामी निगमानन्द यह सोचते-सोचते वापस स्टेशन लौट आये कि योगिनी कौन थी ? क्या मार्ग में भटके हुए मुझे मार्ग दिखाने को ही उन्होंने यह माया रची थीं ? किन्तु स्वामी जी अपने इस प्रश्न का कोई उचित उत्तर न पा सके।

२—कलकत्ता आकर स्वामी निगमानन्द आसाम की ओर रवाना हुए। एक रात्रि वे पेड़ के ऊपर सो रहे। जब उनकी नींद खुली तो नीचे एक संन्यासी को बैठे देखा। यह संन्यासी उस समय गाँजा पी रहे थे। किसी अलौकिक प्रेरणावश निगमानन्द नीचे उतरे और संन्यासी जी को दण्डवत् कर उनके सामने खड़े हो गये। संन्यासी जी उन्हें देखकर भी चुपचाप गाँजा पीते रहे। कुछ देर बाद उन्होंने चिलम निगमानन्द की ओर बढ़ायी, निगमानन्द कभी गाँजा नहीं पीते थे किन्तु उस समय मना न कर सके और उन्होंने भी उसमें एक दो दम लगाई।

गाँजा समाप्त होने पर सन्यासी जी उठे और निगमानन्द को अपने पीछे आने का इशारा देकर चल दिये। स्वामी जी भी चुपचाप उनके पीछे हो लिये। कुछ दूर जाने के बाद एक पहाड़ी के सामने सन्यासी जी रुक गये और निगमानन्द की ओर देखकर बोले—'बच्चा, तुम अभी कुछ भयभीत हो गये। मैं तुम्हें पहले से ही जानता हूँ। मुझे यह भी पता है कि तुम यहाँ क्यों आये हो ? अब तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। मैं तुम्हें लाने के लिए ही पेड़ के नीचे गया था। मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा।'

स्वामी निगमानन्द गुरुदेव के इस अलौकिक रूप से मिलने पर बहुत आनन्दित हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३—त्रिपुरा में आश्विनी नामक युवक अपनी माता व पत्नी के साथ स्वामी निगमानन्द का भजन-पूजन करता था। यह परिवार स्वामी जी के आश्रित था। प्रतिदिन नियम से परिवार के सभी सदस्य स्वामी जी की पूजा करते थे। एक दिन सहसा अश्विनी बीमार हुआ और उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी वृद्धा माता अश्विनी के इस आकस्मिक निधन से पागल सी हो गयी तथा स्वामी जी के चित्र को उठाकर तालाब में फेंकने को उद्यत ही गयी। कहने लगी—'जो ठाकुर ऐसी विपत्ति में भी हमारा सहारा नहीं हुआ उसे घर में रखने से क्या लाभ।'

सहसा कहीं से स्वामी निगमानन्द प्रादुर्भूत हुए और वृद्धा से बोले—'माँ, मैं जो तुम्हारा पुत्र हूँ। तुम अश्विनी के लिए इतना शोक मत करो। मेरा पुत्रवत् लालन करो।

स्वामी जी के इस कथन से वृद्धा का रोष दूर हो गया। उस समय स्वामी जी अकस्मात् कहाँ से आ गये, यह किसी ने भी नहीं देखा। स्वामी जी यहाँ अपनी अलौकिक योग शक्ति के प्रभाव से प्रकट हुए थे। सब लोग यह सोचकर बड़े आनन्दित हुए।

४—एक बार कुछ स्थानीय बदमाशों ने स्वामी निगमानन्द के भक्त अश्विनी की विधवा पत्नी पर अत्याचार करना चाहा। सहसा कहीं से निगमानन्द जी प्रकट हो गये। उनकी तेज हुँकार सुनकर बदमाश भाग गये। भयभीत परिवार को आश्वासन देते हुए स्वामी जी ने घर के चारों ओर एक रेखा खींच दी। और कहा—'इस रेखा के भीतर कोई व्यक्ति तुम्हारा अनिष्ट नहीं कर सकता।'

५—एक बार मुकुन्दलाल (स्वामी योगानन्द) ने वाराणसी जाने की इच्छा अपने पिता के सम्मुख प्रकट की। पिताजी ने उन्हें दो पत्र दिये और सहर्ष वाराणसी भ्रमण की अनुमति प्रदान कर दी। एक पत्र उनके मित्र एवं अधीनस्थ कर्मचारी केदारनाथ बाबू के नाम था तथा दूसरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके गुरु-भाई स्वामी प्रणवानन्द के नाम। बाबू केदारनाथ का पत्र भी स्वामीजी के माध्यम से ही पहुँचना था। मुकुन्दलाल पहले स्वामी जी के पास ही गये और उनकी दिव्य मूर्ति देख आश्चर्य-चकित हो उन्हें प्रणाम किया। स्वामी जी सर्वज्ञ थे। उन्होंने मुकुन्दलाल से उनका नाम परिचय आने का कारण आदि स्पष्ट बता दिये तथा यह भी बताया कि उनके पिता ने किस कार्य से उन्हें वाराणती भेजा था। कुछ देर बाल-चीत कर स्वामी जी ध्यान-मग्न हो गये। कुछ समय बाद बोले—'जिन व्यक्ति से तुम्हें मिलना है, वे आधे घण्टे में यहाँ तुम्हारे पास पहुँच जायेंगे। सचमुच आधे घण्टे बाद बाबू केदारनाथ जी आ गये। परिचय प्राप्त करने एवं अपना परिचय देने के बाद मुकुन्दलाल ने पूछा कि आपको मेरे विषय में कैसे ज्ञात हुआ तथा आप यहाँ कैसे आये? केदारनाथ जी ने बताया कि अभी कुछ देर पूर्व जब मैं गंगा स्नान कर रहा था, तो स्वामीजी मेरे पास गये और तुम्हारे आने एवं यहाँ मेरी प्रतीक्षा करने का समाचार देकर शीघ्रता-पूर्वक चले आये। मुकुन्दलाल के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि उसके आने के बाद तो स्वामी जी उसके सामने ही ध्यानस्थ मुद्रा में विराजमान रहे थे, कहीं गये ही नहीं थे। जहाँ स्वामी जी विराजमान थे, वहाँ आकर दर्शन करने पर केदार बाबू ने स्वामीजी की खड़ाऊँ तथा कोपीन को धारण किये हुए मिले थे। केदार बाबू तथा मुकुन्दलाल को आश्चर्यचकित देखकर स्वामी जी ने कहा—'इतने स्तम्भित क्यों हो? प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत् के बीच सूक्ष्म एकता का सम्बन्ध सच्चे योगी से छिपा नहीं है।

मैं यहां से क्षण मात्र में कलकत्ता जाकर अपने शिष्यों से मिलकर उनसे वार्तालाप करके वापस लौट आ सकता हूँ और इस प्रकार वे भी इच्छा मात्र से सब प्रकार के स्थूल पदार्थों की बाधाओं की बाधाओं का अतिक्रमण कर सकते हैं।"

वस्तुतः स्वामी जी अपनी इच्छानुसार दो शरीर धारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकते थे और दोनों शरीरों से कार्य भी कर सकते थे। यह उनकी साधना एवं योग का प्रभाव था।

६ योगी श्री नागा महाराज अपनी शक्ति को प्रायः गुप्त रखते थे। किन्तु कभी-कभी मौज में आकर शक्ति-प्रदर्शन भी करते थे। वे अपने चारों ओर खड़े बालकों से घिर जाते। उस समय बालक कहते—'बाबा अब हम तुम्हें नहीं जाने देंगे।' नागा बाबा बालकों के देखते-देखते गायब हो जाते और कुछ देर बाद उस घेरे से बाहर खड़े दिखाई देते। इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः होती रहती थीं।

एक बार कुछ भक्तों ने बाबा से कुछ दिनों ठहर जाने की प्रार्थना की। किन्तु बाबा सहमत न हुए। तब कुछ भक्तों ने बाबा को एक कमरे में बन्द कर दिया और बाहर से ताला लगाकर पहरा बैठा दिया। किन्तु बाबा तो देशकाल से परे थे। वे कमरे से गायब हो गये और दूसरे गाँव अपने एक भक्त के यहाँ प्रकट हुए।

एक बार योगी महाराज एक महिला भक्त के साथ इलाहाबाद गये। उन दिनों उनका आश्रम फतेहपुर में था। बाबा जब इलाहाबाद से वापस जाने लगे तो महिला भक्त ने बहुत रोकना चाहा। अब बाबा ने वहाँ से आने का कोई उपाय सोचा। उनके साथ फतेहपुर का ही एक लड़का था। बाबा उस भक्त महिला और लड़के के साथ गंगा स्नान करने संगम पर गये और वहाँ लड़के का हाथ पकड़कर त्रिवेणी में बैठ गये। महिला-भक्त योगी जी की यह लीला देखकर भयभीत हो गयी। काफी देर छान-बीन कराने पर भी त्रिवेणी घाट पर बाबा का पता न लगा। परेशान होकर महिला अपने घर लौट आयी।

दूसरे दिन फतेहपुर से समाचार आया कि बाबा और वह लड़का सकुशल अपने घर वापस आ गये हैं। महिला-भक्त यह समाचार पाकर आश्चर्य-चकित रह गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७—कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सर रमेश मित्र ने एक बार स्वामी भास्करानन्द सरस्वती से पूछा—'स्वामी जी आप सभी योगी-सन्यासी लोग संसार को असार, मिथ्या तथा माया मात्र बताते हो, किन्तु आपको स्पर्श करते समय हमें ऐसा प्रतीत नहीं होता।' अपना प्रश्न पूछकर जिज्ञासु भाव से सर रमेश ने स्वामी जी के चरण स्पर्श किये। किन्तु यह क्या ? चरणों पर से हाथ उठाते ही रमेश जी ने देखा कि स्वामी जी उस स्थान से लापता हैं।

क्षण भर के बाद ही स्वामी जी पुनः अपने स्थूल शरीर से उस आसन पर आ विराजे। आते समय उन्हें किसी ने भी नहीं देखा कि वे किधर से और कहाँ से आये। केवल आसन पर बैठे दिखायी दिये। आसन पर बैठकर स्वामी जी कहने लगे—'अब समझ में आया या नहीं ? यदि संसार मिथ्या नहीं है तो यह कैसे सम्भव है कि मैं यहाँ हूँ भी और नहीं भी हूँ।' इतना कहकर स्वामी जी एक बार फिर अदृश्य हो गये। अब रमेश ने उस स्थान को टटोल कर देखा, स्वामी जी वस्तुतः वहाँ पर नहीं थे। क्षण भर बाद ही स्वामी जी पुनः आसन पर थे। सर रमेश मित्र ने संसार की असारता समझ ली थी।

—※—

अन्तर्धान होने वाला योगी

चिदम्बरम् के निकट मरुदरूर में विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में रामय्य पिल्लै और चिन्नमल के परिवार में ब्रह्मयोगी रामलिङ्गम का आविर्भाव हुआ था अन्तिम दिनों में वे एक झोंपड़ी में रहा करते थे। दो साल पूर्व ही उन्होंने बता दिया था कि मैं ५४ वर्ष की अवस्था में इस शरीर से अदृश्य हो जाऊँगा। अन्तिम समय आने पर शिष्यों ने उन्हें आराम से सुला दिया। वे कहने लगे, मैं कुछ समय के लिए अदृश्य हो रहा हूं। यह शरीर जलाने अथवा समाधि के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं मिल सकेगा। मैं शुद्ध निर्विकल्प समाधि में हूँ। मैं सिद्ध की तरह परिभ्रमण करूंगा, केवल भारत ही नहीं, पश्चिमी देशों में मुझे कार्य करने के लिए जाना पड़ेगा। मैं दिव्य शरीर धारण कर लौट आऊँगा। खिड़की और दरवाजे चारों ओर से बन्द कर दीजिए।' उनकी आज्ञा के अनुसार दरवाजे बन्द कर दिये गये, उनमें ताले लगा दिये गये। लोग बाहर खड़े होकर दरवाजों की ओर सावधानी पूर्वक देख रहे थे। दरवाजों के खुलने पर कुटी में शून्य के सिवा और कुछ नहीं दिखाई पड़ा। इस प्रकार सम्वत् १९३३ वि० को वे शरीर सहित अन्तर्धान हो गये। वे सिद्ध पुरुष थे। वे प्रायः अपने शिष्यों की दृष्टि से ओझल होकर कई दिनों तक अदृश्य रहते थे।

—:*:—

अदृश्य होने वाला योगी जिसने नवाब की विचारधारा बदली

भोपाल राज्य के नवाब का महल एक झील के किनारे था। नवाब ने एक घोषणा द्वारा झील के किसी भी किनारे पर शंख या घंटा की ध्वनि करने की सख्त मनाही करवा दी थी। इस आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को प्राण दण्ड की सजा की व्यवस्था थी।

एक दिन देवदास महाराज शिष्यों सहित इस झील के किनारे गये। शिष्यों को कुछ दूर हटकर उन्होंने उच्च स्वर से शंख ध्वनि करना प्रारम्भ कर दिया। महल के सब लोग शंख ध्वनि सुन सुनकर चकित हो गये। 'कौन शंख बजा रहा है।' यह जानने के लिए नवाब साहब ने एक आदमी भेजा। उसने वापस जाकर नवाब को सूचना दी कि एक हिन्दू सन्यासी सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करके शंख बजा रहा है। सूचना पाकर नवाब साहब आपे से बाहर हो गये। तुरन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्यासी को पकड़ने की आज्ञा हुई। पकड़ में आने पर मस्तक काट ले का हुक्म दिया गया।

आज्ञा पाकर नवाब के अनुचर दौड़कर सन्यासी के पास आये किन्तु यह क्या? यहाँ तो एक साधू का मस्तक एवं अङ्ग छिन्न विच्छिन्न पड़ा है। यहाँ दूर-दूर किसी जीवित प्राणी का नामोनिशा तक नहीं है। अनुचरों ने सारी स्थिति नवाब को बता दी।

किन्तु थोड़ी ही देर बाद फिर उसी स्थान से शंख ध्वनि हुई नवाब के अनुचर फिर दौड़े। इस बार न तो उन्हें कोई जीवित व्यक्ति मिला और नहीं पहले वाले साधु के अङ्ग। अनुचरों ने आस-पा सारा क्षेत्र छान डाला किन्तु परिणाम कुछ भी न निकला।

अभी अनुचर नवाब के पास पहुँचे ही थे कि फिर शंख-ध्वनि हुई। सारा किस्सा सुनकर नवाब को विश्वास हो गया कि शंख ध्वनि करने वाले यह व्यक्ति अवश्य ही कोई शक्तिशाली योगी है। उसे हु भय का अनुभव हुआ। साथ ही हिन्दू सन्यासियों के प्रति श्रद्धा-भा भी उमड़ा। वह हिन्दू योगी के दर्शन करने अपने मन्त्रियों सहित उ उपस्थित हुआ। आश्चर्य चकित अनुचरों के साथ नवाब ने देखा कि उसी स्थान पर लम्बी जटाओं वाले एक सन्यासी बैठे हैं।

योगी को देखकर नवाब ने प्रणाम करके क्षमा मांगी और आज्ञा चाही। योगी बोले—'तुम्हारे धर्म में शंख नहीं बजाया जाता तो मत बजाओ। दूसरों को क्यों रोकते हो? आप दूसरे धर्म वालों को भी धर्म पालन करने दें। मेरी यही इच्छा है।'

नवाब ने खुशी-खुशी योगी के इस आदेश को स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों बाद उसी झील के किनारे देवदास जी ने एक मन्दि का निर्माण करवाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगी देश और विदेश में कहीं भी प्रकट होकर आशीर्वाद देते हैं

१– दार्जिलिंग के डिप्टी मजिस्ट्रेट पार्वतीचरण राय श्री लोकनाथ ब्रह्मचारी के अनन्य भक्त थे। एक बार वे दुःसाध्य रोग से पीड़ित हो गये। जब रोग अधिक बढ़ गया तो वे श्रद्धा-भक्ति पूर्वक ब्रह्मचारी जी का स्मरण करने लगे। सहसा उनको सामने ब्रह्मचारी जी आविर्भूत हुए और राय महोदय को आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया। ब्रह्मचारी जी के आशीर्वाद से राय साहब ने आरोग्य लाभ प्राप्त किया।

राय साहब जानते थे कि ब्रह्मचारी जी बारदी छोड़कर कहीं नहीं जाते। अतः गुरुदेव की अलौकिक घटना जानकर उन्होंने एक पत्र लिखा, जिसमें घटना का सारा विवरण लिखा हुआ था। सर्वज्ञ ब्रह्मचारी जी से कुछ छिपा न था। जैसे ही डाकिया पत्रों का पुलिन्दा लेकर आया, वैसे ही ब्रह्मचारी जी उससे बोले—'देख तो पार्वती की चिट्ठी है न, क्या लिखा है?' पत्र का विवरण सुनकर ब्रह्मचारी के समीप बैठे भक्त कह उठे—'महाराज, आप दार्जिलिंग कब गये थे? हमने तो आपको कहीं जाते नहीं देखा।' ब्रह्मचारी जी ने हंसकर उनकी बात टाल दी।

कुछ दिनों बाद पार्वती चरण भी बारदी आये तो गुरुदेव से उक्त प्रश्न किया। ब्रह्मचारी जी ने कहा—'मैं तो बारदी ग्राम छोड़कर कहीं जाता नहीं।' पार्वती बाबू ने फिर पूछा—'बाबा, जब मेरे निकट प्रकट हुए थे, उस समय मैं जाग्रत अवस्था में था। मैंने आपको भली भाँति देखा तथा आपने मुझे आशीर्वाद भी दिया, जिससे मैं रोग-मुक्त हो गया। सचमुच मैंने स्वप्न नहीं देखा।' ब्रह्मचारी जी ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया—'उस समय मुझे तुम्हारे रोग की चिन्ता जो थी।'

यह सुनकर पार्वती बाबू आश्चर्य में पड़ गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२—एक बार एक अमेरिकन महिला अमेरिका में ही भयंकर व्याधि से पीड़ित हो गयी। पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति से उसे कोई लाभ नहीं हुआ। उस महिला ने भारतीय योगियों की कुछ अलौकिक घटनाएँ सुनीं थीं। अतः उसने निश्चय किया कि किसी भारतीय व्यक्ति से मिलकर योग प्रणाली से इस व्याधि की चिकित्सा की जाय।

ऐसा सोचकर वह महिला डॉ० निशिकान्त वसु के पास गयी और उनसे-योग शक्ति के माध्यम से अपनी चिकित्सा करने को कहा। डा० निशिकान्त उन दिनों अमेरिका में चिकित्सा-व्यवसाय कर रहे थे। उस महिला का कथन सुनकर उन्होंने कहा—'मैं भारतीय चिकित्सा विज्ञान में कुछ नहीं जानता हूँ। मैं किस प्रकार आपकी चिकित्सा कर पाऊंगा।'

डॉ० निशिकान्त वसु के मना करने पर भी वह महिला अनुरोध करती रही। कुछ देर बाद उसे वसु महोदय के पीछे एक दीर्घकाय जटाजूट मण्डित महापुरुष की अद्भुत मूर्ति दिखायी। महिला खुशी से चिल्ला उठी—'डाक्टर, देखो तुम्हारे पीछे वे कौन खड़े हैं? भारतीय योगी हैं न।' किन्तु वसु महाशय कुछ भी नहीं देख पा रहे थे। उस महिला के हाथ पर कुछ औषधि रखकर योगिराज अदृश्य हो गये। उसी औषधि से उस महिला का वह रोग जाता रहा।

कुछ काल बाद डॉ० वसु भारत आये और अपने एक सम्बन्धी से भेंट करने बारदी ग्राम आये। जब उन्होंने लोकनाथ ब्रह्मचारी के दर्शन किये तो दंग रह गये। उस अमेरिकन महिला ने जिन महापुरुष का वर्णन किया था, वे यह ही तो हैं। 'यह महापुरुष तो यहाँ से कहीं नहीं जाते।' यह सुनकर तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वसु महाशय ने बार बार सबके सामने अमेरिका की इस घटना का वर्णन किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३—एक बार भक्त कर्णसिंह अलीगढ़ में चलते हुए मार्ग में गिर गये। गिरने से उन्हें बहुत चोट आयी और दर्द के कारण वे रोने लगे। सहसा आपको गुरुदेव योगेश्वर रामलाल की याद हो आयी। वे कातर स्वर से गुरुदेव को याद करने लगे। भक्त की आवाज पर स्वामी जी वहाँ आ उपस्थित हुए और कर्णसिंह के कष्ट को अपने हाथों के स्पर्श से दूर कर दिया। उसी समय हरिद्वार में अन्य भक्त कन्हींराम कष्ट में पड़ गये। स्वामी जी अपने दूसरे रूप में वहाँ पहुँचे और कन्हींराम का कष्ट दूर कर कुछ बातचीत की तथा भक्त को सवांई ग्राम पहुँचे का आदेश देकर अदृश्य हो गये।

ठीक उसी समय पर स्वामी जी सवांई ग्राम में अखाड़े में लड़कों को दाव बता रहे थे। जब दोनों भक्त सवांई पहुँचे तो आश्चर्य पूर्वक अलग-अलग कहने लगे 'महाराज हम रेल से आये हैं। आप हमसे पहले कैसे पहुँच गये। इस पर सवांई के सब लोग आश्चर्य से दोनों भक्तों की ओर देखने लगे, क्योंकि स्वामी जी तो कहीं गये ही नहीं थे। यह सुन प्रभु जी मुस्कराने लगे। बाद को पता चला कि स्वामी जी यहाँ, हरिद्वार तथा अलीगढ़ में एक ही समय में सशरीर विद्यमान थे।

—:o:—

योगी के अदृश्य हाथ काठिया बाबा को तीव्र जल-धारा से निकाल कर पृथ्वी पर लाए

सन्त रामदास काठिया बाबा एक बार उत्तराखण्ड के सघन वन-प्रदेश में भ्रमण कर रहे थे। एक निर्जन पहाड़ में उन्हें एक गुफा दिखायी दी जिसका द्वार एक शिला से ढका हुआ था। कौतूहल वश उन्होंने शिलाखण्ड एक ओर हटाकर अन्दर प्रवेश किया। उन्होंने देखा कि एक विशालकाय जटाजूटधारी महात्मा आसन जमाये बैठे थे। उनकी आँखें त्वचा के लटक आने से ढक गयी थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ देर बाद महात्मा का ध्यान भंग हुआ। सामने रामदास को खड़ा देख वे क्रोधित हो गये और गम्भीर ध्वनि से उनका परिचय पूछा। रामदास ने प्रणाम करते हुए विनम्र स्वर में कहा—स्वामी जी, मैं आपका विनीत दास हूँ।'

'दास ?, तो क्या तुम मेरे आदेश का पालन करोगे ? दास तो स्वामी के आदेश का अक्षरशः पालन करता है।' स्वामी जी ने आदेश के स्वर में कहा।

'अवश्य, महाराज ! आपकी कृपा से मैं आपके प्रत्येक आदेश के पालन के लिए तत्पर हूँ।' रामदास ने पुनः महाराज को प्रणाम किया।

वृद्ध साधु ने सामने बहती तेज धारा वहाड़ी नदी की ओर इशारा करके कहा—'तो मेरी आज्ञा है कि तुम इस नदी में कूद पड़ो।'

एक बारगी रामदास नदी के उन्मत्त प्रवाह को देख सिहर उठे, किन्तु उन्हें महात्मा की आज्ञा-पालन में ही अपना कल्याण दिखाई दिया। अतः इष्ट देव का स्मरण कर वे उस जलधारा में कूद पड़े। देखते-देखते उनका शरीर तीव्र वेग से प्रवाह की दिशा में बहने लगा।

अब वृद्ध तपस्वी ने रामदास को बचाने का उपक्रम किया। उन्होंने अपना हाथ जलधारा में बढ़ाया तथा धारा के अन्दर बढ़े हुए हाथ से रामदास के शरीर को स्पर्श किया। स्पर्श करने मात्र से रामदास को एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति हुई। फिर उनका शरीर श्रेष्ठ योगी के हाथ के आकर्षण से शून्य में उठा और आकाश-मार्ग से आकर गुफा द्वार के सामने खड़ा हो गया।

अब महात्मा रामदास से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने कुछ सदुपदेश एवं आशीर्वाद प्रदान कर रामदास को विदा किया।

—*—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंगा में छलांग लगाने से अपने आश्रम पहुँच गए

एक बार योगी श्री नागा महाराज कुछ भक्तों के साथ हरिद्वार भ्रमणार्थ गये। जब वे ऋषीकेश में लक्ष्मण झूला के पुल पर थे तो एकाएक मन में कुछ सोचकर पुल पर से गंगा में कूद गये। यहाँ गंगा की धारा बहुत तीव्र थी तथा जल भी बहुत गहरा था। भक्तों ने समझा कि बाबा ने जल समाधि ले ली है। वे कर ही क्या सकते थे। खिन्न मन अपने घर चले आये।

जब वे भक्त गांव वापस आये तो बाबा को अपने आश्रम में पाया। चकित होकर उन्होंने बाबा से इस रहस्य को जानना चाहा। बाबा ने कहा—'मुझे एक आवश्यक कार्य से उसी दिन यहाँ आना था, सो मैंने गंगा माता की शरण ली और यहाँ चला आया।'

—※—

योगी ने अचानक प्रकट होकर अधिकारी के कठिन व्यवहार का स्मरण दिलाया

अविनाश बाबू को अपने गुरु लाहिड़ी महाशय के दर्शन करने जाने के लिए छुट्टी की आवश्यकता थी। वे अपने अधिकारी श्री भगवती चरण घोष (परमहंस स्वामी योगानन्द के पिता) के पास गये और अवकाश प्रदान करने की प्रार्थना की। उन्होंने यह कहकर कि धर्म-कर्म के विषय में पागल होना व्यर्थ है। सुखी जीवन एवं नौकरी में उन्नति तो अपने कार्य में ध्यान से सम्भव है, अवकाश देना स्वीकार नहीं किया। सायंकाल जब अविनाश बाबू को सांत्वना देने के लिए घोष जी उनके साथ जा रहे थे और भाँति-भाँति से समझा रहे थे तो गुरू लाहिड़ी महाशय का स्वरूप एकाएक एक सुनसान मैदान में प्रकट हुआ और अविनाश बाबू एवं घोष के कानों में आवाज आई—'भगवती तुम अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्मचारी के प्रति अत्यन्त कठोर हो।' रहस्यपूर्ण ढंग से सामने प्रकट हुए महाशय यह कहकर अदृश्य हो गये। भगवती चरण घोष इस घटना से बहुत प्रभावित हुए तथा दूसरे दिन ही अविनाश बाबू के साथ सपत्नीक बनारस जाकर गुरू लाहिड़ी महाशय के दर्शन किये पद्मासन पर बैठे गुरुदेव ने उक्त शब्द—'भगवती तुम अपने कर्मचारी के प्रति अत्यन्त कठोर हो।' दुहराते हुए कहा—'मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अविनाश को मेरे पास आने की अनुमति देदी और तुम भी सपत्नीक उसके साथ आ गये।'

—:※:—

अचानक प्रकट होकर चेतावनी दी

हंस बाबा के आश्रम के आस-पास बहुत सांप पाये जाते थे। ये सांप बाबा से अलौकिक रूप से प्रभावित थे। एक बार एक ब्रह्मचारी जी बाबा के आश्रम पर आये। कुछ दिन साधन-भजन करने के बाद वे बाबा के प्रियपात्र बन गये। यह ब्रह्मचारी प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में उठते और एक मील दूर कुतुनिया नदी पर स्नान करने जाते।

एक दिन कुछ रात रहते ब्रह्मचारी जी उठे और स्नान करने चल दिये। उस समय हंस बाबा साधन-भजन में तन्मय थे। ब्रह्मचारी जी आधा रास्ता पार कर गये। एकाएक उन्हें हंस बाबा की ध्वनि सुनायी दी—'ब्रह्मचारी जी, सावधान।'

आवाज सुनकर ब्रह्मचारी जी एक साथ रुक गये। उन्होंने देखा कि एक विशाल विषधर सर्प उनके मार्ग में अपना फण फैलाये बैठा था। ब्रह्मचारी जी ने उसे देखकर मारने के विचार से अपना डण्डा ऊपर उठाया। वे उस सर्प को मारना ही चाहते थे कि उन्हें हंस बाबा की आवाज फिर सुनायी दी—'अरे नहीं, उसे मारो मत।'

ब्रह्मचारी जी पेशोपेश में पड़ गये। हाथ की लाठी हाथ में रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी। किन्तु कुछ ही बाद वह सर्प वहाँ से चला गया और समीप की एक झाड़ी में घुस कर अदृश्य हो गया।

—००—

योगियों को डाक और पार्सल भी दिव्य मार्ग से आते हैं

स्वामी विशुद्धानन्द के गुरुदेव का आश्रम ज्ञानगंज में 'सिद्धाश्रम' नाम से प्रसिद्ध था। स्वामी जी कहा करते थे कि उनका अपने गुरू के आश्रम से निरन्तर सम्पर्क बना रहता है। उनका हीं नहीं, ज्ञान-गंज के सभी शिष्य, वे चाहे कहीं भी रहें, वहाँ से निरन्तर सम्बन्धित रहते हैं। स्वामी जी सूर्य विज्ञान का लैंस, औषधियां तथा कुछ अन्य वैज्ञानिक यंत्र वहाँ से मँगाते थे तथा यहाँ से वस्त्राभूषणादि भेजा करते थे। किन्तु ये वस्तुएँ कैसी भेजी तथा मँगायी जाती थीं, इसका पता किसी को नहीं था। एक बार स्वामी जी के एक शिष्य सुरेन्द्रनाथ मुकर्जी ने लगभग ५० रंग बिरंगी साड़ियाँ लाकर बाबा को दीं और कहा कि वे इन्हें ज्ञानगंज भेजना चाहते हैं। बाबा ने उन साड़ियों का पार्सल बनवाया तथा उसे पूजा घर में रखवा दिया। उसके बाद शिष्यों को बाहर भिजवा दिया और कहा कि मैं सन्ध्या कर लूँ तब शेष बातें होंगी। इसके बाद बाबा ने दरवाजा बन्द कर लिया। आधा घण्टा बाद बाबा बाहर आये। और शिष्यों से कहा—'कपड़े का पार्सल ज्ञानगंज भेज दिया गया।' जब शिष्यों ने अन्दर जाकर देखा तो पार्सल का बंडल पूजा घर में नहीं था।

—००—

परकाया प्रवेश करने वाला योगी

एक नदी में एक नौजवान की लाश बहती हुई जा रही थी। एक वृद्ध योगी ने उसे देखा और प्रयास पूर्वक उसे नदी से बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकाल लिया। थोड़ी देर बाद उसने उस लाश को एक वृक्ष के नीचे लिटा दिया और किसी यौगिक-क्रिया में लग गया। चन्द क्षणों में उस योगी ने अपना जरा जीर्ण शरीर त्याग दिया और अपनी आत्मा को उस नवयुवक की लाश में प्रविष्ट करा दिया।

इस सारे अलौकिक कृत्य को एक सैनिक अधिकारी दूरवीन की सहायता से देख रहा था। यह सैनिक अधिकारी एल० पी० फेरल एक अंग्रेज था, जिसे इस प्रकार की घटना पर विश्वास नहीं था। जब उसने सामने से एक नौजवान जो अभी तक मुर्दा था, जीवित होकर जाने लगा तो उसने अपने सिपाहियों को उस व्यक्ति को अपने पास लिवा लाने को भेजा। कुछ देर बाद सिपाही उस नवयुवक को ले आये। उसे देखकर अधिकारी ने पूछा कि तुम तो अभी मुर्दा थे, जीवित कैसे हो गये और तुम्हें बाहर निकालने वाला साधु कहाँ गया।

उस व्यक्ति ने मुस्करा कर उत्तर दिया—'मैं ही वह साधू हूँ।'

अधिकारी के आग्रह करने पर उस साधू ने बताया कि वह योग विद्या का जानकार है और कड़ी तपस्या के बाद उसे कुछ अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें एक यह परकाय-प्रवेश-विद्या है। इस विद्या द्वारा एक आत्मा दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो सकती है, भले ही वह पशु-पक्षी का ही शरीर क्यों न हो। उस साधू ने यह रहस्योद्घाटन भी किया कि वह अपने कई जरा जीर्ण शरीर इसी प्रकार त्याग चुका है।

—:※:—

योगी ने मरणासन्न शरीर में प्रविष्ट होकर प्राणवायु ब्रह्मरन्ध्र से निकलवाये

स्वामी योगत्रयानन्द के पिता एक बार निमोनिया रोग से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ित हो गये। धीरे धीरे उनकी हालत नाजुक हो गयी। सारा परिवार उन्हीं के समीप आ जुटा और सबने यह अनुमान लगा लिया कि अब इनका अन्तिम समय निकट ही है। इसी समय योगत्रयानन्द बाहर से आये और पिता की गम्भीर स्थिति को देख समय की नाजुकता ताड़ गये। शीघ्रता-पूर्वक उन्होंने पिता के सारे शरीर पर राम-राम लिखा और उनके सामने ही वे समाधि लगाकर बैठ गये। कुछ देर बाद उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये, इसके साथ ही पिताजी का प्राणवायु ब्रह्मरन्ध्र को फोड़ कर निकल गया।

पिता के सारे अन्तिम संस्कार करने के बाद लोगों ने योगत्रयानंद से इस अलौकिक घटना का रहस्य पूछा। स्वामी जी ने बताया कि उन्होंने पिताजी के शरीर में प्रवेश करके उनका प्राणवायु ब्रह्मरन्ध्र से निकलवाया। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनके योगी होने से पिता को क्या लाभ था ?

—००—

अनेक शरीर धारी योगी

सन् १९३४ की बात है नासिक में मिसे के घर पर तीन-चार लोग बैठे हुए श्री गजानन्द महाराज गुप्ते से वार्तालाप कर रहे थे। अचानक महाराज जी ने कहा—'वह मेरे घर पर मेरे कमरे में मेरे बिस्तर के समीप ही बीमार पड़ा है। मुझे परेल जाना ही चाहिए।' परेल से किसी की भी बीमारी का कोई तार नहीं आया था। सभी लोग महाराज जी के कथन से विस्मित हो रहे थे कि उसी समय परेल से एक टेलीग्राम मिला—'शंकर गंभीर रूप से बीमार है और आपसे तुरन्त चल पड़ने की प्रार्थना कर रहे हैं।

इन्दौर के माधवनाथ महाराज के विषय में भी एक ऐसी घटना प्रसिद्ध है। सरदार एम० बी० कीवे इंग्लैण्ड से लौट रहे थे। रात के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय जब वह अरब सागर में नौका द्वारा यात्रा कर रहे थे, भीषण तूफान आया। सरदार बहुत डर गये पर जैसे-तैसे उन्होंने अपने ऊपर काबू पाया और महाराज जी के सम्बन्ध में ध्यान करने लगे। उन्होंने देखा कि महाराज जी उन्हें सुरक्षा का आश्वासन दे रहे हैं। इसी तरह ध्यान करते-करते सरदार को नींद आ गयी। सवेरे जब आँख खुली तो समुद्र शान्त था। सरदार बम्बई आये। वहाँ उन्हें पता चला कि गुरूजी पूना हैं, तो ट्रेन द्वारा फौरन पूना चल पड़े। सरदार जी ने महाराज जी के सम्मुख जैसे ही सर झुकाया कि स्वामी जी बोल उठे— 'नौका में तुम्हें बचाने कौन आया?' सरदार विस्मित थे।

एक बोहरा व्यापारी ने भी समुद्री तूफान के बीच श्री मणिक प्रभु की कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। योगी हैदराबाद के अन्तर्गत माणिक नगर में थे। जब व्यापारी ने भयाग्रस्त होकर नौका पर ही प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया तो स्वामी जी ने अपनी शिष्य मण्डली के बीच बैठे हुए अपना एक हाथ उठा दिया मानों किसी आर्त को आश्वासन दे रहे हों। उनके कपड़े भीग गये। ऐसा लगता था जैसे पानी में गोता लगाकर आ रहे हों। शिष्य इस सारे दृश्य पर अवाक् थे। अन्ततः स्वयं स्वामी जी ने बताया कि माणिकनगर में उन लोगों के बीच होते हुए भी स्वामी जी ने अरब सागर में जाकर एक यात्री की रक्षा की थी जिसके कारण कपड़े भीग गये थे। कुछ ही दिनों बाद व्यापारी कृतज्ञता व्यक्त करने महाराज जी के पास आया। स्वामी जी द्वारा बताये गये समय, तिथि और अनुभव की पुष्टि उस बोहरा व्यापारी ने बाद में की।

—००—

योगियों ने कुत्ते का शरीर धारण किया

१—भगवान् बुद्ध का एक भक्त अन्त्यज जाति का था। उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
एक दिन बुद्धदेव का निमन्त्रण किया और गुरुदेव के लिए सुअर का मांस तैयार करवाया। वह हरिजन भक्त दिन भर प्रतीक्षा करता रहा, किन्तु गुरुदेव नहीं पधारे। सायंकाल एक कुत्ता वहाँ आया और उसने उस मांस में से कुछ हिस्सा खा लिया। जब भक्त ने यह देखा तो कुत्ते को भगा दिया। उस दिन गुरुदेव नहीं आये।

जब दूसरे दिन भक्त गुरुदेव के पास पहुँचा तो उलाहना देने लगा। गुरुदेव बोले--'भाई, मैं तो गया था, कुछ हिस्सा खाया भी था, किन्तु तुमने खाने ही नहीं दिया। तुमने ही तो उस कुत्ते को भगा दिया था जिसने मांस के बर्तन में जबरन मुँह डाल दिया था। तुमने मुझे जैसा पदार्थ बताया था, उसी के अनुरूप शरीर धारण कर मैं गया था।'

यह सुनकर भक्त को बड़ा पछतावा हुआ और वह बार-बार क्षमा-याचना करने लगा।

२—एक बार किसी भक्त ब्राह्मण ने लोकनाथ ब्रह्मचारी जी को अपने यहाँ पितृ-श्राद्ध के अवसर पर निमंत्रित किया। ब्रह्मचारी यों तो ऐसे अवसरों पर बहुत कम जाते थे, किन्तु उस दिन ब्राह्मण से बोले—'अच्छा आऊँगा।' ब्राह्मण श्राद्ध वाले दिन ब्रह्मचारी जी की प्रतीक्षा करता रहा किन्तु लोकनाथ जी उसे दिखायी नहीं दिये।

दूसरे दिन ब्राह्मण ने ब्रह्मचारी जी से शिकायत की—'बाबा, आपने हमसे वचन किया था किन्तु आप आये नहीं।'

ब्रह्मचारी जी ने ब्राह्मण से कहा कि मैं तो तुम्हारे घर दो बार गया किन्तु तुम मुझे पहचान ही न सके। एक कुत्ता तुम्हारे घर गया था या नहीं। स्मरण करो तो। तुमने उसे लाठी मारकर भगा दिया था। फिर मैं भाग आया और क्या करता? तुम्हीं बताओ।'

अब ब्राह्मण को बड़ा पश्चाताप हुआ और ब्रह्मचारी जी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षमा-याचना करने लगा। दयालु ब्रह्मचारी जी ने उसे सहर्ष क्षमा कर दिया।

—:※:—

साईं बाबा कुत्ते और भिखारी के रूप में प्रकट हुए

उपासनी महाराज साईं बाबा के प्रमुख शिष्य थे। एक बार खण्डोबा मन्दिर से उपासनी महाराज मस्जिद द्वारकामाई में अपने गुरुदेव से मिलने गये। साईं बाबा चिलम पीते थे, उन्होंने उपासनी महाराज को चिलम पीने का आदेश दिया और पूछा कि क्या तुम्हारे पास मन्दिर में कोई जाता है? महाराज ने कहा—'नहीं' 'अच्छा, तो मैं एक दिन आऊंगा क्या तुम मुझे चिलम पिलाओगे?' साईं ने कहा। उपासनी महाराज मन्दिर में चले गये। उन्होंने भोजन बनाया और थाली में रखकर अपने गुरुदेव को समर्पित करने के लिए द्वारकामाई की ओर चल पड़े। मन्दिर के निकट एक काला कुत्ता था। उपासनी महाराज ने सोचा कि पहले गुरुदेव को भोजन दे आऊं, उसके बाद कुत्ते को खिला दूंगा। वे इसी उलझन में थे कि कुत्ता अदृश्य हो गया।

बाबा ने कहा, 'तुम धूप में क्यों आगये? मैं तो मन्दिर के सामने ही प्रतीक्षा करता था।' उपासनी को कुत्ते का स्मरण हो आया और वे पश्चाताप करने लगे। बाबा ने समाधान किया—'मैं कुत्ते के वेष में तुम्हारी परीक्षा ले रहा था।'

दूसरे दिन उपासनी महाराज ने मसजिद में बाबा के पास भोजन ले जाते समय मन्दिर के निकट एक शूद्र भिखारी को देखा पर पहचान न सके कि साईं बाबा परीक्षा के लिए खड़े हैं। बाबा ने कहा—'शूद्र के वेष में मैं तो तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। घट-घट में एक ही परमात्मा का निवास है।'

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने दूसरे शरीर द्वारा तूफान से रक्षा की

एक दिन लोकनाथ ब्रह्मचारी भक्तों के मध्य अपने आश्रम में बैठे थे। सहसा वे अपने हाथ फैलाकर कह उठे—'आ हा हा, ठहरो ठहरो।' और उसके बाद मौन हो गये। वहाँ बैठा कोई व्यक्ति इस बात के रहस्य को न समझ सका।

इस घटना के कुछ समय बाद ढाका के वकील विहारी लाल मुखोपाध्याय ब्रह्मचारी के पास आये। चरण वन्दना कर जब वे बैठ गये तो ब्रह्मचारी जी ने उनसे पूछा—'क्यों जी ? कुछ दिन पूर्व तुमने मुझे स्मरण किया था ?'

'हाँ महाराज ! बहुत दिनों से आपके दर्शन नहीं हुए थे। इसलिए चरणों के दर्शन की इच्छा थी।' वकील महाशय बोले।

'अरे नहीं, समुद्र मार्ग पर स्मरण करने की बात मैं कर रहा हूँ।' ब्रह्मचारी जी ने याद दिलाया।

'ओह उस दिन।' वकील साहब घटना का स्मरण कर सिहर उठे। उस समय वे स्टीमर से यात्रा कर रहे थे कि सहसा तूफान आ गया। सभी यात्री बहुत अधिक डर गये थे। प्राणभय से भयभीत होकर वकील साहब ने गुरुदेव का स्मरण किया था। तब अकस्मात् ही वह तूफान शान्त हो गया था। इसी समय तो गुरुदेव स्टीमर में प्रकट हुए थे। कुछ और यात्रियों ने भी उनके दर्शन किये थे। सारी घटना स्मरण कर तथा गुरुदेव की करुणा देखकर वकील साहब भक्ति-भावित हृदय से ब्रह्मचारी जी के चरणों में गिर पड़े।

—※—

भँवर से नाव बचायी

एक बार योगी श्री नागा महाराज कुछ भक्तों के साथ जाजामऊ नामक स्थान में गंगा किनारे भोजन कर रहे थे। सहसा उन्होंने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'बच गया।' भक्तों ने जब बाबा के कथन का रहस्य जानना चाहा तो बाबा ने बताया कि मेरा अमुक-भक्त संगम के भँवर में नाव पर फँस गया। वह अब बच गया है तथा उसकी नाव भँवर से निकल गयी है।

जब वह भक्त वापस आये तो उन्होंने बताया कि जब उनकी नाव भँवर में फँसी तो उसने सच्चे हृदय से नागा महाराज का स्मरण किया था। उसके बाद उसे ऐसा अनुभव हुआ कि किसी ने नाव को धक्का देकर भँवर से बाहर निकाल दिया हो। भक्त ने इसे नागा महाराज का ही कृत्य समझा था। जब गाँव आकर उसने सुना कि बाबा ने उसी समय 'बच गया।' कहा था तो उसके विश्वास में कोई कमी न रही। आनन्द पूरित हृदय से उसने बारम्बार बाबा को प्रणाम किया।

—*—

योगी ने सूक्ष्म शरीर द्वारा बालक की रक्षा की

आसाम के गणमान्य व्यक्ति अमरनाथराय स्वामी भोलानन्दगिरि के शिष्य थे। एक बार उनके पुत्र को दुःसाध्य रोग हो गया। डाक्टरों ने रोग की असाध्यता घोषित कर दी और कहा कि अब यह नहीं बच सकता। अन्त में अमरनाथ ने स्वामी जी को तार देकर पुत्र की हालत की सूचना दी। स्वामी जी ने हरिद्वार से तार द्वारा ही उत्तर भिजवाया—'डरने की कोई बात नहीं है। यथासम्भव नाम-जप और दान करो।'

आश्चर्य! उसी रात्रि से बालक भला चंगा हो गया। उसने बताया—कि स्वामी जी उसके पास आये थे। खाट के निकट खड़े होकर उन्होंने कमण्डलु से उसके ऊपर जल छिड़का था। उसी से बालक ने आरोग्य लाभ किया बालक ने कहा—'मैंने स्वामी जी को अपनी आँखों से देखा। वही मुझे अच्छा कर गये हैं।

अमरनाथराय ने हरिद्वार आकर स्वामी जी की कृपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
आदर-पूर्वक बखान किया। स्वामी जी हंसकर बोले—'मैं तो इन सबके सामने हरिद्वार में ही था, कहीं गया नहीं था, अवश्य ही यह परमपिता का कृत्य है। खैर! जब मैंने ही बालक को ठीक किया है, तो मेरी फ़ीस की मद में, साधु-सेवा की मद में, अधिक चावल भेज दो।'

—:※:—

सर्व व्यापक योगी

एक दिन हरपालपुर के स्टेशन मास्टर ने एक चोर को स्वामी हरिहर बाबा के सुपुर्द किया। चोर ने आपसे प्रार्थना की, 'महाराज! यदि आज्ञा हो तो मैं एक बार अपने बच्चों को सँभाल आऊँ।' इन्होंने कहा कि यदि गाड़ी आने तक तुम वापस लौटकर आ सको तो भले ही चले जाओ। चोर की नीयत खराब थी, वह जंगल की तरफ भागा। इधर यह बात स्टेशन मास्टर को मालूम हुई तो उसने कहा, 'आपने चोर को छोड़ दिया, अब वह वापस क्यों आयेगा? उसकी जगह अब आपको जेल की हवा खानी पड़ेगी।' सचमुच ही चोर गाड़ी आने से पहले आगया है। पूछने पर मालूम हुआ कि यद्यपि उसके भागने के लिए जंगल का रास्ता चुना था, परन्तु उसे यह दिखाई दिया कि हरिहर बाबा डंडा लिये हुए मेरे पीछे ही आ रहे हैं।'

एक बार महोबा के सब-ओवरसियर किसी अपराध पर छः महीने मुअत्तिल रहे। उन्होंने हरिहर बाबा के पास जाकर अपनी करुणा-गाथा सुनायी। महाराज जी के आशीर्वाद से एक मास बाद ही पहले वाली नौकरी छः महीनों के वेतन के साथ मिल गयी। उस ओवरसियर ने छहों महीनों का वेतन स्वामी जी को अर्पित कर दिया जिससे महोबा स्टेशन के पास एक कुँआ खुदवाया गया। बाबा जी ने अपने हाथ से एक वट वृक्ष की डाल काटकर लगा दी जो आज एक बड़े भारी पेड़ के रूप में वहीं कुंए के पास स्थित है।

—:※:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी विशुद्धानन्द की सर्वज्ञता

महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथ कविराज जब पहले-पहल परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द के पास गये तो उन्होंने कविराज जी को पहचान कर आशीर्वाद दिया तथा संकेत से उन्हें बता दिया कि वे उन्हें अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करेंगे। उसके बाद उन्होंने कविराज जी से पूछा कि 'अब तुम्हारे हृदय की अवस्था कैसी है ?' कविराज जी स्वामी जी के इस प्रश्न को सुनकर दंग रह गये। उन्हें कुछ दिन पूर्व हृदय में कुछ कष्ट हो गया। उस समय वे एम० ए० के छात्र थे। कष्ट के कारण वे परीक्षा न दे सके थे। यह घटना सन् १९१२ की है। उसके बाद कुछ विशिष्ट चिकित्सकों ने उनकी चिकित्सा की थी। चिकित्सा के पश्चात् भी उन्हें वायु-परिवर्तन के उद्देश्य से भिन्न-भिन्न स्थानों में भ्रमण करना पड़ा था। कविराज जी के परिवार-जनों के अतिरिक्त इसके विषय में किसी को जानकारी नहीं थी। स्वामी जी से उन्होंने इसका जिक्र ही नहीं किया था। स्वामी जी के उक्त प्रश्न करने पर कविराज जी समझ गये कि उनके गुरुदेव सर्वज्ञ हैं तथा जागतिक परिचय न रहने पर भी वे उन्हें दीर्घकाल से जानते हैं।

—※—

आनन्दमयी माँ की उपस्थिति सभी लोकों में पाई गई

एक बार आनन्दमयी माँ काशी पधारीं। कविराज जी ने केदार से माँ की भेंट करायी। केदार ने आनन्दमयी माँ को बताया कि मैं विभिन्न लोकों में भ्रमण करता हूँ। आप भी मेरे साथ चलिए। माँ ने हँसकर कहा—'केदार ! हमें शरीर छोड़कर कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। तुम जहाँ भी जाकर मेरा स्मरण करोगे, वहीं मैं आ जाऊँगी और तुमसे बातचीत करूँगी। मैं सर्वत्र हूँ। आने-जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन कविराज जी को केदार ने माँ का अद्भुत ऐश्वर्य सुनाया। वे कई लोकों में उस रात गये थे। हर जगह उन्हें आनन्दमयी माँ मिलीं और उनसे बातचीत भी की थी।

—:※:—

अन्तर्यामी माँ

एक बार श्यामदास बाबा जी जगन्नाथपुरी में स्वर्ग द्वार पर बाबा हरिदास जी के मठ में रहते थे। एक दिन इनके मन में माता आनन्दमयी के दर्शन की तीव्र आकांक्षा जाग्रत हुई। धीरे-धीरे यह इच्छा इतनी बलवती हो गयी कि बाबा का पुरी में रहना कठिन हो गया। बाबा माता जी से भेंट करने के लिए जाने को तत्पर हो गये। उन दिनों माता आनन्दमयी देहरादून में रह रहीं थीं। बाबा श्यामदास देहरादून ही जाने को निकल पड़े। जैसे ही वे मठ के बाहर निकले तो चकित रह गये। देखा कि सामने आनन्दमयी मां एक दो सेवकों के साथ उपस्थित हैं। इस सम्बन्ध में ज्ञातव्य बात यह है कि बाबा व आनन्दमयी माँ का लौकिक दृष्टि से कोई परिचय नहीं था। वस्तुतः बाबा के हार्दिक आकर्षण से माँ देहरादून से पुरी आयीं थीं और ठीक उसी स्थान पर पहुँची, जहाँ बाबा रहते थे।

—※—

काल पर नियन्त्रण करने वाला योगी

एक बार योगप्रकाश ब्रह्मचारी गुरु की खोज में आबू पर्वत पर पहुँचे। एक गुफा में उन्होंने एक साधु के दर्शन किये। वे उस समय समाधि में निमग्न थे। दिन भर प्रतीक्षा करने के बाद भी महात्मा ने आँखें नहीं खोलीं। दूसरे दिन प्रातःकाल महात्मा की समाधि टूटी तो ब्रह्मचारी जी ने उनसे दीक्षा देने की प्रार्थना की। महात्मा ने उन्हें सामने के झरने में स्नान करने की आज्ञा दी। जब ब्रह्मचारी जी स्नान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके आये तो महात्मा की समाधि लग चुकी थी। अब दूसरे दिन महात्मा की आँखें खुलीं तो उन्होंने ब्रह्मचारी से पूछा—'स्नान करके आया ?' ब्रह्मचारी जी बोले—'मैं तो कल ही आ गया था।' महात्मा बोले—'अरे ! कितना समय बीत गया। मुझे तो कुछ पता ही न चला।' इसके बाद महात्मा ने ब्रह्मचारी जी को दीक्षा दी। एक दिन ब्रह्मचारी जी एक माला गूँथकर ले गये और उसे महात्मा जी को पहना दिया। उसके बाद महात्मा जी समाधि में तल्लीन हो गये। दीर्घकाल के बाद जब उनकी समाधि भंग हुई तो माला के फूल ताजे फूलों के समान ही थे। वे कुम्हलाये नहीं थे। अब ब्रह्मचारी जी को इसके रहस्य का पता लगा। महात्मा जी पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। महात्मा जी के साथ ही माला पर भी काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

—:o:—

भूत-भविष्य के वक्ता-योगी

१—स्वामी नागा बाबा बिल्कुल नग्न अवस्था में विचरण करते रहते थे। यह व्यक्ति को देखते ही उसकी सारी विशेषताएँ जान लेते थे। एक बार काशी में उन्हें वेणीमाधव नामक सन्त मिले। यह प्रज्ञा-चक्षु थे। इसीलिए इन्हें लोग 'अन्धा मास्टर' कहकर पुकारते थे। नागा बाबा ने ज्यों ही इन्हें देखा त्यों ही बोले—'यह महात्मा गृहस्थ होते हुए भी जीवनमुक्त हैं। हाँ, अभी इन पर मातृ ऋण शेष है। उसका शोध होने पर पृथ्वी पर से इनका आकर्षण सदा के लिए समाप्त हो जायगा। यदि यह मातृ ऋण शोध न कर पाये तो इनकी उर्ध्वगति तो हो जायगी किन्तु आकर्षण बना रहने से पुनः जन्म लेना भी पड़ सकता है।'

कविराज जी उस समय नागा बाबा के साथ ही थे। वे बोले—'बाबा ! क्या आप इन्हें जानते हैं ?' बाबा ने हँसकर कहा—'हाँ जानता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूँ। किन्तु प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य आज ही मिला है। पहले यह यौगिक क्रियाओं के अवसर पर अप्रत्यक्ष रूप से मिलते रहते थे।'

नागा बाबा की एक विशेषता यह थी कि उन्हें किसी ने भोजन करते नहीं देखा। ये एक स्थान पर नहीं रहते थे तथा प्रायः गंगा के पानी में यौगिक क्रियाएँ करते थे।

२—जब स्वामी कालीनाथ सेवाश्रम में रहते थे तो एक मद्रासी ब्रह्मचारी बाबा की शरण में आये और बहुत समय तक सेवा करते रहे। वस्तुतः वे इस सेवा के बदले बाबा की अलौकिक विद्या सीखना चाहते थे। कई बार उन्होंने बाबा से इस सम्बन्ध में प्रार्थना भी की थी। किन्तु बाबा तैयार न हुए थे। एक दिन बाबा ने ब्रह्मचारी जी की थाह लेने के विचार से पूछा—'बेटा, तुम माता-पिता से झगड़ा करके तो नहीं आये हो। तुम घर से क्यों चले आये।' ब्रह्मचारी नवयुवक थे, अंग्रेजी पढ़े लिखे थे। इस प्रश्न से मानहानि समझ नाराज हो गये और बोले—'महाराज! मेरी घरेलू बातों से आपको क्या लेना-देना? मेरा काम आपकी सेवा करना है, वह मैं कर रहा हूँ। घर पर मेरा किससे क्या सम्बन्ध है, यह जानने की आपको क्या आवश्यकता है।' स्वामी जी ने ब्रह्मचारी जी को क्रोधित देखकर स्नेहपूर्ण शब्दों में समझाया—'बेटा तुम अभी बच्चे हो। साधारण सी बातों में चिढ़ जाते हो। माता-पिता से सम्बन्ध बताने में क्या लज्जा है? यदि तुम नहीं बताना चाहते, तो मैं बताए देता हूँ।' यह कहकर बाबा ने ब्रह्मचारी जी के घर का सारा हाल कह सुनाया। बाबा की सर्वज्ञता देख ब्रह्मचारी नतमस्तक हो गये और उन्होंने विद्या सीखने में शीघ्रता का आग्रह छोड़ दिया।

—:※:—

योगी की सच्ची भविष्य-वाणियां

पूना में माली बाबा नाम के एक सन्त था। गुरु की कृपा से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें दूरदर्शन की विभूति प्राप्त थी। उनके शिष्यों में अनेक उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे जिनमें सबसे अधिक उल्लेखनीय जी० एस० खापर्डे थे। स्वर्गीय रावसाहब एस० वी० परवर्धन उनके शिष्यों में से एक थे। एक बार रावसाहब का तबादला अदन को हो गया। उन्होंने माली बाबा को तबादले के विषय में जब बताया तो बाबा ने कहा कि तुम्हें जाना नहीं पड़ेगा। परवर्धन को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सारा सामान स्टेशन भेज दिया और बाबा के दर्शन करने आये। तब भी बाबा ने यही कहा कि जाना नहीं पड़ेगा। रावसाहब परवर्धन जब घर लौटकर आये तो उन्हें एक तार मिला जिसमें उनके तबादले को निरस्त कर दिया गया था। कुछ वर्षों बाद उन्हें पुनः अदन जाने का आदेश मिला। माली बाबा ने कहा कि इस बार जाना ही पड़ेगा। यहाँ तक कि उन्होंने उस मकान का क्रमांक तथा अन्य विवरण भी बता दिया जिसमें रावसाहब को रहना था। अदन जाने पर उन्हें उक्त कथन की सत्यता का पूरा प्रमाण मिला।

—oo—

योगियों की मृत्यु सम्बन्धी भविष्य-वाणियाँ सत्य निकलीं

१—डॉ० नारायणचन्द्र कलकत्ता के एक पशु चिकित्सक थे। वे विचारों से घोर नास्तिक थे तथा अपना जीवन भौतिक ऐश्वर्य में लीन रहकर बिताते थे। उनके पुत्र सन्तोष तथा मुकुन्द घोष में बड़ी मित्रता थी। एक दिन डाक्टर साहब ने मुकुन्द के गुरू श्री मुक्तेश्वर गिरि से मिलने की आकांक्षा व्यक्त की। गुरू जी से भेंट के समय डाक्टर साहब व गुरू जी में संक्षिप्त वार्तालाप मात्र हुआ। जब डाक्टर साहब मुक्तेश्वर के पास से चले गये तो गुरुदेव ने मुकुन्द से कहा कि इनकी मृत्यु निकट है। इससे मुकुन्द को बहुत पीड़ा हुई और सन्तोष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कष्ट का स्मरण करके मुकुन्द ने प्रार्थना की कि हे गुरुदेव ! सन्तोष को तो आशा है कि उसके पिता नास्तिकता त्याग देंगे। डाक्टर साहब की मृत्यु से उसे बहुत दुःख होगा। आप किसी प्रकार डाक्टर साहब को बचा लीजिए।

कुछ देर मौन रहने के बाद गुरुदेव बोले—'मुकुन्द यों यह व्यक्ति इस योग्य नहीं है, किन्तु तुम्हारी प्रार्थना पर इसे कुछ समय के लिए बचाया जा सकता है। इसे मधुमेह की बीमारी है। दो सप्ताह में यह खाट पर पड़ा रहेगा। छह सप्ताह बाद इसकी मृत्यु निश्चित है। फलित ज्योतिष सम्बन्धी एक कड़ा धारण करने से उस दिन मृत्यु टल जायगी। उसके बाद अगर यह मांसादि का सेवन न करे तो जीवित रह सकेगा अन्यथा छः महीने बाद इसकी मृत्यु हो जायगी। यह व्यक्ति अपनी नास्तिकता के कारण कड़ा धारण करने में आपत्ति करेगा तथा ठीक होने के बाद मांसादि का सेवन भी नहीं छोड़ेगा।

गुरुदेव के कथनानुसार मुकुन्द ने सन्तोष से कहकर कड़ा तैयार करवा लिया किन्तु जब डाक्टर साहब से उसे धारण करने को कहा तो उन्होंने साफ मना कर दिया। दो सप्ताह बाद डाक्टर साहब बीमार पड़ गये और डाक्टरों ने जवाब दे दिया कि अब इनके बचने की कोई आशा नहीं। तब कहीं डाक्टर साहब ने कड़ा पहना। एक माह तक बीमार रहने के बाद डाक्टर साहब स्वस्थ हो गये।

अब मुकुन्द ने उन्हें परामर्श दिया कि वे मांसादि का सेवन न करें। उस समय डाक्टर साहब ने हँसकर टाल दिया किन्तु मांसादि का सेवन नही छोड़ा। सचमुच छह महीने बाद उनकी मृत्यु हो गयी।

२—हावड़ा जिले के बाली ग्राम के निवासी शिवराम किंकर महाशय सुप्रसिद्ध चिकित्सक थे। वे योग में भी गति रखते थे तथा उस क्षेत्र में योगत्रयानन्द नाम से विख्यात थे। एक बार कलकत्ता के प्रसिद्ध सर्जन डॉ० सुरेशप्रसाद के पिता किसी भीषण रोग से ग्रस्त हो गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलकत्ते के बड़े से बड़े डाक्टर से उनकी चिकित्सा करायी गयी। बाहर के कुछ प्रसिद्ध डाक्टरों को बुलाया गया। किन्तु उनकी हालत निरन्तर गिरती चली गयी। लगभग तीन महीने बाद वे मरणासन्न हो गये।

पिता की इस सोचनीय स्थिति को देखकर डा० सुरेशप्रसाद सर्वाधिकारी बहुत व्यग्र हो उठे। इसी समय किसी प्रकार उन्हें शिवराम किंकर की प्रसिद्धि का पता चला। उन्होंने तुरन्त शिवराम जी को बुलाया और अपने पिता की चिकित्सा करने को कहा। शिवराम किंकर सर्वाधिकारी जी के घर आये और रोगी की छाती पर हाथ रखकर श्वास-प्रक्रिया की परीक्षा की। इसके बाद उन्होंने सर्वाधिकारी जी से कहा—'आपके पिता के दाहिने फेफड़े में एक रुपये के बराबर आकार में छिद्र हो गया है। इस समय तो मैं इन्हें ठीक कर सकता हूँ। किन्तु अब इनकी आयु पूर्ण हो गयी है। तीन महीने पश्चात् ही इनकी मृत्यु हो जायगी। उस समय इनको कोई नहीं बचा सकता।'

शिवराम किंकर जी ने सर्वाधिकारी महाशय के पिता की चिकित्सा की। कुछ ही दिनों में वे पूर्ण स्वस्थ हो गये। किन्तु योगी द्वारा कथित बात असत्य कैसे होती? तीन महीने बाद जब डॉ० सुरेश प्रसाद के पिता वायु परिवर्तन के लिए मधुपुर गये, तभी एक दिन भ्रमण से वापस आते समय उन्हें ठोकर लगी और वहीं वे गिर पड़े। इसके साथ ही उन्हें खून की उल्टी हुई और उनका प्राणान्त हो गया।

३—एक बार पूर्व बंगाल के कई व्यक्ति स्वामी भास्करानन्दजी के दर्शन करने पधारे। कई व्यक्तियों के प्रणाम करने के बाद एक बाबू ने उन्हें प्रणाम करने के लिए जैसे ही अपने हाथ आगे बढ़ाये, त्यों ही स्वामी जी ने उन्हें रोकते हुए कहा—'तुम इस समय अपवित्र हो। तुम्हारे पिता का स्वर्गवास हो गया है। तुम शीघ्र ही घर चले जाओ।'

बाबू जी ने पहले तो विश्वास नहीं किया किन्तु फिर भी शीघ्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही अपने निवास स्थान पर आये। जब वे निवास स्थान पर पहुँचे तो देखा कि तार वाला दरवाजे के पास खड़ा है। तार शीघ्रता पूर्वक लेकर बाबू जी ने पढ़ा—लिखा था—'पिता स्वर्गवासी हो गये हैं, शीघ्र घर आओ।'

तार पढ़कर बाबू जी स्वामी जी की सर्वज्ञता पर बहुत चकित हुए तथा तुरन्त घर चले गये।

—००—

भगोड़े लड़के के लौटने की भविष्यवाणी

भारत मार्तण्ड पं० गट्टूलाल (आविर्भाव सं० १९०२ तिरोधान सं० १९५४) उस समय मथुरा में विराज रहे थे। वहां एक वृद्ध और वृद्धा ने आकर बड़े करुण भाव से पण्डित जी से प्रार्थना की, 'महाराज! हमारे एक ही पुत्र है। उसने बी० ए० पास किया है। वह कहीं चला गया है। आज उसे सत्ताईस दिन हो गये, सो कृपा करके उसके सम्बन्ध में कुछ बतलायें जिससे कुछ धीरज मिले।' दयालु पंडित जी ने कहा—'वह विदेश जाने वाला था किन्तु वापस लौट रहा है और परसों तुम्हारे पास आ जायेगा।' ऐसा ही हुआ।

—:*:—

भावी प्रश्न का उत्तर पहले ही देने वाले योगी

एक बार डॉक्टर गोपीनाथ कविराज कालीनाथ स्वामी के दर्शन करने गये। बाबा ने कुछ योग-विभूति दिखाने के विचार से कागज के कतिपय टुकड़े पर कुछ लिखा और उन्हें उलट कर तकिया के नीचे रख दिया। फिर वे कविराज से बोले—'तुम अपनी मैट्रीकुलेशन में पढ़ी कविता की पंक्ति सुनाओ।' कुछ देर सोच विचार के बाद एक कविता की एक पंक्ति सुनायी। इसके बाद बाबा ने तकिये के नीचे से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक कागज का टुकड़ा निकाला। उस पर कविता की वही पंक्ति लिखी हुई थी।

दूसरी बार बाबा ने शैक्सपियर के किसी ड्रामे से कोई पंक्ति लिखने को कहा। कविराज ने एक कागज पर एक पंक्ति लिख ली। बाबा ने दूसरा पर्चा निकाला, जिस पर वही पंक्ति लिखी थी, जो कविराज ने लिखी थी। महात्मा जी की इस योगविभूति को परखकर कविराज जी के साथी गिरधारीलाल ने बाबा से एक प्रश्न पूछना चाहा। बाबा ने उनसे पहले ही कहना शुरू कर दिया—'तुम्हारा प्रश्न मैंने नोट कर लिया है। तुम अपने भाई की मृत्यु के विषय में जानना चाहते हो। पुलिस का भय है। इसलिए उसका कारण मैं नहीं बताऊँगा।

एक बार बाबा कालीनाथ स्वामी कविराज जी के घर आये और गणित की कुछ पुस्तकें मँगायी। कविराज जी ने निकट के सनातन धर्म हाई स्कूल से गणित की आठ दस पुस्तकें मँगा लीं। अब बाबा ने इनमें से किसी भी पुस्तक के किसी भी पृष्ठ का कोई भी प्रश्न हल करवाइये। कविराज जी ने झारखण्डी जी जो उनके एक मित्र थे, से एक प्रश्न हल करवाया। प्रश्न हल हो जाने के बाद बाबा ने पूर्व लिखित पर्चों में से अकस्मात ही एक पर्चा उठाया। उस पर वही उत्तर अंकित था जो झारखण्डी जी ने निकाला था।

जब बाबा से इस शक्ति का रहस्य पूछा गया तो उन्होंने बताया—'इसके जाँचने के दो रास्ते हैं। एक है—समीकरण अर्थात् जागतिक शक्तियों के परस्पर संघट्ट का स्वरूप ज्ञान और दूसरा है दिव्य अर्थात् तीव्र दृष्टि। प्रथम उपाय कदाचित कभी भ्रम-युक्त भी हो सकता है किन्तु दूसरे उपाय में कोई भ्रम नहीं।

—*—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना पूछे प्रश्नों के उत्तर दिये गये

एक बार डॉ० गोपीनाथ कविराज के पुत्र जितेन्द्रनाथ कविराज कालीनाथ स्वामी से भेंट करने गये। परिचय होने पर स्वामी जी ने आदर पूर्वक बैठाया। जितेन्द्रनाथ स्वामी जी से कुछ प्रश्न पूछने गये। ज्यों ही बाबा से उन्होंने प्रश्न करना चाहा, वैसे ही बाबा ने उन्हें रोक दिया और कहने लगे—'इस समय तुम्हारी नौकरी नहीं लगेगी। कुछ देर है।' इसके बाद जितेन्द्रनाथ ने दूसरा प्रश्न पूछना चाहा। इस बार भी बाबा ने उन्हें रोक दिया और बोले—'इस बार अब कोई चिन्ता नहीं। तुम्हारे गुरूजी उस पर निरन्तर दृष्टि रखे हुए हैं।'

जितेन्द्र आश्चर्य चकित हो बाबा की ओर देख रहे थे। उन्हें अपने प्रश्न बिना बताये ही उत्तर मिल गया था। वस्तुतः पिछले वर्ष जितेन्द्र का पुत्र काल कवलित हो गया था। इस वर्ष उनकी पत्नी पुनः गर्भ धारण किये थी। इस नवीन प्रसव के सम्बन्ध में ही जितेन्द्र का दूसरा प्रश्न था।

—※—

योगी गुरू की अलौकिक सूक्ष्म दृष्टि

महाराज सन्तदास एक बार भुवनेश्वर में कुछ दिन रुके थे। वहाँ एक दिन उनके शिष्य निर्मल मित्र अपने अन्य गुरु भाइयों के साथ गुरुदेव के दर्शनार्थ आ रहे। मार्ग में भुवनेश्वर के मन्दिर के सामने कुछ साधु बैठे भगवच्चर्चा कर रहे थे। निर्मल बाबू सहित सभी शिष्यों ने साधुओं को देखा और हाथ जोड़कर प्रणाम कर चलते बने।

जब यह शिष्य मण्डली गुरुदेव के पास पहुँची तो एक साथ गुरुदेव कह उठे—'क्यों जी, अभी आप लोग यही सीखे हो। साधु सन्यासियों को प्रणाम करना भी नहीं आता। साधु सन्यासियों को साष्टांग प्रणाम करना चाहिए। भविष्य में ऐसी गलती न हो।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी शिष्य विस्मित हो गये। तो क्या गुरुदेव की दृष्टि सदैव हमारे साथ रहती है जो हमारे कृत्यों को परखती रहती है। सब ने गुरुदेव से इस भूल के लिए क्षमा याचना की।

योगी किसी भी घटना की जानकारी क्षण भर में करने की क्षमता रखता है।

बाबू तारा किशोर बाबा रामदास के शिष्य थे और कलकत्ता में रहते थे। एक बार वे ज्वराक्रान्त हो गये। रोग अधिक बढ़ जाने पर ताराकिशोर को गुरूजी की याद आयी। वे सोचने लगे—'बाबा को गाँजा अच्छा लगता है। क्यों न गाँजा का भोग लगाकर प्रसादी चिलम पी जाय। निश्चय ही इससे लाभ होगा।'

तुरन्त वह बाजार जाकर गांजा ले आये। बाबा को भोग लगाया गया और फिर प्रसादी चिलम तारा किशोर जी पीने लगे। कुछ ही समय में वे बिलकुल स्वस्थ हो गये।

कुछ समय बाद वे वृन्दावन गुरुदेव के आश्रम में आये। बाबा ने उन्हें देखकर गाँजा मंगाया और चिलम पीने लगे। कुछ देर बाद वही चिलम तारा किशोर की ओर बढ़ाकर बोले—'लो इस बार तुम इस प्रसादी चिलम को पियो।'

पास बैठे लोग जानते थे कि तारा किशोर गाँजा नहीं पीते। अतः साश्चर्य बाबा की ओर देखने लगे। बाबा ने कहा—'आप लोगों को आश्चर्य क्यों हो रहा है। यह ज्वर-पीड़ित होने पर मेरा भोग लगा कर चिलम पीते हैं और ज्वर से मुक्त हो जाते हैं।'

गुरुदेव की सर्वज्ञता को जानकर ताराकिशोर बाबू बड़े चकित एवं प्रभावित हुए बिना न रह सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना देखे लेखक का मनोभाव जाना

काशी में एक तरणीकान्त ठाकुर नाम के अलौकिक शक्ति-सम्पन्न महात्मा रहते थे। एक दिन इन्होंने कविराज जी को बुलाया और बोले—'तुम अपनी इच्छानुसार कागज के चार टुकड़ों पर कुछ लिख लो फिर उन्हें मुटठी में रखे हुए मेरे पास आओ।' कविराज जी उनकी आज्ञानुसार कागज के चार टुकड़ों पर कुछ लिखकर ले गये और कागज को इस प्रकार मुट्ठी में बन्द कर लिया कि लौकिक दृष्टि से कुछ भी दिखाई न पड़े।

ठाकुर महाशय ने उन चारों टुकड़ों पर लिखा हुआ बिना स्पर्श किए या देखे बता दिया।

—०—

मनोदशा का स्पष्ट अध्ययन

एक बार एक जमींदार तारापीठ में पूजा करने आये। खूब धूमधाम से पूजा की और जप करने के लिए समीप ही बहती हुई द्वारका नदी के जल में उतरे।

जमींदार जप कर ही रहे थे कि बाबा वामाक्षेपा उधर आ निकले। जमींदार को जप करते देख वे हँसने लगे और नदी का जल उनके ऊपर फेंकना प्रारम्भ कर दिया। इसमें जमींदार क्रोधित हो गये।

जमींदार को क्रोधित देख क्षेपा ने कहा—'तारामाई के यहाँ झूठा जप नहीं चलता। तारामाई का जप कर रहे हो और म्यूर कम्पनी के जूते पहनने की बात सोच रहे हो।'

जमींदार बहुत लज्जित हुए और बार बार बाबा से क्षमा मांगने लगे।

—०—

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर दर्शन और दूर श्रवण

अन्ना साहब परवर्धन विधि, औषधि और अभियान्त्रिकी में ग्रेज्युएट थे। उनकी माताजी के बारे में प्रसिद्ध है कि १८५७ के स्वाधीनता समर के दौरान वह प्रतिदिन अपने घर पर ही सारा हाल बताती जाती थीं जिसकी पुष्टि अगले दिन समाचार पत्र से होती थी। परवर्धन आलन्दी के श्री नरसिंह सरस्वती के शिष्य थे। दूसरे शिष्य दाण्डेकर पूना से सैकड़ों मील दूर रहते थे। परवर्धन ने एक वार संस्कृत स्तोत्र की पुस्तक खरीदी। उसमें बहुत गलतियां थीं। नित्य प्रार्थना के लिए उनके पास शुद्ध प्रति नहीं थी। इसी बीच श्री नरसिंह सरस्वती स्वप्न में प्रकट हुए और दामोल में दाण्डेकर को स्पष्ट शब्दों में बोल बोल कर उन्होंने संशोधन कराये।

श्रुति लेख लिखा कर सरस्वती जी ने आदेश दिया कि पूना जाओ और शुद्ध प्रति परिवर्धन को दो। दाण्डेकर पूना पहुँचे और शुद्ध प्रतिलिपि श्री परवर्धन को समर्पित की।

—०—

भावी दुर्घटना से बचाया

अयोध्या के राजा प्रताप नारायणसिंह स्वामी भास्करानन्द के प्रिय शिष्य थे। एक वार वे स्वामी जी के दर्शनार्थ बनारस आये। कुछ समय बाद उन्हें एक तार मिला जिसमें उन्हें किसी आवश्यक कार्य से तुरन्त अयोध्या बुलाया गया था। राजा ने दूसरी ट्रेन से अयोध्या जाने का निश्चय कर लिया, किन्तु जब भास्करानन्द जी को राजा के इस निश्चय का पता चला तो उन्होंने साफ मना कर दिया। जब राजा ने अयोध्या जाने के लिए बार-बार अनुमति चाही तो स्वामी जी ने बड़ी कठिनाई से उस दिन जाने की अनुमति दी, किन्तु जिस ट्रेन से जाने का निश्चय किया था, उससे जाने के लिए फिर भी मना किया। अन्ततः उसके बाद जाने वाली ट्रेन से अयोध्या जाना तय हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब महाराज स्टेशन पहुंचे तो एक समाचार प्राप्त कर दंग रह गये। जिस गाड़ी से जाने का उन्होंने पहले निश्चय किया था। मार्ग में वह ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थी, जिसमें अपार जन हानि हुई। सैकड़ों लोग घायल हो गये।

राजा प्रताप नारायण सिंह ने दुर्घटना से बचाने के लिए योगीकर को बार बार प्रणाम किया।

—०—

अतिथियों के आने की सूचना पहले ही देदी गई।

एक दिन लोकनाथ ब्रह्मचारी बिल्व वृक्ष के नीचे बैठे थे। सहसा वे समीप ही बैठे कामिनी नाग से बोले—'कामिनी, देखो तो विजय आ रहा है।' कामिनी ने आश्चर्य से इधर-उधर देख कर कहा—'कहां, ? महाराज !' लोकनाथ ने ध्यान द्वारा देखकर बताया कि वह नौका द्वारा अमुक पथ पर आ रहा है। कुछ ही देर बाद विजय कृष्ण गोस्वामी कतिपय भक्तों के साथ आ पधारे।

जैसे ही विजय कृष्ण आश्रम में प्रविष्ट हुए लोकनाथ के प्रफुल्लित नेत्रों से तेजोराशि निकली और विजय कृष्ण के शरीर में प्रविष्ट हो गई। महापुरुष के शक्ति संचालन से गोस्वामी महाशय का शरीर कांपने लगा और वे ब्रह्मचारी जी के चरण कमलों में गिर पड़े।

—०—

दूरवर्ती विषय का ज्ञान

एक बार पंडित गट्टूलाल जूनागढ़ में थे। अपने पीछे ठाकुर जी की सेवा का कार्य मुखिया जी को सौंप गये थे। इसी बीच कोई उत्सव हुआ जिसमें ठाकुरजी को कण्ठी पहनाई जाती है। मुखिया उस दिन यह भूल गये। जब पण्डित जी जूनागढ़ से बम्बई लौटे तो आपने मुखिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
जी को उपालम्भ दिया कि अमुक उत्सव के दिन अमुक कण्ठी आपने ठाकुरजी को क्यों नहीं पधरायी ?

मुखियाजी ने अपनी भूल स्वीकार कर क्षमा याचना की।

—०—

बाबा ने अंतरंग रहस्य बताया।

एक बार डा० गोपीनाथ कविराज ने मेहरे बाबा के दर्शन किए। कुछ देर वार्तालाप करने के बाद कविराज जी ने पूछा-'मेरे विषय में आप क्या समझते हैं।' बाबा ने उत्तर दिया—'आपके विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है। महानिशा में जो आप करते हैं उसे करते रहिए।'

कविराज जी बाबा के इस उत्तर से आश्चर्य चकित रह गये। महानिशा में वे क्या करते हैं, इसकी जानकारी तो आज तक किसी को भी नहीं है। बाबा इसे कैसे जान गये। कुछ देर बाद बाबा ने कहा—'मेरा तुमसे गहरा सम्बन्ध है। धीरे-धीरे इसे तुम जान जाओगे।' इसके बाद बाबा ने बहुत सी गोपनीय बातें कविराज जी को बतायीं, जिनसे उनके समक्ष बाबा का अन्तर्यामित्व स्पष्ट हो गया। तभी से कविराज के साथ बाबा का अन्तरंग सम्बन्ध बना रहा।

—:०:—

दूरदर्शी योगी

अक्कलकोटि के स्वामी जी भविष्यदर्शी थे। उनके अनुयायियों में एक सरदार थे जो अपनी पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में चिंतित थे। एक दिन स्वामी जी ने उन्हें बताया कि उनकी पुत्री का विवाह बड़ौदा राजपरिवार के खण्डेराव गायकवाड़ से होगा। आगे चलकर ऐसा ही हुआ।

दूसरी घटना का सम्बन्ध तत्कालीन पोस्टल सुपरिटेण्डेन्ट बाबा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी सादोवा से है जो अक्लकोट में महाराज जी के दर्शन करने गये थे। जब उन्होंने अपनी ड्यूटी पर लौटने के लिए बम्बई जाने की अनुमति माँगी तो स्वामी जी ने मना कर दिया। सादोवा समझ न सके और स्वामीजी के निर्देश के विपरीत चल पड़े। कुछ मील चलकर उन्होंने देखा कि बाढ़ के कारण नदी के ऊपर का पुल बह गया है और सड़क पार नहीं की जा सकती। तब उन्हें स्वामी जी के कथन का मर्म समझने में आया। चिम्मन लाल से तलवाड़ स्वामीजी के शिष्य थे। उन्होंने भी स्वामी जी की शक्तियों के अनेक अनुभव प्राप्त किये थे।

—:※:—

वेष बदलकर कोई योगी से छिप नहीं सकता।

दिल्ली में गुरु हरिकृष्ण जी देव का यश इतना फैला कि राजा जयसिंह ने भी गुरुजी की परीक्षा लेने का निर्णय किया। उसने अपनी पटरानी के साथ परामर्श किया। उसने कहा 'मैं बाँदी के वेश में बैठूँगी और सब रानियाँ अच्छे वस्त्र पहन कर बैठेंगी, यदि गुरुजी मुझे पहचान कर मेरी गोद में आ बैठेंगे तो मैं समझूँगी कि शक्तिमान् है।' राजा जब गुरु जी को बुला कर ले गया तो अपने हाथ में फूलों एक छड़ी लिए हुए गुरुजी पहुँचे। सब रानियों पर छड़ी रखते हुए उन्होंने कहा—'यह भी नहीं, यह भी नहीं।' और अन्त में उनकी छड़ी बाँदियों के बीच बैठी पटरानी पर आकर टिक गई। उसकी गोद में बैठकर गुरुजी ने कहा—'कपट का फल यह है कि तुम पटरानी से बाँदी बनीं।

राजा सब रानियों सहित गुरुजी का शिष्य बन गया। गुरुजी के वरदान से राजा के घर एक पुत्र का भी जन्म हुआ। ३० मार्च सन् १६६४ को सात वर्ष आठ महिने छब्बीस दिन की अवस्था में आपकी मृत्यु हुई।

—०—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगी पर शस्त्रों का प्रभाव नहीं हो सका

सन्त माधवदास (वि० १६०१—१६५२) को एक बार मुलतान के मुसाफिरखाने में वहाँ के सूबेदार ने भ्रम से किसी अपराध का आरोप करे सिपाहियों को उनका सिर काटने की आज्ञा दी। सिर काट लिया गया, परन्तु सन्त फिर जीवित हो गये। उन्हें बेड़ियां पहनायीं गयीं, परन्तु बेड़ियां भी एक-एक करके तीन बार टूट गयीं। यह सुनकर सूबेदार ने दरबार में उन्हें उपस्थित करने की आज्ञा दी। सन्त दरबार में उपस्थित किये गये। जल्लाद ज्यों ही मारने दौड़े, उनकी तलवारें दूर जा गिरीं। फांसी के तख्ते पर चढ़ाये जाने पर तीन बार फांसी तख्ते सहित टूट गयी। बन्दूक से मारने का प्रयत्न करने पर बन्दूक से गोलियों के बदले फलों की वर्षा होने लगी। छुरे लेकर कसाइयों के टूट पड़ने पर छुरे उनके हाथ से छूटकर दस कदम दूर जा गिरे। तोप के गोले से उड़ाने का प्रयत्न करने पर उड़ते हुए हिलाली झण्डे पर लगा और झण्डा नीचे गिर गया। अजगर की गुफा में प्रवेश कराने पर विषधर सन्त की प्रदक्षिणा करने लगा। यह सब देखकर सूबेदार सन्त के चरणों पर गिर पड़ा और किसी भी साधु-महात्मा को कभी कष्ट न देने की कसम खाई।

—०—

सिद्धदेह योगी जिनके शरीर पर से बस निकल गई

काली पद गुहराय एक सिद्ध देह महापुरुष थे। कभी-कभी इनका शरीर भी अलौकिक स्वरूप में परिवर्तित हो जाता था। एक बार वे एक सड़क पर लेटे थे। उनके शरीर के ऊपर से सवारियों से भरी बस गुजर गयी। बस चालक को काली बाबा का शरीर दिखाई ही नहीं पड़ा। न किसी यात्री ने उनका शरीर देखा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्चर्य की बात तो यह थी कि काली बाबा के शरीर ने भी उस बस का स्पर्श नहीं किया।

—※—

हजारों वर्षों की आयु वाला योगी

जब योगेश्वर रामलाल महाप्रभु के आश्रम पर रह रहे थे, तो एक दिन घूमते हुए कुछ दूर निकल गये। वहाँ गुफा में बैठे एक महात्मा के दर्शन कर वे उनके समीप गये और प्रणाम कर निकट ही बैठ गये। योगेश्वर ने उन महात्मा से पूछा कि 'आप यहाँ कब से विराजमान हैं।' तो उन महात्मा ने बताया कि 'हम ५०० वर्ष से यहाँ रहते हैं।' उन महात्मा के भ्रूपटल अधरों तक लटके हुए थे।

महाप्रभु जी के सम्बन्ध में पूछने पर उन्होंने बताया 'ये हमारे दादा गुरु देव हैं। हमें नहीं मालूम कि वे कब से समाधिस्थ हैं। हां, हमारे सद्गुरु देव ने मेरे यहाँ आने के समय बताया था कि वे पांच सौ वर्ष से महाप्रभु को ऐसे ही देखते चले आ रहे हैं।'

यह सुनकर योगेश्वर रामलाल बहुत प्रभावित हुए और मन ही मन कई बार महाप्रभु को प्रणाम किया।

—०—

१५०० वर्ष की अवस्था के योगी

एक बार परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द ने अपने गुरु-आश्रम के विषय में अपने शिष्यों को बताया। गुरुदेव ने कहा--'यह गुप्त योगाश्रम तिब्बत में है। यहाँ योग की शिक्षा दी जाती है। मैं यहां एक अलौकिक घटना के घटित होने पर पहुँचा था।

एक बार एक पागल कुत्ते ने मुझे काट लिया था। इसके कुत्ते के काटे कई व्यक्ति पहले मर चुके थे। अतः अपनी मृत्यु की सम्भावना से डर कर मैंने पहले ही आत्महत्या के विचार से हुगली नदी में डूबने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का निश्चय किया। जब मैं हुगली नदी के किनारे पहुँचा तो एक महात्मा गंगा में स्नान कर रहे थे। स्नान करके वे महापुरुष बाहर आये और मेरे निश्चय को समझ कर पूछने लगे–'क्या तुम डूबने आये हो?' मैंने अपना वृतान्त सुनाया और कहा कि मेरा आत्महत्या कर लेना ही उचित है। महात्मा ने मेरे शरीर को स्पर्श करते हुए कहा–'घर जाओ, तुम्हें पेशाब होगा, इसके साथ ही सारा विष बह कर निकल जायगा।' महात्मा के स्पर्श-मात्र से ही मेरा शरीर शीतल पड़ गया। अतः मैंने उन्हें अद्भुत योगी समझकर उनके चरण पकड़ लिये और कहा–'आपने मेरा जीवन बचाया है। अब परमार्थ का मार्ग भी आप ही बताइये।' वे महात्मा बोले – मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ, फिर भी तुम्हारी इच्छा है तो मैं तुम्हें तुम्हारे गुरु तक पहुंचा दूँगा। पहले तुम अपनी माता से सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा ले लो।'

"मैं घर आया और सारा वृतान्त माता को कह सुनाया। कुछ दिन बाद वे महात्मा फिर मेरे पास आये और मैं माता से आज्ञा लेकर उन महात्मा के साथ चल पड़ा। काश्मीर तक ट्रेन से जाने के बाद महात्मा मुझे आकाश मार्ग से अष्टभुजा ले गये। वहाँ पन्द्रह दिन रहने के बाद हम लोग ज्ञान गंज पहुंचे। ज्ञानगंज के अधिष्ठाता परमहंस भृगुरामजी थे जिनकी आयु लगभग ८०० वर्ष की थी। भृगुरामजी के गुरु महात्माजी का लौकिक शरीर नहीं है। वे समस्त योगियों के अध्यक्ष हैं और उनकी आयु १५०० वर्ष है। मुझे इन्हीं महात्मा जी से दीक्षा मिली।"

परमहंस विशुद्धानन्द जी का यह वृतान्त सुनकर सभी शिष्य आश्चर्य चकित रह गये।

—०—

अन्न जल के बिना जीवित रहने वाला योगी

एक बार श्री दौलतराय देसाई अपने एक मित्र के साथ एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अद्भुत योगी के दर्शनार्थ बम्बई में शिव नामक स्थान पर गये। श्री प्रह्लाद मगनलाल जानी नामक यह योगी माताजी श्री जय अम्बे के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये श्री अम्बा माता के भक्त हैं तथा अर्धनारी तथा अर्धपुरुष की पोशाक तथा चिह्न धारण करते हैं।

एक बार इन योगीराज को 'प्रकाश पुंज' स्वरूप अम्बा माता की मूर्ति के दर्शन हुए थे, तब से योगीराज ने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है। योगिराज के कथनानुसार उन्होंने कुछ दिन कॉफी का सेवन किया था। उसके बाद तो उन्हें अनाज की गन्ध भी अच्छी नहीं लगती।

यह जिज्ञासा प्रकट करने पर कि फिर वे किस शक्ति से जीवित हैं? क्या वे हवा का सेवन करते हैं या और कोई पदार्थ का सेवन करते हैं? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि वे इस विषय में अनभिज्ञ हैं। स्वामी जी ने कहा—'केवल इतना ही मुझे मालूम है कि मेरे मुँह में तालु के नीचे एक छिद्र है जिसमें से अमृत झरता है।'

योगिराज ने देसाई जी की अँगुली पकड़ कर वह छिद्र दिखाया भी, जिसमें से प्रवाह होता भी उन्हें प्रतीत हुआ।

योगीराज ने बताया कि वे किसी समय अपनी परीक्षा देने को तैयार हैं। वे अपने अन्न-जल छोड़ने के समय से मलमूत्र का त्याग भी नहीं करते। एक बार योगीराज को एक अस्पताल में बहत्तर घण्टे तक रखा गया, किन्तु स्वामी जी अपनी परीक्षा में सफल रहे। डाक्टरों ने यह भी बताया कि योगिराज के शरीर की शक्ति मनुष्य की साधारण शक्ति से कुछ अधिक ही है। वे मीलों बिना थकान का अनुभव किये तेजी से चल सकते हैं, पहाड़ों पर चढ़ सकते हैं और तेज दौड़ भी सकते हैं।

योगिराज ने अपनी एक और अलौकिक शक्ति का परिचय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया। योगिराज सिर्फ थोड़ी सी गुजराती जानते हैं फिर भी किसी अलौकिक शक्ति से संस्कृत के श्लोक एवं स्तोत पाठ कर लेते हैं। कभी-कभी अंग्रेजी बोलने वाले के साथ केवल अंग्रेजी में ही बातचीत करते हैं। किसी के रोगी होने पर योगिराज एक चुटकी भर कुंकुम दे देते हैं जिसके श्रद्धा पूर्वक सेवन से रोगी ठीक हो जाता है।

—**—

योगी अपनी इच्छा से कहीं से भी कोई वस्तु मँगा सकता है

परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द ने एक बार अपनी इच्छा-शक्ति का प्रदर्शन डा० गोपीनाथ कविराज व उनके दो साथियों के सामने किया। बाबा ने शिष्यों से कहा—'तुम लोग अपनी मुट्ठी बाँध कर उसमें रखने लायक किसी वस्तु की इच्छा करो।'

गुरुदेव की आज्ञा पाकर तीनों शिष्यों ने अपने-अपने हाथों की मुट्ठी बाँधी और किसी वस्तु की इच्छा करने लगे। किन्तु बाद समय बाद भी उनकी मुटी खाली थीं। बाबा ने समझाया शक्ति न होने पर केवल इच्छा से कुछ नहीं होता। इसके बाद पुनः बाबा ने मुट्ठी बँधवा कर अपने पास से शक्ति संचार किया। इस बार तीनों शिष्यों को मुटठी में इच्छित वस्तु प्राप्त हुई।

बाबा ने रहस्योद्घाटन किया—'तुम्हारी इच्छा और मेरी शक्ति मिलकर इच्छा-शक्ति में परिणित हो गयी। शक्ति होने पर ही इच्छा कार्यरूप से परिणित होती है। इसके लिए बहुत साधना की आवश्यकता है।

—**—

भोजन सामग्री अक्षय हो गई

१—टोंक अंचल में एक बार विराट् उत्सव का आयोजन किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया। इस अवसर पर दूर-दूर से साधु-सन्त एवं दर्शनार्थी पधारे। उत्सव में सभी आगन्तुकों के भोजन की व्यवस्था थी, किन्तु भीड़ अधिक हो जाने से खाद्य-सामग्री कम पड़ गयी। इस विपत्ति से प्रबन्धकों को अत्यधिक चिन्ता हुई और वे भक्त-प्रवर दादू की शरण में गये।

दादू ने उन्हें आश्वासन देते हुए अपने उपास्य को भोग लगाया और प्रार्थना की। इससे भोज्य का भण्डार एक प्रकार से अक्षय सा हो गया। उस दिन दादू की कृपा से किसी वस्तु की कमी अनुभव न की गयी।

२—स्वामी मंगलवन बड़े तपस्वी और दीर्घजीवी योगी थे। वे जयपुर की पुरानी राजधानी आमेर के पहाड़ के पीछे भूतेश्वर महादेव जी के मन्दिर में विराजते थे। जैसा बोहरा नित्य दूध का एक बर्तन भर कर स्वामी जी को दे आता था, तब आमेर में अपने तीनों भाइयों के साथ दूध बेचने जाता था। कभी-कभी भूतेश्वर महादेव जी के स्थान में रसोई भी कर दिया करता था। एक दिन उक्त देवस्थान में तीनों भाइयों के साथ जैसा बोहरा ने लगकर रसोई की। जैसा बोहरा रसोई हो चुकने पर शौचादि से निवृत होने चला गया जहाँ उसे बहुत देर लग गयी। भाई भूख से आकुल हो रहे थे इतने में एक साधु ने आकर भिक्षा माँगी। कई बार तकाजा करने पर भाइयों ने कहा—'जैसा आयेगा तब वह भिक्षा देगा क्योंकि साधु सन्तों में वही खूब धन लुटाया करता है।' जब जैसा न आया तो तीनों ने उसका भाग अलग रखकर स्वयं भोजन ग्रहण कर लिया। इन तीनों के भोजन करते ही जैसा बोहरा भी आ गया। साधु ने जैसा को भिक्षा के लिए कहा। अन्दर आकर जैसा ने देखा कि केवल मेरा भाग ही अवशिष्ट है। उसने साधु को तुरन्त अपना भाग साफी के नीचे से दे दिया। देने से पूर्व साधु ने अपनी साफी भोजन ढँकने के लिए जैसा को दे दी थी। साधु ने उससे भी भोजन पाने को कहा। जैसा ने फिर साफी के नीचे हाथ चलाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो उतना ही भोजन और निकल आया। उसने अपनी पत्तल परोस ली। साधु ने कहा कि अपने भाइयों को भी खिलाओ। इतने में कुछ साधु और आ गये। साधु के आग्रह पर जैसा ने इन महात्माओं को भी भोजन परोस दिया। सब जीमने लगे किन्तु साफी के नीचे भोजन सामग्री का अन्त नहीं हुआ। इन्हीं सन्त की कृपा से जैसा पर लक्ष्मी की अपूर्व कृपा हुई।

३—दाजी भाई जानी नामक एक महात्मा बड़ौदा के पास मंजुसर ग्राम में सं० १८८० माघ शुक्ल पचमी को आविर्भूत हुए थे। एक बार उनके गाँव में ज्ञानेश्वर नामक एक अवधूत आये। सारे ग्राम में घूमने पर भी उनको कहीं भिक्षा न मिली। वे वापस लौट रहे थे कि दाजी भाई (मोटा महाराज) की पत्नी उनको मिली और आग्रह पूर्वक उन्हें अपने घर पर भिक्षा के लिए लिवा लायीं। मोटा महाराज ने उनकी बड़ी सेवा की। अवधूत प्रसन्न होकर बोले—आप इस गाँव में सदावर्त्त आरम्भ कर दीजिए।' मोटा महाराज बोले—'मैं तो गरीब ब्राह्मण हूँ, सदावर्त कहाँ से चलाऊँ?' अवधूत ने कहा—'कोई चिन्ता मत करो, सब चलेगा।' यों कहकर अवधूत गाँव के बाहर शिवालय में चले गये। सन्त की कृपा से सदावर्त चलने लगा।

४—एक गंगानाथ आश्रम में स्वामी ब्रह्मानन्द की देखभाल में भण्डारा हो रहा था। भोजन लगभग समाप्त हो चुका था। अकस्मात् कहीं से कई सौ अतिथि आ गये। उन अतिथियों को देखकर प्रबन्धक डर गये। उन्होंने जाकर स्वामी जी से निवेदन किया। स्वामी जी ने भोजन की सामग्री के हाथ से स्पर्श किया और कहा—'कोई चिन्ता नहीं। सबको भरपूर भोजन कराओ।'

सभी अतिथियों को भरपेट भोजन कराया गया। बाद को जब भण्डार में खाद्य-सामग्री देखी गयी तो अभी भी पर्याप्त सामग्री शेष थी।

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह देखकर सभी आश्रमवासी चकित हो गये तथा स्वामी जी की महिमा का गुणगान करने लगे।

—*—

इच्छित वस्तुएँ देने वाली-अक्षय झोली

१—नौ वर्ष की आयु का बालक पीताम्बर साधु बनने की कामना से घर से निकल पड़ा। मार्ग में एक साधु का संग पकड़ कर वह गंगोनाथ में ब्रह्मानन्द महाराज के आश्रम में आया और उसने स्वामी जी से दीक्षा देने की प्रार्थना की। ब्रह्मानन्द जी महाराज बालक पीताम्बर के लक्षणों से प्रभावित हो गये और वे पीताम्बर को शिष्य बनाने के लिए उद्यत हो गये। उन्होंने बालक से कहा—'आगे श्रावणी पूर्णिमा का शुभ दिन आने वाला है, उसी दिन में तुम्हें दीक्षा दूँगा। उससे पहले तुम भिक्षा माँगकर कुछ अन्न एकत्रित करो, क्योंकि दीक्षा वाले दिन एक भण्डारा करना होगा। इसमें ग्रामवासियों एवं नर्मदा के किनारे पर्यटन करने वाले साधुओं को भोजन कराना होगा।'

ब्रह्मानन्द जी का कथन सुनकर बालक पीताम्बर के हर्ष का ठिकाना न रहा। उसने सुन रखा था कि अब तक स्वामी जी ने किसी को शिष्य नहीं बनाया है। किन्तु वह यह सोचने लगा कि स्वामी जी ने इतने बड़े भोज का आयोजन किया है। इतना प्रबन्ध वह कहाँ से कर पावेगा। स्वामी जी पीताम्बर के मनोभाव समझ गये और बोले—'प्रबन्ध की चिन्ता तुम मत करो। मेरी इस झोली को ले जाओ। जितना तुम कर सको, करो। यह झोली ऋद्धि और सिद्धि से पूर्ण है।'

सचमुच स्वामी जी की झोली अलौकिक शक्ति सम्पन्न थी। निकटवर्ती जनता में विश्वास था कि यह झोली ही वह शक्ति है, जिससे आश्रमवासियों में एवं अतिथियों के भोजन की व्यवस्था होती है। बालक पीताम्बर ने झोली कन्धे पर डाली और भिक्षा मांगना शुरू किया।

किन्तु यह क्या ? जब बालक पीताम्बर शाम को आश्रम लौटता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो भोजन की आवश्यक वस्तुओं का ढ़ेर उसे मिलता। बहुत से व्यक्ति सीधे आश्रम को ही भांति-भांति की वस्तूएं भेजने लगे। कुछ ही समय में प्रचुर सामग्री एकत्रित हो गयी।

महात्मा जी की झोली के प्रताप से निर्दिष्ट शुभ लग्न में बालक पीताम्बर को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा प्राप्त हुई और सहस्रों व्यक्तियों ने भण्डारे में भोजन पाया। अब उस बालक को बालानन्द नाम से पुकारा जाने लगा।

२—एक बार बड़ौदा की महारानी यमुनाबाई ने स्वामी ब्रह्मानन्द को अपने महल में आमंत्रित किया। स्वामी जी नव-दीक्षित ब्रह्मचारी बालानन्द को साथ लेकर वहाँ गये। मार्ग में स्वामी जी का एक भक्त मिल गया। उसने स्वामी जी की बड़ी अभ्यर्थना की और उनके झोले को साग-सब्जी से भरकर विदा किया।

जब स्वामी जी महल में पहुँचे तो यमुनाबाई हँसकर कहने लगीं—'आज तो स्वमी जी का झोला काफी भरा हुआ है। आज हमें बहुत कुछ खाने को मिलेगा।' स्वामी जी ने तुरन्त उत्तर दिया—क्यों नहीं? आप अपने पसन्द की चीज बोलें। हम आज आपको बहुत सा प्रसाद देंगे।'

यमुनाबाई ने हँसी करने के विचार से अंगूर मांगे। उन्होंने सोचा कि यह अंगूर का मौसम है नहीं, अतः अंगूर नहीं मिलेंगे और कुछ देर विनोद हो जायगा। किन्तु यह क्या आश्चर्य? स्वामी जी ने हँसते हुए अंगूर का एक गुच्छा झोले से निकाला और यमुनाबाई के हाथ पर रख दिया।

अब तो यमुनाबाई व बालानन्द ब्रह्मचारी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दोनों ने समझ लिया कि यह ऋद्धि-सिद्धि की शक्ति से युक्त स्वामी जी की झोली का प्रताप है।

—:*:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबको अपनी रुचि का भोजन दिया

एक बार स्वामी भास्करानन्द के आश्रम में कुछ अतिथि संन्यासी आ गये। स्वामी उनके साथ काफी देर तक शास्त्र चर्चा करते रहे। एकाएक स्वामी जी ने उनसे पूछा—'आप लोग कुछ पायेंगे नहीं ?'—स्वामी जी को अकस्मात् ही उन साधुओं को भोजन कराने का ध्यान आया था संन्यासियों ने उत्तर दिया - 'आप इतने लोगों को कहाँ से भोजन जुटायेंगे ?' क्यों इस पचड़े में पड़ेगें ? रहने भी दीजिए।

किन्तु स्वामी जी बोले—'अच्छा तुम लोग भोजन करने के लिए आसनों पर बैठो, अभी तुम सबको भोजन मिलेगा। अच्छा, पहले यह बताओ आप क्या क्या खायेंगे ?'

संन्यासियों ने कुछ चीजों के नाम बता दिये। अभी वे नाम बता ही रहे थे कि दो दिव्यकृति बालक अभिलाषित पदार्थों को टोकरियों में लेकर आ उपस्थित हुए। खाद्य-वस्तुएँ स्वामी जी के समीप रखकर बालक अदृश्य हो गये।

यह दृश्य देखकर संन्यासियों ने स्वामी जी की योग-शक्ति की बहुत सराहना की तथा भरपेट प्रसाद पाया।

—:※:—

अतिथि-संख्या बढ़ने पर फल कम नहीं पड़े

गोरखनाथ जी के मठ में आमों का एक बगीचा था। जिस समय गम्भीरनाथ जी आश्रम के अध्यक्ष थे, प्रति वर्ष आम की फसल प्रारम्भ होने पर भोज का आयोजन किया जाता। एक बार आयोजन के अवसर पर अकस्मात् बड़ी संख्या में अतिथि आ गये। इससे कार्य कर्ताओं को चिन्ता हुई क्योंकि फल अल्प संख्या में ही थे। उन्होंने बाबा से निवेदन किया। बाबा ने आम की सारी टोकरियों को अपनी चौकी के नीचे रखवा दिया और एक चादर से ढ़क दिया। सभी अतिथियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
एवं अभ्यागतों ने छककर फल खाये किन्तु महापुरुष की योग-विभूति के प्रभाव से फल समाप्त नहीं हुए।

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ से वावा के जीवन में घटी थीं। अनेक वार भोज के अवसर पर अतिथि आ जाते किन्तु वावा गम्भीरनाथ ध्यान निमीलित नयनों से ही भोज-सामग्री को चादर से ढ़कवा देते। सव लोगों को भर पेट भोजन प्राप्त होने के वाद भी भोजन कम नहीं होता था।

—※—

शून्य से अलभ्य वस्तुएँ प्रकट करने वाला ब्राह्मण

जव स्वामी विवेकानन्द हैदरावाद में थे, उस समय उन्हें एक ऐसे ब्राह्मण के सम्वन्ध में जानकारी मिली जो हवा में से मनचाही चीज वना देता था। वह एक संभ्रान्त व्यक्ति था। उन पर केवल एक लँगोटी थी, शेष सभी चीजें वह हटा देता था। ज्यादा शीत होने के कारण विवेकानन्द जी ने उसे शरीर ढँकने के लिए एक कम्वल दे दिया। पच्चीस लोग वैठे थे। उसने कहा—'जो चीज चाहो, उसे कागज पर लिखलो।' सभी लोगों ने ऐसे फलों के नाम लिखे जो वहाँ होते नहीं। ब्राह्मण ने सभी पर्चे ले लिए। उस कम्वल के नीचे अंगूर, नारंगी, सेव और सभी प्रकार के फल आकर उपस्थित हो गये जिसकी इच्छा हम लोगों ने लिखते समय की थी। उस व्यक्ति ने सभी लोगों से उन फलों के खाने का आग्रह किया, कुछ लोगों ने सोचा कि यह कहीं हिजॉटिज्म न हो। इसलिए खाने में हिचकने लगे। ब्राह्मण ने स्वयं खाना आरम्भ कर दिया, फिर शेष सभी खाने लगे। गुलाव के फूलों के ढेरों गुच्छे उसने उत्पन्न कर दिये जिसकी पंखुरियों पर ओस पड़ी थी।

—:※:—

औषधि का विवरण सुनते ही उसका आविर्भाव हुआ

एक वार परमहंस विशुद्धानन्द के शिष्य कामाख्या वनर्जी समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में स्नान करते समय लहर की चपेट में आ गये। उस समय वे बच तो गये, किन्तु उन्हें चोट बहुत अधिक आयी। महीनों दर्द बना रहा और फिर उसी चोट में वात की शिकायत हो गयी।

यद्यपि कामाख्या बाबू को बहुत कष्ट था तथापि वे बाबा के पास निरन्तर आते रहे। एक दिन सत्संग में कटक के आई० एम० एस० डॉक्टर साहब भी पधारे थे। बाबा ने उन्हें कामाख्या बाबू के रोग का विवरण बताया और कहा कि यह किस प्रकार दूर हो सकता है। डॉक्टर साहब ने बताया—'अभी कुछ दिन पूर्व जर्मन से इस रोग को तैलात्मक औषधि निकली है। उसे मैंने एक दो रोगियों पर प्रयुक्त भी किया। वह शत-प्रतिशत लाभ पहुँचाती है। किन्तु वह यहाँ उपलब्ध नहीं है, कलकत्ता में मिल सकती है।' इसके बाद बाबा ने उनसे उस औषधि के उपकरण पूछे। डॉक्टर उपकरण बताने में तो असमर्थ रहे, किन्तु उनके मस्तिष्क में उस औषधि का चित्र अंकित हो गया।

बाबा ने एक पत्थर की कूँड़ी मँगवाई और उसे अपने सामने रखवा लिया। इसके बाद बाबा ने कूँड़ी में अपना हाथ लटकाया। उसमें से तेल की बूँदे टपक कर कूँड़ी में गिरने लगीं। अब तो डाक्टर साहब के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह वही औषधि थी जिसे डाक्टर साहब ने व्यवहृत किया था। जब डाक्टर साहब ने इसका रहस्य पूछा तो बाबा बोले—'तुम्हारे मस्तिष्क में संस्कार रूपेण जिस वस्तु का चित्र उभरा था, उसके प्रत्यक्ष दर्शन कर मैंने उसे भौतिक रूपेण उत्पन्न कर दिया। इसे सूर्य-विज्ञान में पंचीकरण का व्यापार कहते हैं।

इसी औषधि के सेवन से कुछ ही दिनों में कामाख्या बनर्जी रोग मुक्त हो गये।

—**—

३२ वर्ष से निराहार सती

सती रूपकुंवर बाई का जन्म राजस्थान के भाकरवाला नामक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक गाँव में हुआ था। वे बचपन से ही भगवद् भक्ति में तल्लीन रहतीं और प्रभु स्मरण में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करतीं थीं। जब वे युवावस्था में पहुंचीं तो उनके मना करने पर भी माता-पिता ने उनका विवाह कर दिया। किन्तु दैव गति से सात दिन के बाद ही वे विधवा हो गयीं।

ससुराल जाकर उन्होंने अपने सारे दायित्वों का पालन करते हुए प्रभु-स्मरण का अपना नियम नहीं तोड़ा। वहाँ उन्होंने अपने जेठ के पुत्र का पुत्रवत् पालन किया। दैव-योग से वह पुत्र भी अचानक बीमार होकर मर गया। अब माता रूपकुंवर ने उसके साथ ही मर जाने का निश्चय किया तथा लोगों के काफी मना करने पर भी वे पुत्र के साथ चिता में बैठ गयीं। कुछ देर में उनका सारा शरीर झुलस गया और वे मूर्छित हो गयीं। इतने में ही किसी ने उन्हें चिता से निकाल लिया तथा उनका उपचार प्रारम्भ कर दिया। दस दिन बाद वे होश में आयीं। तब कुछ लोगों ने उन्हें कुछ पथ्य ग्रहण करने को दिया। किन्तु सती माता रूपकुंवर ने कुछ भी ग्रहण करने से इन्कार कर दिया।

यह सती माता तब से अब तक (लगभग ३२ वर्ष के समय से) बिल्कुल निराहार रह रही हैं। वे अब गांव के बाहर (बिलाड़ा, जोधपुर) एक शिव मन्दिर में रहकर तपस्या में संलग्न हैं। उनका शरीर दिव्य-कान्ति से युक्त हो गया है। उड्डीयान बन्ध (कमर का पेट से चिपक जाना) से उनके शरीर में और भी तेज आ गया है। वे साधारण व्यक्ति की तरह चलती, फिरती एवं बोलती हैं। वे प्रत्येक प्रकार की चेष्टा कर सकती हैं, हल्के कार्य कर सकती हैं। केवल कुछ खाती पीती नहीं। न खाने-पीने के कारण वे टट्टी-पेशाब के झंझट से भी मुक्त हैं।

—:*:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृतात्माओं को दीक्षा देने वाले योगी

१. सोमेश्वर चन्द्र वसु, जो कि सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे, की पत्नी अकाल में काल-कवलित हो गयीं। पत्नी की मृत्यु से वसु महोदय को भयंकर वेदना हुई और उनके हृदय में तीव्र वैराग्य उभर आया। उन्होंने सब कुछ त्याग सन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया, किन्तु वह साधारण व्यक्ति को गुरु बनाना नहीं चाहते थे। वे कहते 'जो योगी मेरी परलोक में स्थित पत्नी के साथ मुझे दीक्षा देंगे, मैं उन्हीं का शिष्य बनूँगा।' हर योगी से उनका यही निवेदन रहता, किन्तु उनकी इच्छा पूरी न हुई।

एक दिन भोलानाथ गिरि के सम्मुख यही प्रस्ताव रखा। गिरि जी तैयार हो गये। दीक्षा के दिन एकान्त कमरे में तीन आसन रखे गये। भोलानन्द गिरि और वसु महोदय अपने अपने आसनों पर बैठ गये। जैसे ही अनुष्ठान कार्य आरम्भ हुआ, तीसरे आसन पर वसु की पत्नी आ विराजीं। स्वामीजी ने पति पत्नी को साथ-साथ दीक्षा दी। अनुष्ठान की समाप्ति पर मृत पत्नी की मूर्ति अन्तर्हित हो गयी। विस्मयाविष्ट वसु महोदय अब गिरि स्वामी की सामर्थ्य एवं करुणा का बार-बार विचार कर आनन्दमग्न हो रहे थे।

२. गोरखपुर का एक भक्त बाबा गम्भीरनाथ का अनन्य सेवक था। वह बाबा से सपत्नीक दीक्षा लेना चाहता था। दुर्भाग्य से दीक्षा लेने से पूर्व ही उसकी पत्नी का देहावसान हो गया। बाद में जब उस व्यक्ति की स्वामी जी से दीक्षा लेने की तिथि निश्चित हुई तो शोकाकुल वाणी में भक्त ने बाबा से कहा— बाबा, मेरी पत्नी की आपसे दीक्षा ग्रहण करने की प्रबल अभिलाषा थी। मेरी प्रार्थना है कि आज आप उसकी इच्छा की पूर्ति करने का प्रयत्न करें।

पहले तो योगीराज तैयार न हुए किन्तु अधिक अनुनय-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने से उनका हृदय विचलित हो उठा। उन्होंने दीक्षा-अनुष्ठान के अवसर पर तीन आसन बिछाये। एक आसन पत्नी का खाली रहा। अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ वैसे ही पत्नी सशरीर प्रकट हो गयीं और दीक्षा ग्रहण करने के बाद बाबा के आदेशानुसार प्रेतात्मा वहाँ से अदृश्य हो गयी।

पत्नी की आकांक्षा तृप्त हो जाने से भक्त को बहुत सन्तुष्टि हुई और वह गुरुदेव को बार-बार प्रणाम करने लगा।

—※—

छः सप्ताह तक भूगर्भ में स्वस्थ रहने वाला योगी

एक दिन पंजाब के महाराजा रणजीतसिंह के पास एक साधु आया और उसने उनकी देखरेख में समाधि में बैठने की इच्छा प्रकट की उसने बताया कि वह छः सप्ताह तक भूमि में गड़ा रह सकता है। भारत सरकार के एक उच्च अधिकारी सर क्लावडे वोडे उस समय वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने उस योगी के इस कार्य की परीक्षा लेनी चाही इसलिए महाराजा को उस साधु का कहना मानने को राजी कर लिया।

साधु को जीवित अवस्था में एक सन्दूक में बन्द कर दिया गया। शरीर की सुरक्षा के सारे उपाय करके सन्दूक गहरा गढ्डा खोद कर जमीन में गाड़ दिया गया ऊपर से चने का पलस्तर भी चढ़ा दिया गया। महाराजा एवं क्लावडे वोडे ने वहाँ कड़े पहरे की व्यवस्था की ताकि किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश न रहे।

वह साधु ६ सप्ताह तक बन्द रहा। जब निश्चित समय पर उसे निकाला गया तो उसका शरीर निर्जीव था। समाधि में बैठने से पहले साधु ने कुछ निर्देश दिए थे। उन निर्देशों के अनुसार उसके हाथ पैर दे जकड़े हुए जोड़ों पर गरम पानी डाला गया। पीठ पर मालिस की गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले नाक और कान में जो रुई भर दी गई थी, उसे निकाल दिया गया। माथे पर आटे की गर्म फुल्टिस से सिकाई की गयी, आंख में घी लगाया गया तथा पीठ और सीने पर हल्की मालिश की गयी।

कुछ देर बाद साधु के शरीर में हरकत हुई। धीरे-धीरे वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। इससे उपस्थित सारा जनसमूह आश्चर्य चकित हो गया।

—※—

योगी ने अपनी नाभि से कमल उत्पन्न कर दिया

एक बार परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द काशी के आश्रम में बैठे थे। सत्सङ्ग चल रहा था। कविराज जी सहित चार पाँच व्यक्ति उस समय वहाँ उपस्थित थे। किसी पौराणिक विषय पर वार्ता चल रही थी। सहसा एक व्यक्ति ने कहा कि पुराणों में कुछ भ्रमात्मक बातें भी पायी जाती हैं। जैसे विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति का प्रसंग निराधार है। पहले तो नाभि में कमल ही नहीं हो सकता फिर उससे किसी पुरुष की उत्पत्ति कैसे सम्भव है ?

स्वामी जी ने उस व्यक्ति को समझाते हुए कहा—'जिस क्षेत्र में तुम्हारी गति नहीं, उसमें शंका करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। क्या तुम उसे प्रत्यक्ष देखना चाहते हो ? उस व्यक्ति ने कहा—'स्वामी जी ! मैं ही क्या, बड़े से बड़े विज्ञानविद् भी इसे मानने को तैयार नहीं हैं। प्रत्यक्ष देखने की सम्भावना मुझे तो नहीं लगती।

स्वामी जी ने पुनः कहा—'तुम, तुम्हारे विज्ञान विद् और भौतिक जगत् की इस क्षेत्र में पहुँच कहाँ है। वे इस समय सम्बन्ध में क्या जानें ? यदि तुम्हारी प्रत्यक्ष देखने की इच्छा ही है तो अवश्य देखो।'

ऐसा कहकर स्वामी जी उसी आसन पर तकिया के सहारे लेट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गये और अपना नाभि प्रदेश खोल दिया। उसके बाद वे उसे हाथ से हिलाने लगे। कुछ ही देर में नाभि स्थान गहरा व खोखला हो गया तथा धीरे-धीरे उसमें से एक डेढ़ फीट लम्बा कमलनाल प्रादुर्भूत हुआ जिसके ऊपर एक अत्यन्त सुन्दर कमल पुष्प था। उस पुष्प की गन्ध से सारा कमरा सुगन्धित हो गया।

स्वामी जी ने बताया कि इस समय यदि सूर्य का तेज अधिक होता तो यह कमल बहुत ऊंचाई तक बढ़ सकता था। उसके बाद धीरे धीरे वह कमल स्वामी जी के नाभि प्रदेश में विलीन हो गया। सभी लोग विस्मयाविष्ट हुए उसे देखते रह गये।

—※—

सूर्य रश्मियों से नवीन सृष्टि करने वाला योगी

१—परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द सूर्य-विज्ञान के बहुत बड़े ज्ञाता थे। वे सूर्य-विज्ञान की सहायता से किसी भी पदार्थ की क्षण में उत्पत्ति कर सकते थे। एक समय कविराज जी ने स्वामीजी से इस सम्बन्ध में प्रश्न किया। स्वामीजी ने मेज पर रखी एक गन्ध माला उठायी और उसे हाथ में लेकर हिलाने लगे। कुछ ही देर में वह गुलाब में परिणित हो गया। उसके बाद स्वामी जी ने उनसे पूछा कि अब इसे किस वस्तु में परिवर्तित करूँ। कविराज जी ने जवा पुष्प के रूप में उसे देखना चाहा। स्वामी जी के कुछ देर उस गुलाब को हिलाने पर वह जवा पुष्प में परिवर्तित हो गया।

इस प्रक्रिया का रहस्य पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि सभी वस्तुओं में सबकी सत्ता विद्यमान है, परन्तु जिस वस्तु का किसी वस्तु में अधिक अंश रहता है, उसी के रूप में उसका दर्शन होता है। सूर्य रश्मियों की सहायता से इस प्रकार की वस्तुओं का निर्माण सम्भव है। यह सूर्य-विज्ञान योग विद्या से पृथक् है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२—एक बार मधुसूदन ओझा काशी आये। जब वे डा० गोपीनाथ कविराज से वार्तालाप कर रहे थे तो प्रसंग वश कविराज जी ने उन्हें बताया कि उनके गुरु स्वामी विशुद्धानन्द सूर्य की रश्मियों से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करते हैं। ओझा जी सूर्य की रश्मियों से इस प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में बहुत कुछ पढ़ तथा सुन चुके थे, किन्तु इसे प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था। स्वामी विशुद्धानन्द भी काशी में रहते थे। अतः ओझा जी ने इसे प्रत्यक्ष देखना चाहा। कविराज जी उन्हें अपने साथ गुरुदेव के पास ले गये। उस समय गुरुदेव अपने शिष्यों को सूर्य रश्मियों से वस्तु सृष्टि की प्रक्रिया समझा रहे थे। मधुसूदन की प्रार्थना पर स्वामीजी ने सहर्ष कुछ वस्तुएँ उत्पन्न कीं। कपूर, जाफरान आदि उन्होंने लेंस की सहायता से उत्पन्न कर ओझा जी को दिए।

ओझा जी इस अलौकिक सृष्टि-प्रक्रिया के देखकर बड़े प्रसन्न हुए।

३—एक बार क्वींन्स कालेज के भौतिक के प्रोफेसर अभय सान्याल ने परमहंस विशुद्धानन्द के सूर्य विज्ञान के विषय में सुना। उन्होंने कहा कि विशुद्धानन्द जी उन व्यक्तियों को ही चमत्कृत कर सकते हैं जो विज्ञान नहीं जानते। सूर्य रश्मियों से किसी भी प्रकार ठोस वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। सान्याल जी के इस कथन से स्वामी के शिष्य कविराज जी को बड़ी ग्लानि हुई। वे सान्याल जी को गुरू जी के पास ले गये। परिचय के बाद उन्होंने बाबा से कहा—'यदि आप मेरी इच्छित वस्तु मेरे सामने सूर्य रश्मि से उत्पन्न कर सकें तो हम आपके सिद्धान्त की वास्तविकता स्वीकार कर लेंगे।' बाबा ने पूछा—'क्या देखना चाहते हो?' सान्याल जी ने लाल कणाश्म पत्थर देखने की इच्छा अभिव्यक्त की।

स्वामी जी ने रुई का एक टुकड़ा मंगाया और उस पर लेंस का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश डाला। कुछ देर बाद वह लाल ग्रेनाइट पत्थर में परिवर्तित हो गया। इस पर सान्याल महोदय ने आपत्ति प्रकट की कि यह तो योग का चमत्कार है। कुछ देर में अदृश्य हो जायगा। स्वामी जी वह पत्थर उठाकर सान्याल साहब को दे दिया और कहा—'आप इसे जीवन भर अपने पास रखिए। इसमें रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं आयगा।

इसके बाद स्वामी जी ने प्रो० सान्याल के सामने ही एक फूल उठाकर उसकी प्रत्येक पंखुड़ी से एक नवीन फूल उत्पन्न कर दिया और प्रो० सान्याल से कहा—आप लोग भौतिक विज्ञान में बाहरी ढांचे के लेकर बहुमूल्य उपकरणों की सहायता से कुछ तथ्यों को खोजते हैं, और अपनी सफलता पर फूले नहीं समाते हैं, किन्तु यह नहीं जानते कि यह प्रकृति स्वयं विज्ञान है। इसमें तत्वान्वेषण - प्रक्रिया के लिए बाह्य उपादानों की आवश्यकता नहीं है। नियति अपने रहस्य अधिकारी विद्वानों के समक्ष स्वतः खोल देती रहती है।'

—०—

ज्ञानेश्वर का चबूतरा चल पड़ा

गोदावरी के तट पर पुणतांबे क्षेत्र में योगी चांगदेव का आश्रम था। उनकी अवस्था १४०० वर्ष बतायी जाती है। ज्ञानेश्वर का आगमन सुनकर चांगदेव अपने १४०० शिष्यों के साथ और एक भयङ्कर बाघ पर सवार होकर आलन्दी पहुँचे। उस समय ये चारों भाई-बहिन एक चबूतरे पर बैठे थे।

चांगदेव को बाघ पर आते देखकर ज्ञानेश्वर जी महाराज ने उस चबूतरे को ही चलने की आज्ञा दी। चबूतरे को चलता देख कर चांगदेव जी का सारा अहंकार चूर्ण-चूर्ण हो गया।

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भैंसे ने वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ किया

किसी ने ज्ञानदेव से पूछा—तुम्हारा क्या नाम है ?' उत्तर मिला—ज्ञानदेव । पास ही एक भैंसा था, उसकी ओर संकेत करके एक आदमी ने ताना कसा, यहां तो यही ज्ञानदेव है जो दिनभर ज्ञान का बोझा ढोता है । कहिए, आपभी ऐसे ही हैं ?' ज्ञानदेव ने उत्तर दिया—हां, हां । इसमें और मुझमें भेद कहां है ? उस आदमी ने भैंस की पीठ पर तीन चार चाबुक मारे और बोला—कि ये चाबुक तो तुम्हें जरूर ही लगे होंगे ।

ज्ञानदेव के शरीर पर उन सांटों के स्पष्ट निशान उभरे हुये थे । ज्ञानदेव ने भैंसा की पीठ पर हाथ रखा । हाथ रखते ही भैंसा ओम् का उच्चारण और वेद मन्त्रों का पाठ करने लगा । यही नहीं, एक दिन एक ब्राह्मण के घर श्राद्ध के अवसर पर ज्ञानेश्वर जी ने ध्यान करके पितरों को सशरीर बुला लिया और उन्हें भोजन कराया ।

—※※—

योगी ने टेढ़ी दीवाल सीधी करदी

परमहंस पानपदासजी (सं० १७६६-१८३० वि०) उन दिनों रामपुर में पधारे हुए थे । वहाँ इन्होंने गुप्त रूप से राज का काम करना शुरू कर दिया । मगर दूसरे मजदूरों ने जब इन्हें आवश्यकता से अधिक काम करते देखा तो इनसे चिढ़ने लगे । यहाँ तक कि दीवाल टेढ़ी कर मकान मालिक के यहाँ शिकायत कर दी कि यह सब इन्ही कीं करतूत है । मकान मालिक इन पर बहुत क्रुद्ध हुआ । पानपदास जी पर उसके क्रोध का कोई प्रभाव नहीं हुआ । उन्होंने टेढ़ी दीवाल पर ज्यों ही हाथ फिराया वैसे ही वह सीधी हो गयी ।

मकान मालिक को अपनी करनी पर बहुत अफसोस हुआ । उसने सन्त के चरणों पर गिर कर क्षमा माँगी और उस मकान को ही सन्त की सेवा में समर्पित कर दिया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलती ट्रेन रुक गई

लाहिड़ी महाशय की एक शिष्या थी—अभया। एक दिन वह अपने पति के साथ गुरुदेव के दर्शनार्थ कलकत्ता से काशी आ रही थी। कलकत्ता के मार्ग सदैव भीड़ से युक्त रहते ही हैं। एक तो घर से चलने में कुछ विलम्ब हो गया। दूसरे रास्ते में भीड़ भाड़ अधिक होने से घोड़ा गाड़ी समय से स्टेशन न पहुँच सकी। जब अभया की घोड़ा गाड़ी स्टेशन पहुँची तभी ट्रेन ने चलने की सीटी दी। रेल के इंजन की आवाज सुनकर अभया ने मन ही मन प्रार्थना की रेल इस समय रुक जाय जिससे मुझे गुरुदेव के दर्शन आज ही हो जावें। मुझे इस समय एक दिन की देर भी असहनीय है।

अन्तरात्मा की प्रार्थना की पुकार प्रभावशाली होती है। जब अभया ने हृदय से प्रार्थना की तो ट्रेन के चक्के घूमते रहे किन्तु ट्रेन एक इंच भी आगे नहीं बढ़ी। ड्राइवर एवं गार्ड परेशान हो गये। यात्रीगण आश्चर्य चकित हो नीचे उतर आये। किसी दैवी प्रेरणा के वशीभूत गार्ड अभया के पति के पास आया और उनसे पैसा लेकर ट्रेन की टिकट लाकर दे दिए। जब अभया पति सहित ट्रेन में बैठ गयी तभी ट्रेन चल दी।

काशी पहुँचने पर अभया ने गुरुदेव के चरण स्पर्श करने के लिए हाथ बढ़ाये तो गुरु जी ने अभया को रोकते हुये कहा—कि तुम्हें आज ऐसा कौन सा विशेष कार्य था अथवा दर्शनों की ऐसी भी क्या उत्कट अभिलाषा थी जो मुझे इतना कष्ट दिया। मुझे कलकत्ता पहुँच कर ट्रेन रोकनी पड़ी तथा गार्ड को तुम्हारा टिकट खरीदने को भेजना पड़ा।

—:※:—

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेल के ताले अपने आप टूट गये

सन्त गरीवदास (सं० १७७४—१८३५ वि० के) जीवनकाल में एक बार भीषण सूखा पड़ा। सारी जनता त्राहि त्राहि करने लगी। लोगों ने सन्त से प्रार्थना की। जनता के कष्टों को देखकर गरीवदास जी का हृदय पिघल गया। उनकी दया दृष्टि से अनावृष्टि का अन्त हो गया। जनता में उनकी मान प्रतिष्ठा इतनी अधिक वढ़ी कि उससे ऊब कर वे गाँव छोड़ने का निश्चय करने लगे तभी भारत की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर विदेशियों का भारी आक्रमण हुआ। दिल्ली के नवाव ने उन्हें आदर पूर्वक अपनी सभा में आमन्त्रित किया और उनका स्वागत सत्कार किया।

बादशाह ने उस आक्रमण को रोकने की प्रार्थना की। गरीवदास जी ने निर्भीकता के साथ कहा 'अगर तुम मद्यपान, गौ हत्या और विलास-वासना का परित्याग कर दो तो निश्चय ही आपत्ति से छुटकारा मिल जायेगा।' कुछ मन्त्रियों के वहकाने में आकर वादशाह ने सन्त को जेल में डाल दिया। दूसरे दिन जेल का ताला अपने आप खुल गया और दरवाजे भी। वादशाह ने पैरों पर गिर कर क्षमा माँगी।

—:*:—

जला हुआ कागज पूर्व रूप में परणित हो गया

डॉ० गोपीनाथ कविराज ने गुरुदेव से तरणीकान्त ठाकुर की अलौकिक सिद्धि के विषय में वताया और कहा कि वे विना देखे या स्पर्श किए कागज में लिखा हुआ पढ़ सकते हैं। गुरुदेव परमहंस विशुद्धानन्द ने कहा—'तुम अपनी डायरी का कोई पृष्ठ लेकर उस पर कुछ लिखो और उसे आग में जला दो।' कविराज जी ने वैसा ही किया। और कागज की उस भस्म को हवा में उड़ा दिया। कुछ देर वाद वावा ने तकिया के नीचे से वही पृष्ठ निकाला जिस पर मैंने लिखा था। उसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक विशेषता यह थी कि उसका उत्तर भी अलवतक से लिखा हुआ था।

कविराज जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा तथा वे यह भी न समझ सके कि इस पर उत्तर किसने लिखा है। क्योंकि गुरुदेव तो उनके सामने ही वैसे ही बैठे रहे थे।

जब कविराज जी ने इसका रहस्य पूछा तो गुरुदेव ने बताया कि कोई वस्तु वस्तुतः नष्ट नहीं होती। उसके कण बिखर जाते हैं। जिन्हें सूर्य विज्ञान द्वारा पचासों बार प्राप्त किया जा सकता है।

—※—

सिद्ध सन्त ने पानी को घी बनाया

एक बार पवहारी बाबा ने सोलह साल की समाधि ली। समाधि की सफलता से प्रोत्साहित होकर भक्त मण्डली ने एक विराट् भण्डारा किया। भण्डारों में दूर-दूर के सन्त, महात्मा और भक्त सम्मिलित हुए। भण्डारे का सारा सामान आ चका था केवल घी की कमी रह गई थी। बाबा ने भक्तों को आदेश दिया, 'गङ्गाजी से मेरे नाम पर घी उधार ले आओ।' भक्तों ने खाली कनस्तर लेकर कुटी के निकट बहने वाली गङ्गा से जल भर लिया, जल कड़ाई में पड़ते ही घी के रूप में बदल गया।

सारा सामान बन गया। थोड़ी देर में गांव वाले घी लाये, बाबा ने सारा घी गङ्गा में उड़ेलवा दिया और वह जल में रूपान्तरित हो गया।

भण्डारा समाप्त होने पर पवहारी बाबा ने सन्त महात्माओं को शाल और द्रव्य आदि दक्षिणा देकर विदा करना आरम्भ किया। बाबा एक ताख पर से सामान उठा-उठा कर देते जाते थे। स्वामी विवेकानन्द जी ने झांक कर देखा तो ताख पर कुछ न था। ऐसे सिद्ध सन्त थे पवहारी बाबा।

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नदी का जल दूध बन गया

पुण्यमयी नर्मदा नदी के तट पर प्राचीन मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम है। जहाँ कई विशिष्ट साधु तपस्या करते रहते हैं। एक बार तैलंग स्वामी भी उसी आश्रम पर पहुँच गये। उन दिनों खाकी बाबा नामक एक सिद्ध पुरुष वहाँ निवास करते थे। एक समय रात्रि के अन्तिम प्रहर में खाकी बाबा नर्मदा के तट पर साधना कर रहे थे। उन्होंने देखा कि यकायक नर्मदा का जल श्वेत दुग्ध धारा बन गया है। तथा तैलंग स्वामी अञ्जुलि में भर भर कर आनन्द मग्न हो उसका पान कर रहे हैं।

नर्मदा के इस पीयूष-तुल्य दुग्ध का पान करने की लालसा खाकी बाबा के मन में भी जागी किन्तु जैसे ही उन्होंने अपने हाथ से नर्मदा के जल को स्पर्श किया, वह जल पूर्ववत् हो गया।

अब खाकी बाबा समझ गये कि यह तैलंग स्वामी के योग का प्रभाव है। आश्रम के निवासी शेष साधुओं के साथ खाकी बाबा ने इस घटना से प्रभावित होकर तैलंग स्वामी का बहुत ही स्वागत सत्कार किया।

—:*:—

पानी के छींटे से मरुस्थल में आम ही आम उगाये

नाथ सम्प्रदाय के बाबा आमनाथ एक महायोगी थे। एक दिन उन्होंने अपने शिष्य अनवारनाथ से कहा—'बच्चा शहर में जाकर भिक्षा माँग लाओ और राज भण्डार में से आम का अचार जरूर लाना। शिष्य शहर की ओर चल पड़ा। उन दिनों नाहन में आम नहीं होते थे। राजा रईसों के लिये बड़ी दूर से कभी कभी आ जाते थे।

शिष्य ने भिक्षा करके राजभण्डार के भण्डारी के पास जाकर आम का अचार मांगा। राजा की अनुमति से तीन दिन तक अचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलता रहा। चौथे दिन जब शिष्य अचार मांगने पहुँचा तो राजा ने व्यंग्य में कहा कि गुरु जी तो आमनाथ बने फिरते हैं और चेला जी आम के लिये तरसते फिरते हैं। जाओ अचार नहीं मिलता। तुम्हारे गुरुजी अपने घर पर ही आम के पेड़ क्यों नहीं लगा लेते? शिष्य ने राजा की बात गुरुजी को ज्यों की त्यों कह सुनायी। रात के समय उन्होंने आरती करके कमण्डलु में जल भर लिया और मैदान में जाकर जल छिड़कने लगे। जहाँ भी जल की एक बूँद पड़ गयी वहीं आम के फले-फूले वृक्ष तैयार हो गये। जहाँ देखो वहाँ आम ही आम दिखाई पड़ने लगे।

प्रातः काल जब राजा घूमने निकला तो आम के सघन कुंजों को देख कर हैरान रह गया। पहले दिन की बात स्मरण आते ही वह बाबा के चरणों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगी। बाबा ने राजा को आश्वासन देकर कहा कि ये पेड़ कभी ठेके पर न दिए जांय। महाराज शमशेर प्रकाश के समय से वे वृक्ष ठेके पर दिये जाने लगे। अतः उन पर आम आने बन्द हो गये।

—※—

योगी का शरीर बाढ़ के जल में भी सुरक्षित रहा

एक बार नर्मदा की परिक्रमा करते समय योगेश्वर रामलाल ने अपने शिष्यों को एक ऐसे महात्मा के दर्शन कराये जो गुफा में दशम द्वार पर श्वास चढ़ाकर समाधिस्थ बैठे थे।

योगेश्वर कुछ दिनों को अपनी मन्डली सहित वहाँ रुक गये। इतने में नर्मदा में बाढ़ आई और गुफा द्वार से उस गुफा में भी पानी भरने लगा। देखते देखते गुफा पूरी भर गयी। यह देख हरिहरानन्द ने योगेश्वर से कहा—'गुरुवर! इतना महात्मा का शरीर बाढ़ के पानी से किस प्रकार सुरक्षित रह सकेगा।' तो योगेश्वर ने बताया—'जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्ति दशम द्वार में श्वांस रोककर समास्थि होता है, बाढ़ का जल उसके शरीर को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। यहाँ तक कि संसार की कोई शक्ति उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।'

हरिहरानन्द गोता लगाकर समाधिस्थ योगी के पास गये और योगी के शरीर को सुरक्षित देख साश्चर्य लौट आये।

—०—

बाल शंकर ने नदी की धारा मोड़ दी

आचार्य शंकर की आयु अभी सात वर्ष से कुछ ही अधिक थी। एक दिन उनकी माता विशिष्टा देवी कुल देवता केशव की पूजा करने गयीं थीं। पहले आलोयाई नदी पर स्नान करती थी तब मन्दिर में जाकर केशव की पूजा करती थी। माता पूजा की सामग्री लेकर मन्दिर की ओर गयीं। सवेरे ही घर से बाहर जाने के बाद सन्ध्या तक वे घर वापिस नहीं पहुँच सकीं। इसलिए शंकर को कुछ चिन्ता हुई। वे माता की खोज में निकल पड़े।

मन्दिर के समीप ही उन्होंने देखा कि माता मूर्च्छित हुई मार्ग में पड़ी थीं। शंकर ने बहुत देर तक उनकी सेवा की तब कहीं जाकर वे होश में आयीं। माता की कष्ट पूर्ण स्थिति देख शंकर विचारने लगे कि अब माता वृद्धावस्था के कारण चल-फिर नहीं सकतीं। अतः उन्होंने भगवान ने प्रार्थना की कि आलोयाई नदी की धारा थोड़ी मुड़ जाय तो उनकी पुजारिन माता को स्नान करने का घाट समीप ही मिल जाय।

अन्तरात्मा से की हुई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। परम-पिता ने शंकर की प्रार्थना सुन ली। आलोयाई नदी तट-भूमि को काटती-काटती शंकर के घर के समीप आ गई। इस घटना के बाद शंकर की अलौकिक शक्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो गयी।

—*—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य शंकर ने घड़े से बाढ़ रोकी

नर्मदा नदी के किनारे आचार्य शंकर के गुरु गोविन्दपाद एक गुफा में समाधि-मग्न रहते थे। एक बार नर्मदा में तीव्र बाढ़ आयी। धीरे-धीरे नर्मदा का पानी गुफा के द्वार तक पहुँचने लगा। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कुछ ही देर में गुफा जल मग्न हो जायगी। योगीराज गोविन्दपाद के सभी शिष्य व्याकुल थे। वे सब विचार करने लगे कि इस बाढ़ से किस प्रकार रक्षा की जाय। गुरु गोविन्दपाद उस समय समाधिस्थ बैठे थे। समाधि से उन्हें उठाने तक की शक्ति किसी में नहीं थी।

कुछ देर बाद शंकर ने सबको सान्त्वना प्रदान करते हुए कहा—'प्रकृति का कोई कोप गुरु जी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आत्मदर्शी योगी के साथ सहयोग किये बिना प्रकृति के पास कोई उपाय नहीं है। फिर गुरुदेव का आशीर्वाद चाहिए। इस बाढ़ को तो मैं भी रोक सकता हूँ।'

इतना कह शंकर ने मिट्टी का एक घड़ा गुफा द्वार पर रख दिया। बढ़ता हुआ सारा जल उस घड़े में समाने लगा। सब लोग आश्चर्य चकित रह गये कि जल जा कहाँ रहा है क्योंकि घड़े में तो अल्प परिमाण में ही जल दिखायी पड़ रहा है।

आचार्य शंकर ने अपने प्रताप से उसे रोक रखा था।

—:*:—

अलकनन्दा की तीव्र धारा में पैदल ही नदी को पार किया

एक समय आचार्य शंकर अलकनन्दा के किनारे ठहरे हुए थे। शंकर का प्रिय शिष्य सनन्दन किसी कार्य से नदी के पार गया हुआ था। आचार्य ने निश्चय किया कि वे आज सनन्दन की योग सामर्थ्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं गुरु-भक्ति के स्वरूप को शेष सब शिष्यों के समक्ष प्रदर्शित करेंगे।

आचार्य के इस निश्चय का कारण यह था कि उनके अन्य शिष्य सनन्दन से ईर्ष्या करते थे। आज आचार्य उस ईर्ष्या का समूलोच्छेदन करने को तत्पर थे।

आचार्य ने शिष्यों को बुलाकर गम्भीर दार्शनिक प्रसंग छेड़ दिया। सहसा आचार्य ने एक गूढ़ प्रश्न उपस्थित किया। एक एक कर सभी से उसका उत्तर चाहा, किन्तु कोई भी उत्तर देने में समर्थ नहीं हुआ। अब आचार्य बोले—'बड़े दुःख की बात है, आप लोग इस प्रश्न का उत्तर न दे सके। सनन्दन कहाँ है ? मुझे विश्वास है वह इस प्रश्न का उत्तर दे देगा।'

समीपस्थ एक शिष्य ने निवेदन किया— 'गुरुदेव, सनन्दन आवश्यक कार्य से नदी के उस पार गया है। यह देखिए वह सनन्दन आ रहा है।'

शंकर ने दूसरे तट की ओर देखा और सनन्दन को देखकर उसे शीघ्र आने का आदेश दिया। गुरुदेव की आज्ञा पालन में एक क्षण का भी विलम्ब सनन्दन को असह्य था। कुछ सोच कर वे अलकनन्दा की गम्भीर और तीव्र जलधारा में घुस पड़े, क्योंकि यदि वे पुल से आते तो समय अधिक लगता। अलकनन्दा का जल बहुत गहरा और धारा बहुत तीव्र थी। उसे पार करना बहुत कठिन था। किन्तु यह क्या ? सनन्दन एक के बाद दूसरा चरण बड़ी आसानी से जल में रखते आ रहे हैं और उनके पैरों के नीचे जल कमल विकसित होते जा रहे हैं। सब शिष्य यह अद्भुत दृश्य देखकर अचम्भे में पड़ गये।

इस पार आकर सनन्दन ने गुरुदेव को प्रणाम किया तथा आज्ञा पाकर उस गूढ़ प्रश्न की मार्मिक विवेचना प्रस्तुत कर ईर्ष्यालु शिष्यों को नतमस्तक कर दिया।

—*—

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूखी नदी में बाढ़ आई

श्री वासुदेवानन्द सरस्वती (सं० १९११—१९७१ वि०) का यह नियम था कि क्षौर कराने के बाद नदी में गोता लगाकर ही नहाते थे। एक बार गर्मी के दिन थे। चिदम्बरम् की पिनाकिनी नदी इन दिनों सूख कर पाँव बराबर हो जाती है। महाराज जी ने क्षौर कराया अब बड़ी समस्या आयी। पाँव डूबने लायक पानी में स्वामी जी खड़े हैं। अकस्मात् नदी में बाढ़ आई और छाती छाती तक पानी हो गया। स्वामी जी ने गोता लगाकर स्नान किया और कहा—

याधिमास वशाच्चैत्र्यां कृतक्षौरस्य मेलका।
स्नापनाय क्षणाद् वृद्धा साब्वी सेव्या पिनाकिनी।

आप भगवान दत्तात्रेय के अनन्य उपासक थे। कहा जाता है भगवान् दत्त के साथ आपकी रहस्यपूर्ण बातचीत होती थी।

—:*:—

सूखा कूआ जल से भर गया

श्री ज्ञानेश्वर और नामदेव की भेंट पंढरपुर में हुई। भगवान् विट्ठल की आज्ञा से वे ज्ञानेश्वर जी के साथ तीर्थ यात्रा पर निकले। लौटते समय बीकानेर से १०—१२ कोस पर कौलायत नामक स्थान पर दोनों को बड़े जोर की प्यास लगी किन्तु वहां जल कहां? बड़ी कठिनाई से उन्हें एक कुँआ मिला जो बिलकुल सूखा था। ज्ञानेश्वर ने लघिमा सिद्धि का उपयोग किया और कुँए में उतर गए। तल को भेदकर जल पिया। नामदेव ने 'विट्ठल' को पुकारा। पुकार के साथ ही सारा कुँआ पानी से भर गया और ऊपर से बहने लगा।

—*—

सूखा पौधा हराभरा हो गया

बाबा कैलाशपति बामाक्षेपा के गुरु थे। एक बार वे एक सूखे

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए तुलसी के पौधे के निकट बामा क्षेपा को ले गये और बोले—'क्षेपा, यह पौधा मृत है अथवा जीवित ?

क्षेपा ने उत्तर दिया—'बाबा, यह तो एकदम सूख गया है। यह तो मृत पौधा है।'

बाबा ने पुनः क्षेपा से कहा—'वत्स, जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं है। देखो, यह पौधा अभी जीवित हो जायगा।' यह कहकर बाबा ने अपने कमण्डलु से जल की कुछ बूँदें पौधे पर छिड़कीं और कहा—'तुलसी जीवित हो।' इन शब्दों के उच्चारण के साथ ही वह तुलसी का पौधा हरा भरा हो गया।

—※—

सूखे और अकाल में पानी बरसा

एक बार आँधी ग्राम में सूखा और अकाल पड़ा। सब ओर 'त्राहि-त्राहि' की पुकार मच गयी। उस समय भक्त दादू अपना चातुर्मास्य-अनुष्ठान इसी ग्राम में कर रहे थे। जब जनता को पीड़ा असहनीय हो गयी तो वे सब मिलकर दादू के पास गये तथा अपना दुःख कह सुनाया।

भक्त श्रेष्ठ दादू ने ध्यानस्थ हो पूर्ण भक्तिभाव से भगवत् प्रार्थना की। प्रार्थना के फलस्वरूप वहां अविलम्ब वर्षा हो गयी तथा जनता के सारे कष्ट दूर हो गये।

—※—

गोदावरी के सभी पाषाण पारस होगए

पैठण में एक ब्राह्मण रहता था। उसके पास दैवयोग से एक पारस पत्थर था। वह तीर्थ यात्रा करने जा रहा था। उसने सोचा कि महात्मा एकनाथ के एक पैसे का भी लोभ नहीं है, उनके पास पारस सुरक्षित रहेगा। उसने उनके पास पारस रख दिया। महाराज ने भगवान् के सिंहासन के नीचे उसे रखवा दिया। तीर्थयात्रा से लौटने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर उसने महाराज से पारस माँगा, सेवक उद्धव ने कहा कि भगवान् के निर्माल्य के साथ गोदावरी में बह गया होगा। ब्राह्मण को एकनाथ पर अपने मन में सन्देह हुआ। महाराज उसे अपने साथ गोदावरी तट पर ले गये। वे गोदावरी में खड़े हो गये और हाथ में छोटे-छोटे पाषाण खण्ड निकाल कर कहा—'इसमें जो तुम्हारा हो उसे ले लो।' ब्राह्मण ने देखा कि सबके सब पारस हैं। उसने एक ले लिया, शेष को सन्त एकनाथ ने नदी की धारा में बहा दिया।

—※—

जल के सब ओर हीरे की अंगूठियाँ ही अंगूठियाँ दिखाई दीं

एक बार राजा प्रताप नारायण सिंह स्वामी जी के साथ आनन्द बाग के समीप दुर्गाकुण्ड के किनारे टहल रहे थे। सहसा स्वामी जी ने राजा से हीरे की अँगूठी माँग ली और उसे जल में फेंक दिया। राजा साहब स्वामी जी के प्रताप को जानते थे, अतः उन्हें कोई विस्मय नहीं हुआ और नहीं चेहरे पर किसी प्रकार के भाव आये। वे पूर्ववत् स्वामी जी के साथ घूमते रहे।

शिष्य के शांत भाव को देख स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए तथा बोले—'तुम्हारी अंगूठी अभी मिल जायगी। सरोवर में किसी भी तरफ से अपना हाथ डालो।' राजा ने एक ओर जाकर सरोवर के जल में अपना हाथ डाला तो चकित रह गये। हीरे की अनेक अँगूठियाँ उनके हाथ में आ गयीं। उनमें से वे अपनी अंगूठी न पहचान सके।

स्वामी जी ने हँसते हुए उनकी अँगूठी उन्हें बता दी तथा शेष अपने हाथ में लेकर उसी जल में फेंक दीं।

—※—

सोने की अँगूठी बनायी

एक बार स्वामी विशुद्धानन्द के कुलगुरु के पुत्र स्वामी जी के पास काशी आये। स्वामी जी के पास वे कई दिन ठहरे। उन्होंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरु-पुत्र का यथेष्ट सत्कार किया और जब वे जाने लगे तो लोक परम्परानुसार स्वामी जी उन्हें कुछ रुपये देने लगे। यह देख गुरु-पुत्र बोले—'बाबा ! रुपया-पैसा तो हमें प्रत्येक यजमान से मिल जाता है। हम आपसे कोई ऐसी वस्तु चाहते हैं, जो कुछ समय स्थायी रूप से हमारे पास बनी रहे। मैं चाहता हूं कि आप एक ऐसी सोने की अँगूठी मँगवा दें जिस पर देवी की मूर्ति बनी हो तथा हमारा नाम भी लिखा हो।' स्वामी जी ने तुरन्त अपनी अलौकिक सृष्टि प्रक्रिया (सूर्य-विज्ञान) द्वारा ठीक उसी प्रकार की अँगूठी उत्पन्न कर दी और उसे कुल-गुरु-पुत्र को समर्पित कर दिया।

स्वामी जी की इस अलौकिक शक्ति को देखकर गुरु-पुत्र सहित समीप बैठे समीप लोग आश्चर्य-चकित हो गये। बाबा ने उनके आश्चर्य को दूर करते हुए कहा—'प्रकृति पूर्ण है। सूर्य विज्ञान की सृष्टि-प्रक्रिया द्वारा अभीप्सित वस्तु प्राप्त की जा सकती है।'

—:※:—

माँस से फूल बनाये

वीरचन्द्र महाप्रभु नित्यानन्द के पुत्र थे। वे सिद्धिसम्पन्न महापुरुष थे। एक दिन वह गौड़ देश के बादशाह के समीप गये। बादशाह ने मुसलमान रसोइये द्वारा बनवाकर खाने के लिए मांस दिया। वह उनकी परीक्षा लेना चाहता था। वीरचन्द्र को भी इसकी जानकारी थी। जिस समय थाली पर से कपड़ा हटाया गया कि वहाँ माँस नहीं है अपितु खिले हुए फूल हैं। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कुछ माँगने के लिए कहा। वीरचन्द्र ने दो बातें माँगी—एक तो यह कि मेरे जन्मस्थान खड़दा में मुसलमान देवमन्दिर और देवमूर्तियों को भ्रष्ट न करें और दूसरी यह कि राजमहल में रखा हुआ एक काले रंग का पत्थर मुझे दिया जाय। उसी पत्थर से बाद में खड़दा के प्रसिद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्यामसुन्दर की मूर्ति बनवायी गयी जिसे उनके पुत्र अच्युतानन्द ने स्थापित कराया।

—:*:—

वन्ध्या के स्तनों में दुग्ध आ गया

बारदी निवासी उषा प्रसन्न नाग की पत्नी एक नवजात शिशु को छोड़कर मर गयीं। सब लोग यह चिन्ता करने लगे कि इस शिशु को भरण पोषण अब कैसे हो। एक दिन उस शिशु को मौसी लेकर श्री लोकनाथ ब्रह्मचारी जी की शरण में आयी और शिशु के भरण-पोषण के सम्बन्ध में प्रार्थना करने लगी। लोकनाथ ब्रह्मचारी ने उससे कहा—'तुम अपने दूध से इस शिशु का पोषण करो। इसमें अधिक चिन्ता की क्या बात है।' उस महिला ने उत्तर दिया—'महात्मन्! यदि मेरे स्तनों में दूध होता तो चिन्ता की बात ही क्या थी। मेरे स्तन तो चिर शुष्क हैं क्योंकि मुझे वन्ध्या घोषित कर दिया गया है।' यह कह कर कातर हो उठी।

ब्रह्मचारी जी ने द्रवीभूत होकर प्रशान्त कण्ठ से कहा—'माँ कौन कहता है कि तुम वन्ध्या हो?' मैं तुम्हारा पुत्र हूँ, आज मुझे दुग्ध पान कराओ।' यह कहकर शिशुवत् ब्रह्मचारी जी ने उस महिला का स्तन-दुग्ध पान किया जिससे सिन्धु वासिनी नारी के वक्ष से सन्तानवती स्त्री के समान ही दुग्ध-धारा प्रवाहित हो चली। अब शिशु रक्षा का प्रबन्ध हो चुका था।

—:*:—

क्षणमात्र में तिब्बत से लेंस मँगाया

एक बार बाबा विशुद्धानन्द लेन्स की सहायता से सूर्य-विज्ञान की शिक्षा दे रहे थे। उनके चारों ओर शिष्य बैठे थे। उनमें कलकत्ते से आये हुए मित्र श्री अक्षयकुमारदत्त भी थे। उन्होंने बाबा से लेंस

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त करना चाहा। बाबा ने कहा—'अच्छा तुम्हें ज्ञानगंज से लेंस मँगा देंगे। तुम्हें जल्दी है। अच्छा, अभी लेंस मँगाये देता हूँ।' ऐसा कहकर बाबा ने हाथ ऊपर उठाकर झटका दिया। इसके साथ ही एक पार्सल उनके हाथ में आ गया। उस पर तिब्बती अक्षरों में पता लिखा था।

जब पार्सल खोला गया तो उसमें अन्य वस्तुओं के साथ लेंस भी था। बाबा ने वह लेंस दत्त महाशय को दे दिया।

—:o:—

शक्तिपात से वृद्धावस्था को यौवन में परिणित किया गया

एक बार बाबा महाप्रभु योगेश्वर रामलाल को साथ लेकर आकाश मार्ग से 'मन-महेश' पर्वत पर स्थित एक महात्मा के भण्डारे में गये। वहाँ उन महात्मा ने अपने वर्तमान शरीर को त्यागने की इच्छा प्रकट की तो महाप्रभु ने उन्हें बताया कि अभी तुम्हारा एक पुण्य और एक पाप शेष है। इसे भोगने के बाद ही तुम्हारा इस शरीर को त्यागना ठीक रहेगा। तब उन महात्मा ने भी ध्यान लगाकर देखा कि महाप्रभु का कहना सत्य है।

महात्मा ने महाप्रभु से निवेदन किया—'प्रभु इस जीर्ण शरीर से अब कैसे यह सम्भव है? इस कर्मफल-भोग को मैं कैसे पूरा करूँ?' तो महाप्रभु ने महात्मा के शरीर पर दृष्टि डाली और शक्तिपात किया। तत्क्षण उन महात्मा का शरीर युवावस्था में परिणत हो गया। इसके बाद महाप्रभु भण्डारे का प्रसाद पाकर वापस चले आये।

—※—

योगीराज भयंकर विष पोटाशियम साइनाइड से भी सुरक्षित रहे

एक बार कलकत्ता विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के प्राध्यापक डॉ० नियोगी नरसिंह स्वामी से भेंट करने मधुपुर गये। वहाँ उन्होंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अलौकिक दृश्य देखा। नरसिंह स्वामी भयंकर तेजाब ऐसे चाट रहे थे जैसे शहद खा रहे हों। उस समय तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्होंने जलते हुए अंगारे लड्डुओं की भाँति मुँह में रख लिये।

जब डॉ० नियोगी ने स्वामी जी इसका रहस्य तो उन्होंने बताया कि वे हठयोग की एक क्रिया द्वारा भयंकर विष को भी प्रभावहीन कर सकते हैं। डॉ० नियोगी ने अन्य वैज्ञानिकों के समक्ष इस शक्ति के प्रदर्शन के लिए स्वामी जी से प्रार्थना की। स्वामी जी तैयार हो गये और कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में उन्होंने अनेकों वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों के सामने अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन किया। उस समय नोबल पुरस्कार विजेता सर सी० वी० रमन भी उपस्थित थे। सबसे पहले स्वामी जी के हाथ पर तेजाब उड़ेला गया जिसे थोड़ी ही देर में स्वामी जी ने चाट लिया। उसके बाद कारबोलिक एसिड भी स्वामी जी हजम कर गये। अब स्वामी जी ने पोटाशियम सायनाइड की माँग की। यह वह भयंकर विष है जिसका स्वाद चखने के प्रयास में ही तीन प्रसिद्ध वैज्ञानिक अपनी जान गंवा बैठे थे।

विष स्वामी जी के हाथ में दिया गया। सभी लोग स्वामी जी की मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे, किन्तु स्वामी जी साधारण रूप से ही उसे खा गये। अब भी स्वामी जी की विष की माँग समाप्त नहीं हुई। इस बार उन्होंने मोटी काँच का चूर्ण खाया जो कि एक भयंकर विष है। इतने प्रकार के विष खाने के बाद भी स्वामी जी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। सभी वैज्ञानिक चकित रह गये।

यह परीक्षण वैज्ञानिकों द्वारा किया गया था जिसमें भूल की कोई गुंजाइश नहीं थी क्योंकि सारे विष परीक्षण के बाद ही स्वामी जी को दिये गये थे।

विष को प्रभावहीन करने के बारे में स्वामी जी ने बताया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे घर आते ही समाधि में लीन हो जाते हैं और जब उनकी समाधि टूटती है तब तक विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। काँच का चूर्ण वे दस्तों द्वारा अपने उदर से बाहर कर देते हैं।

स्वामी जी ने एक बार रंगून में भी अपनी इस शक्ति का प्रदर्शन किया था।

—:※:—

नाइट्रिक एसिड विष योगी का कुछ न बिगाड़ पाया

मैसूर के हठयोगी श्री राव एक बार अमेरिका भ्रमण को गये थे। वहाँ उन्होंने नाइट्रिक एसिड जैसा तेज जहर पिया था। अमेरिका में श्री राव की अद्भुत शक्ति को टेलीविजन पर प्रदर्शित किया गया था।

—:※:—

पानी का दीपक जलाया

शिरडी के साईं बाबा के पास जिस मस्जिद में वे रहते थे उसमें जलाने के लिए तैल न था। ग्रामवासियों ने देने से इनकार कर दिया। साईं बाबा ने तेल के बदले पानी से चिराग जलाया और यह देखकर शिरडी वालों का सम्पूर्ण अहंकार विगलित हो गया कि पानी का चिराग सारी रात जलता रहा। दूसरे दिन प्रातः काल मस्जिद में बड़ी भीड़ हो गयी और शिरडी वासियों ने बाबा के चरणों पर गिरकर क्षमा माँगी।

—:※:—

भीलनी के रूप में नर्मदा ने गो दुग्ध पिलाया

एक बार वालानन्द ब्रह्मचारी साधुओं के एक यात्री दल के साथ नर्मदा के किनारे के वनों से होकर जा रहे थे। सन्ध्या हो गयी थी। दिन भर चलने से सारा दल थक गया था, किन्तु जंगल के इस बीहड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदेश में कहाँ ठहरें, यह प्रश्न सभी को व्यथित कर रहा था। कहीं से कुछ उदर-पूर्ति के लिए सामग्री प्राप्त करने की आशा नहीं थी।

ऐसे समय में बालानन्द जी स्थिर चित्त में नर्मदा माई का स्मरण कर रहे थे। सहसा उन्होंने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक भील स्त्री अपनी गाय के साथ खड़ी है। बालानन्द उस स्त्री के पास गये और बोले – 'माई हम सब लोग दिन भर यात्रा करने से थक गये हैं। अब हमें भूख और प्यास भी लग रही है। इस जंगल में हमें मार्ग भी मालूम नहीं है। आज रात हम सभी इस पेड़ के नीचे विश्राम करेंगे। यदि आप किसी प्रकार कुछ खाने की चीजों का प्रबन्ध कर दें तो बहुत अच्छा हो।'

भील स्त्री ने उत्तर दिया –'आप लोग मेरी इस गाय का दूध पी लीजिए। मैं अभी दूध दुहे देती हूँ। इतना कहकर उसने दूध दुहना शुरू किया और एक एक करके सभी साधु दूध पीने लगे। कुछ ही देर में सभी साधुओं की भूख शान्त हो गयी। इसके कुछ ही देर बाद वह भील स्त्री तथा गाय अदृश्य हो गयी। साधुओं ने उसे इधर-उधर खोजने का प्रयास किया, किन्तु वह वहाँ होती तो मिलती। साधु भी दंग थे इतने अधिक साधु एक गाय के दूध से कैसे तृप्त हो सके। कुछ सोचकर बालानन्द ने सभी साधुओं को बताया कि यह भील स्त्री और कोई नहीं नर्मदा-माई थीं, जो हम पर कृपा करने इस रूप में आयी थीं।

—*—

बर्फ का चमत्कार

एक बार योगेश्वर रामलाल समाधि पर बैठे। पन्द्रह दिन बाद उन्होंने समाधि भंग की तो अपने शरीर को बर्फ में गढ़ा हुआ पाया। केवल नासिका से ऊपर का अङ्ग बचा हुआ था। उस अवस्था में वहाँ उठ पाना भी कठिन था। अब उन्होंने महाप्रभु का स्मरण किया। स्मरण करते ही महाप्रभु अपने दोनों हाथों से बर्फ इधर-उधर गिराने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे। तब रामलाल ने उठकर महाप्रभु को प्रणाम किया और आशीर्वाद पाकर गुफा में गये तो महाप्रभु को पूर्ववत् समाधिस्थ पाया। उसके बाद योगेश्वर रामलाल उसी स्थान पर पन्द्रह-पन्द्रह दिन की समाधि लगाते रहे किन्तु महाप्रभु के आशीर्वाद से वह स्थान बर्फ से बचा रहा। रामलाल के आसन के इधर-उधर चारों ओर बर्फ के ढेर पूर्ववत् बनते, किन्तु उनके आसन के निकट बर्फ नहीं पड़ती थी।

—※—

योगी ने अंग्रेज सेनापति का गर्व चूर किया

भारत के तत्कालीन प्रधान सेनापति सर विलियम लकहर्ट स्वामी भास्करानन्द जी पर बड़ी श्रद्धा रखते थे। एक बार स्वामी जी ने भारतीय योगियों पर उनके विश्वास को और अधिक दृढ़ करने के लिये अपूर्व योग विभूति का प्रदर्शन किया।

एक दिन स्वामी कुछ भक्तों के साथ आनन्द बाग में उपस्थित थे। इसी समय वहाँ सर विलियम लकहर्ट साहब पधारे। कुछ अन्य चर्चाओं के बाद सेनापति जी अपनी अफ्रीकियों पर हुई विजय का वर्णन करने लगे और अपनी वीरता भी अहंभाव पूर्वक प्रदर्शित करने लगे। सहसा स्वामी जी ने उनसे सामने पड़ी हुई पेंसिल उठा लाने को कहा। सेनापति जी उठकर पेंसिल तक गये और उसे उठाने लगे, किन्तु हजार कोशिशों के बाद भी लकहर्ट साहब पेंसिल न उठा सके। लज्जित सेनापति आकर अपने स्थान पर बैठ गये।

यह देख स्वामी जी मुस्काते हुए कहने लगे—'तुमने युद्ध में विजय पायी है। इसके लिए तुम्हें अभिमान नहीं करना चाहिए। उस परमात्मा की कृपा के बिना कभी कोई मनुष्य किसी काम को नहीं कर सकता। देखो, जिस प्रकार मैंने अभी तुम्हारी बुद्धि का हरण कर लिया है, उसी प्रकार वह परमात्मा भी तुम्हारी बुद्धि का किसी समय भी हरण कर सकता है। स्मरण रखो, जिस कौशल के साथ तुमने अफ्रीकियों को परास्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया था, वह उसी परमात्मा की देन है। उसी के ऊपर सदा भरोसा करना चाहिए।'

इस घटना से सेनापति सर विलियम लकहर्ट बहुत प्रभावित हुए तथा उनके हृदय से अभियान सदा के लिए नष्ट हो गया।

—※—

योगी के स्पर्श से मानसिक परिवर्तन हुआ

स्वामी भोलानन्द गिरि के एक परमप्रिय शिष्य के भाई शशिगुप्त साधु-संन्यासियों की शक्ति में विश्वास नहीं करते थे। उनके मन में साधुओं के प्रति न कोई भक्ति-भाव ही था, न वे उन्हें कोई महत्व देते। एक बार भाई साहब के अधिक आग्रह से उन्हें बाबा भोलानन्द के दर्शन करने कलकत्ता आना पड़ा। सायंकाल जब दर्शनार्थी उपदेश एवं प्रसाद ग्रहण कर चले गये तब स्वामी जी ने शशि गुप्त को बुलाया और बड़े ही स्नेहपूर्ण शब्दों में बात-चीत की। कुछ देर बाद स्वामी जी ने शशिगुप्त को अपने आलिंगन-पाश में बाँध लिया और बार-बार सप्रेम उनका आलिंगन करने लगे। उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली। इसी बीच एक दिव्य आलोक स्वामी जी के वदन से निकला, जिससे सारा कमरा जगमगा उठा। वह आलोक शशिगुप्त के वदन में समा गया। शशि बाबू उस आलोक को देख अत्यन्त विस्मित्य हो गये। साथ ही आनन्दित भी कम नहीं हुए। इस घटना से उनकी मनोवृत्ति बदल गयी और वे स्वामी जी से दीक्षा लेकर उनके परम-भक्त बन गये।

—※—

सूर्य के प्रचण्ड तेज से योग निर्मित बादल द्वारा संरक्षण

एक बार ढाका से कई व्यक्ति लोकनाथ ब्रह्मचारी के दर्शन करने आये। जब वे वापस जाने लगे तो उन्होंने निश्चय किया वे सभी पैदल ही जायेंगे। मध्याह्न का समय, ग्रीष्म की ऋतु, अतः सूर्य की प्रचण्ड गर्मी के कारण वे लोग हताश से हो रहे थे। ब्रह्मचारी जी ने उनकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनोदशा समझ कर कहा—'बाबा, आप लोग जाओ, सूर्य का रौद्रताप आपके पास नहीं पहुँचेगा।'

आशीर्वाद प्राप्त कर उन लोगों ने यात्रा शुरू की। जैसे ही वे आश्रम से बाहर निकले, आश्चर्यमय रूप से एक मेघ खण्ड ने सूर्य को आच्छादित कर लिया। थोड़ी दूर जाने के बाद कुछ व्यक्ति लौट आये और ब्रह्मचारी जी से पूछने लगे कि यह मेघ खण्ड कब तक उन पर छाया रखेगा। परम योगी लोकनाथ ब्रह्मचारी ने कहा कि आप सब लोगों के ढाका के उपकण्ठ दयागंज पहुँचने पर मेघ का आवरण हट जायगा और पूर्ववत् प्रचण्ड ताप वर्षण करेगा।

ठीक निर्दिष्ठ स्थान पर पहुँचने पर ही मेघ खण्ड हट गया। ब्रह्मचारी जी इस योगिक-शक्ति को देख वे लोग बड़े प्रसन्न हुए और उसी समय उस प्रचण्ड ताप में ही ब्रह्मचारी जी के आश्रम पर वापस लौट आये और ब्रह्मचारी जी के चरण कमलों में गिरकर दीक्षा देने का आगृह करने लगे। ब्रह्मचारी जी ने उनके भक्तिभाव को देख अपने सदुपदेश से लाभान्वित किया।

—※—

अभिमानी का पैर टेढ़ा होगया

एक बार योगेश्वर रामलाल के एक शिष्य से एक पहलवान ने अभिमान में आकर कहा—'तुम बड़े ताकतवर बनते हो, मेरा यह पैर मोड़ तो दो।' उस शिष्य ने शान्त स्वर में कहा—'इस पैर को मोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इसे ऐसा ही रहने दो।'

शिष्य के इतना कहते ही उसका पैर उसी प्रकार टेढ़ा एवं कड़ा हो गया। अब तो पहलवान को बड़ा कष्ट हुआ। उसने उसका बहुत इलाज कराया किन्तु पैर ठीक न हुआ। अन्त में हार कर योगेश्वर प्रभुजी के पास पहुँचा और अनेक विधि प्रार्थना करने लगा। प्रभुजी ने उसके कष्ट को जान एवं हृदय से शुद्ध समझ कर क्षमा कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
दिया और अपने उसी शिष्य का स्पर्श कराकर पैर ठीक कर दिया। उसके बाद वह पहलवान अभिमान छोड़कर आनन्दकन्द प्रभुजी का भक्त बन गया।

—※※—

योगी की निन्दा से घर में आग लगी

सन्त दन्तात्रेय आण्णा बाबा एक बार इचलकरंजी के नारायण मन्दिर में दर्शनार्थ पधारे। कुछ सज्जनों ने महाराज को खिलाने के लिए एक मालिन से कुछ पके आम माँगे और शीघ्रता से देने के लिए निवेदन किया ऐसा न हो कि सन्त चले जायँ। मालिन धन में मतवाली थी। उसने फल देना तो दूर, सन्त की ही अकारण निन्दा आरम्भ कर दी। महाराज जी मन्दिर से चल पड़े। तभी एक चमत्कार हुआ। मालिन के घर में बड़े जोर की आग लगी और उसका सारा सामान विनष्ट हो गया।

—※※—

योग से विकसित शारीरिक शक्ति के अलौकिक चमत्कार

श्री सुधाकर भीम, 'भारतीय हरकुलस' नाम से विख्यात हैं। वे एक महान् योगी हैं। एक बार उन्होंने कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रार्थना करने पर एम० एम० प्युपिल्स आन स्कूल, खार, बम्बई में अपनी योग-शक्ति का प्रदर्शन किया। सबसे पहले एक स्टील की थाली मँगायी गयी, जिसके उन्होंने एक ही क्षण में कई टुकड़े कर डाले। फिर एक मोटी लोहे की जंजीर को पीठ पर लपेट कर पैरों से बाँधा और तोड़ दिया। इस जंजीर को दो कारों से बाँधकर कारें विपरीत दिशा में चलायी गयी थीं किन्तु जंजीर टूट न सकी थी।

इसके बाद 'भारतीय हरकुलस' ने एक अलौकिक कार्य कर दिखाया। एक मोटी रस्सी सुधाकर की बाहों में लपेटी गयी और उसके दोनों किनारों को दो कारों से बाँध दिया गया, फिर कार चलाने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे प्रयत्न किये गये -- ड्राइवर बदले गये, इंजन चैक किया गया, आदि। किन्तु इंजन के पूरी गति से चलने पर भी कार आगे न बढ़ सकी।

उपस्थित जन-समूह में से कुछ व्यक्तियों ने कहा कि यह तो शारीरिक-शक्ति के विकास का परिणाम है तो योगी जी ने बताया कि कारों को इस प्रकार रोक पाना उनकी शारीरिक-शक्ति के बाहर था, वे योग और प्राणायाम के अभ्यासी रहे हैं और इसी से उन्होंने इतनी शक्ति एकत्रित की है।

अन्त में उन्होंने एक प्रदर्शन और किया। एक मोटे लकड़ी के तख्ते में छः इंच लम्बी एक मोटी कील को हाथों से इस प्रकार दबाया कि कील तख्ते में बैठती चली गयी। हथौड़े की चोट से रोकने पर कील जिस प्रकार ठोंकी जा सकती थी, उसी प्रकार वह कील उसमें ठुक गयी।

श्री सुधाकार भीम ने यह भी बताया कि इस प्रकार की शक्ति अधिक भोजन या मांसाहार का परिणाम ही हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। श्री भीम के अनुसार वे सदा शाकाहारी भोजन करते हैं तथा चार रोटी सुबह तथा चार रोटी शाम को खाते हैं। केवल योग के अभ्यास द्वारा वे इस शक्ति के धनी बने हैं। योग के प्रभाव से किसी भी रोग के कीटाणु उन्हें प्रभावित नहीं कर सकते।

—*—

गुरु ने अपनी भेंट अलौकिक रूप से ली

बड़ूथ के नवा गाँव का एक मनोहर नामक चौदह वर्ष का लड़का सन्त बलभीम के दर्शन कर उनका कुछ अनुग्रह प्राप्त करने की इच्छा से अपने साथ सन्त को भेंट देने के लिए एक धोती, कुछ केले और कुछ पैसे लेकर चला। मार्ग में अचानक उनकी धोती गुम हो गयी। उसने वापस लौटकर तमाम रास्ता छान डाला पर धोती नहीं मिली। अन्त में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निराश होकर वह खाली हाथ ही दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। उसने आकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से रास्ते की सारी घटना का वर्णन किया। सन्त बलभीम जी ने हँसते हुए अपने आसन के नीचे से एक धोती निकालकर पूछा—'भैया, तेरी धोती यही है? आश्चर्य मूढ़ मनोहर देखता रह गया कि वह उसकी धोती थी।

—※—

माँ भैरवी द्वारा चमत्कारिक दान-ग्रहण

सन् १९३१ के आस-पास मलदहिया आश्रम में नव मुण्डी आसन की प्रतिष्ठा हुई। एक समीप ही एक कमरा बनाया गया। उसकी कविराज जी के हिस्से में कमरे में फर्स के ऊपर बिछाने की चादर का खर्च डाला गया। तय किया गया कि ८०) रु० में चादर के चार बढ़िया टुकड़े मँगाकर चादर बनायी जाय। कविराज जी ८०) रु० लाये और उस कार्य के प्रबन्धक डॉ० शोभाराम को दिये। स्वामी जी को इसका पता लग गया। वे बोले—'एक चादर के लिए ८० रु० खर्च करना ठीक नहीं। बीस रु० की चादर काफी है। साठ रु० लौटा दो।'

स्वामी जी की आज्ञा पाकर डॉ० शोभाराम साठ रु० कविराज जी को लौटाने लगे, किन्तु कविराज जी ने उन्हें स्वीकार नहीं किया और कहा—'जो रुपया किसी अच्छे कार्य में मैं दे चुके, उसे अब वापस कैसे ले सकता हूँ। आप इन रुपयों को किसी धर्म कार्य में लगा दीजिए। बात स्वामी जी तक पहुँची। स्वामी जी ने भी कविराज को समझाया किन्तु वे न माने और रुपये वापस लेने को तैयार न हुए। अन्त में बाबा ने कहा—'अच्छा ठहरो। मैं ज्ञानगंज से अनुमति लेकर तुम्हें बताऊँगा कि इन रुपयों का क्या होगा।' इसके बाद अन्दर चले गये। कुछ देर बाद बाहर आकर बोले—'यह रुपया ज्ञानगंज की माँ भैरवी ने स्वीकार किया है। वे कुछ देर में तुमसे यह रुपया ले जायेंगीं। इन रुपयों को भली भाँति लिफाफे में बन्द कर दो।'

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी जी की आज्ञानुसार लिफाफे को गोंद से बन्द कर दिया। रुपये लिफाफे के अन्दर रख दिये गये। सभी लोग भजन कीर्तन में लग गये। कुछ देर बाद डॉ० गोपीनाथ कविराज को अपने हाथ में कुछ स्पन्दन का अनुभव हुआ। उसके बाद जब लिफाफा खोलकर देखा गया तो उसमें रुपये नहीं थे। लिफाफे के ऊपर हाथ की रेखाओं के चिह्न थे तथा कमल जैसी भीनी सुगन्ध आ रही थी। बाबा ने बताया कि ये रुपये माँ भैरवी ले गयी हैं।

—०—

चारों ओर शिवलिंग ही शिवलिंग दिखाई देने लगे

पंढरपुर से पचास कोस पर औंढिया नागनाथ प्रसिद्ध शिवक्षेत्र है। यहाँ विसोबा खेचर नामक सिद्धयोगी हुए हैं जो नामदेव के गुरु थे। नामदेव जब इनके पास आये तब ये अन्तर्ज्ञान से नामदेव का आना जानकर जानबूझ कर शिवलिंग पर पैर पसारे पड़े थे। नामदेव को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। विसोबा ने कहा—नामिया ! मैं बूढ़ा हो चला हूँ, पैर मुझसे उठते नहीं, तू इन्हें उठाकर ऐसी जगह रख दे जहाँ शिवलिंग न हो।' नामदेव ने पिण्डी से पैर हटाकर नीचे रखे, किन्तु वहाँ भी शिवलिंग निकल आया। नामदेव ने गुरु चरणों का आश्रय लिया और कृतकृत्य हो गये।

—※—

योगी की दिव्य कांति ज्योतिर्मय शंकर जैसी दिखाई दी

बाबा शिवराम किंकर योगत्रयानन्द की देह अत्यन्त सुन्दर और लावण्यमयी थी। वह जिस समय समाधि से उठते उस समय उनका रूप और भी उज्ज्वल होता तथा उससे चतुर्दिक प्रकाश फैल जाता था। एक दिन वह समाधि से उठे ही थे कि रसिकचन्द्र मजूमदार नामक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक कालेज का छात्र उनके दर्शन करने के लिए आया। वह आठ-दस वार आ चुका था किन्तु उसे दर्शन नहीं मिला था। वह वहुत व्याकुल हो रहा था, उसकी इच्छा थी कि एक वार भी वावा के श्री चरणों में प्रणाम निवेदित करके चला जाऊँ। वावा किसी के साथ मिलना-जुलना पसन्द नहीं करते थे। उस छात्र के वहुत अनुरोध करने पर वावा के प्रमुख शिष्य नकुलेश्वर मजूमदार द्रवीभूत हो गये किन्तु संकोचवश गुरुजी से न कह सके। वह छात्र को दरवाजे पर ले गये और कहा, 'सावधान! प्रणाम करके ही चले आना।' छात्र ने इसे स्वीकार कर लिया। वह अत्यन्त आनन्द के साथ वावा को प्रणाम करने गया किन्तु समीप जाने पर उन्हें प्रणाम नहीं कर सका। मुँह वाए अवाक् वावा की ओर ताकता खड़ा रह गया। वावा की देह की दिव्यकान्ति पर मुग्ध होकर वह चित्रलिखित मूर्ति की तरह अचल हो गया। उसके दोनों नेत्र मानो वावा के मुख कमल में लीन हो गये। वह न तो वहाँ से हिलता था, न कोई वात कहता था, ठीक मानों काठ की पुतली वना खड़ा था। वावा शायद नाराज हो जायँ, इस भय से नकुलेश्वर मजूमदार कांपने लगे और छात्र को शीघ्र वाहर चले आने के लिए नाना प्रकार से इशारा करने लगे। उस समय वावा ने मुस्कराते हुए कहा—'देखो नकुल! यह मेरे रूप पर मुग्ध हो गया है, प्रणाम नहीं कर सकता। क्योंकि प्रणाम करने से आँखें नीची हो जातीं और यह इस प्रकार नहीं देख सकता। इसी से अवाक् खड़ा है।' भक्ति से गद्गद् होकर वह वावा के चरणों में लोट गया। कुछ देर वाद उसने वाहर आकर कहा—'अहा! आज मैंने क्या देखा! मानो साक्षात् ज्योतिर्मय शंकर हों। मैंने मनुष्य के अन्दर ऐसा रूप कभी नहीं देखा।

—***—

योगियों के शरीर से दिव्य गन्ध का आविर्भाव होता है

प्राचीन भारतीय ऋषियों के सम्वन्ध में प्रसिद्ध है कि उनके

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीर से उनके ऐश्वर्य को प्रकट करने वाली दिव्य-गन्ध सदैव निःसृत होती रहती है। बीसवीं शती में भी इस प्रकार के कुछ महात्मा पाये गये जिनके शरीर इस दिव्य-गन्ध से सुवासित रहते हैं। परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द इस दिव्य गन्ध के धनी थे। वे जब अपने शिष्यों को प्रत्यक्ष दर्शन नहीं देना चाहते थे और उनके निकट जाते थे तो उनके शरीर की उपस्थिति का आभास दिव्य-गन्ध से मिलता था।

इस गन्ध के धनी श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, चैतन्य महाप्रभु आदि लोग अधिक प्रसिद्ध हैं। चैतन्य महाप्रभु के शरीर से पद्म गन्ध निस्सृत होती थी, जबकि श्रीकृष्ण के शरीर से नील-कमल, तुलसी मंजरी, मृगमद, श्वेतचन्दनादि छः द्रव्यों के सम्मिश्रण से प्रादुर्भूत अलौकिक गन्ध निकलती थी।

चैतन्य महाप्रभु के विषय में प्रसिद्ध है कि वे एक बार किसी गृहस्थ के घर ठहरे थे। उस घर की गृहिणी ने प्रगाढ़ भक्ति में निमग्न हो विविध-विधि महाप्रभु की सेवा की तथा निवेदन किया—'प्रभु ! आप तो भगवान हैं। मेरा उद्धार कर दीजिए।' महाप्रभु ने कहा—अरे ! मैं भगवान् कैसे हो गया। प्रतीत होता है कि तुझे भ्रम हो गया है।' उस स्त्री ने सानुनय पुनः कहा—भगवन् ! आप मुझसे अपने स्वरूप को छुपा नहीं सकते। आपके शरीर से जो पद्मगन्ध निकलती है तथा विद्युत शक्ति प्रवाहित हो रही है, उससे मैंने जान लिया कि आप में मेरे उद्धार की शक्ति निहित है।' अब चैतन्य महाप्रभु निरुत्तर हो गये थे। उन्होंने उस महिला को आश्वासन दिया और उसे परिवार सहित अपने सम्प्रदाय में दीक्षित कर लिया।

एक बार डॉ० गोपीनाथ कविराज ने स्वामी विशुद्धानन्द से उक्त प्रकार की दिव्य गन्ध की चर्चा की, कहा—'प्रभु ! हमारे ग्रन्थों में जो इस प्रकार की गन्ध का वर्णन मिलता है, उसे पाश्चात्य विद्वान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सही नहीं मानते। उन्होंने महात्माओं के लिए समर्पित पुष्पों की गन्ध माना है। क्या उन लोगों का कहना उचित है ?

स्वामी जी ने पूछा कि श्रीकृष्ण की गन्ध में किन-किन पदार्थों की गन्ध का सम्मिश्रण रहता है। कविराज जी ने नील-कमल, तुलसी मंजरी, मृगमद, श्वेत चन्दनादि छः पदार्थों को गिना दिया। इसके बाद स्वामी जी ने शून्य में अपना हाथ उठाया और सारे पदार्थ एकत्रित करके उनके मिश्रण से उक्त अपूर्व गन्ध तैयार कर लिया। समीप बैठे एक और व्यक्ति ने बाबा से पूछा कि 'हे प्रभो ! क्या इस गन्ध को इस भौतिक जगत् में स्थायी रूप से रखा जा सकता है ?' स्वामी जी हँसे और बोले—'क्यों नहीं ?' शीशी लाइये, अभी इसे तेल में परिवर्तित करके आपको दे देता हूँ।'

कविराज जी उठकर दो तीन छोटी-छोटी शीशियाँ ले आये। स्वामी जी ने उस गन्ध को तेल में परिवर्तित करके शीशी में भर दिया।

—:*:—

पतंजलि ने स्वप्न में महाभाष्य की शिक्षा दी

एक बार स्वामी योगत्रयानन्द को पतंजलिकृत महाभाष्य पढ़ने की इच्छा हुई। उन दिनों पण्डित गोविन्द शास्त्री पाणिनीय-व्याकरण के अच्छे विद्वान माने जाते थे। स्वामी जी ने शास्त्री से महाभाष्य पढ़ाने की प्रार्थना की। पहले तो शास्त्रीजी तैयार हो गये किन्तु बाद में किसी कारणवश उन्होंने स्वामीजी को फटकार दिया।

इससे स्वामीजी बहुत उद्विग्न हो उठे और सोचने लगे कि अब मैं क्या करूँ ? किससे पढ़ूँ ? स्वामी जी इतने चिन्तित हो गये थे कि उन्हें रात को नींद नहीं आती थी तथा हर समय सोचते ही रहते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्री जी के अभद्र व्यवहार के बाद स्वामी जी ने निश्चय कर लिया था कि 'अब किसी मनुष्य के पास ज्ञानार्जन के लिए नहीं जाऊँगा।'

एक रात स्वामी जी उक्त विषय पर ही सोचते-सोचते सो गये। लगभग दो बजे अकस्मात् उनकी आँखें खुल गयीं और उन्होंने प्रकाश से घिरे हुए जटाधारी वृद्ध महात्मा को अपने कमरे में शून्य में स्थित देखा। महात्मा ने द्रवित-भाव से शिवराम किंकर की ओर देखा और कहा—'आज तुमने भोजन नहीं किया है। मैं तुम्हारी उद्विग्नता का कारण जानता हूँ। अब तुम निश्चिन्त हो जाओ। कोई तुम्हें ज्ञान न दे तो मत दे, मैं तुम्हें तुम्हारा इच्छित ज्ञान दूँगा। अब मैं तुम्हें महाभाष्य पढ़ाऊँगा। मैंने ही उसकी रचना की है। मुझे महाभाष्य पढ़ाने में कोई कठिनाई नहीं है।'

महात्मा के इस कथन को सुनकर किंकर जी उनके पैरों में गिर पड़े। महात्मा ने उन्हें उठाया और महाभाष्य की कोई प्रति लाने की आज्ञा दी। किंकर जी शीघ्रता पूर्वक महाभाष्य की प्रति सामने रखकर उन महात्मा से पढ़ने लगे। महात्मा ने उस समय उन्हें क्या-क्या पढ़ाया, उन्हें स्मरण नहीं रहा। किन्तु कुछ पढ़ाया अवश्य था, ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ।

उस रात कुछ समय शिवराम किंकर को महाभाष्य पढ़ाने के बाद वे महा शून्य में विलीन हो गये। दूसरे दिन प्रातःकाल जब स्वामी जी ने महाभाष्य पढ़ने के लिए रखा तो उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि सारा महाभाष्य उन्हें कण्ठाग्र है।

स्वामी योगत्रयानन्द जी ने इसी प्रकार एक बार शिवरात्रि की रात्रि गौतम ऋषि से न्याय-शास्त्र भी पढ़ा था। स्वामी जी प्रायः इन महात्माओं की कृपा के विषय में अपने भक्तों को बताया करते थे।

—:*:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्तक में पारे के शिवलिंग की स्थापना

स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस की योगशक्ति और चमत्कारों का पूरा परिचय देना बहुत कठिन है। सामान्य व्यक्ति को उनके लोकातीत कार्य बिल्कुल अविश्वसनीय लग सकते हैं। स्वामी जी अपने मस्तक के भीतर शालग्राम और शिवलिंग धारण करते थे जिनके साथ ही १०८ स्फटिक मणियों की एक माला भी थी। पूजा के समय उन्हें निकाल लेते थे और पूजा कर चुकने पर उन्हें फिर पूर्ववत् रख देते थे। एक बार एक भक्त जमाये हुए पारे का शिवलिंग बाबा को दिखाने लाये। बाबा बोले—'तुम कहो तो मैं इस पारे से बने हुए शिवलिंग को निगल जाऊँ।' शिष्य घबड़ा उठा। उसे डर लगने लगा कि कहीं एक पाव पारा खा लेने से बाबा के शरीर को ही हानि न पहुँचे। किसी तरह उसके राजी होने पर स्वामीजी ने पारे के शिवलिंग को मुँह में लेकर मस्तक में स्थापित कर लिया।

बाबा जी जब गुरुद्वारा में रहते थे उस समय अपने शरीर को ठण्डा रखने के लिए जहरीले सांपों को लिपटाये रहते थे। झालदा में रहते समय बाघ उनके समीप रहे। बाघ अपना हिंसक स्वभाव भूलकर उनके समीप पालतू पशु की तरह शान्त रहते थे। कविराज गोपीनाथ जी का कथन है—'एक बार परमहंस देव ने अपने विभिन्न अङ्ग-प्रत्यङ्गों को एक दूसरे से अलग करके दिखलाया था, और आश्चर्य यह कि उसी समय वे अदृश्य रूप से शून्य में बोलते हुए शिष्यों को समझा भी रहे थे। फिर किसी अपूर्व शक्ति के प्रभाव से वे सब अलग-अलग हुए अङ्ग-प्रत्यङ्ग पुनः अपने आप ही परस्पर जुड़ गये और शरीर पूर्व परिचित आकार में प्रकट हो गया।

—※—

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देशकालातीत आश्रम

एक दिन केदार के घर एक महात्मा आये और केदार से बोले कि अमुक महात्मा तुमसे भेंट करना चाहते हैं। तुम यहाँ से किसी प्रकार बिसेसर गंज तक जाओ। वहाँ के बाद तुम्हें रास्ता स्वयं मिल जायगा। महात्मा की आज्ञा पाकर केदार साइकिल लेकर बिसेसर गंज गये। वहाँ पहुँचते ही इनके दिमाग में आकस्मिक परिवर्तन हुआ। अब वहाँ केदार को विशाल मैदान दिखायी पड़ने लगा। रास्ते में पेड़ लगे हुए थे तथा इधर-उधर खेत हैं। बीच में थोड़ी भूमि भी है। केदार साइकिल हाथ में लेकर चल दिये। कुछ देर बाद उन्हें एक आश्रम मिला। आश्रम में पहुँचते ही एक महात्मा से भेंट हुई। महात्मा जी से कुछ देर बात-चीत करके केदार अपने घर वापस चल दिये, किन्तु यह क्या ? वे उसी रास्ते से वापस लौटे थे, जिससे आश्रम गये थे। किन्तु वे वापस आते समय ग्रांड-ट्रंक रोड पर आ गये। यह स्थान बनारस से पश्चिम है केदार को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे आश्रम गये थे पूर्व दिशा की ओर से और वापस आये पश्चिम की ओर से। जबकि मार्ग उनकी दृष्टि में वही रहा।

दूसरे दिन जब केदार पुनः महात्मा जी के पास आश्रम पहुँचे तो उन्होंने महात्मा जी से उस स्थान की स्थिति के बारे में पूछा। महात्मा ने पास पड़े एक पत्थर को उठाया और कहा—'अब देखो मैं कहाँ हूँ।' केदार ने देखा कि उनके चारों ओर अनन्त शून्य है जिसमें असंख्य ग्रह-नक्षत्र घूम रहे हैं। केदार को आश्चर्य तो बहुत हुआ, किन्तु वह यह न समझ सका कि भौगोलिक दृष्टि से यह स्थान कहाँ है। महात्मा ने जब केदार को आश्चर्य चकित देखा तो कहा—'बत्स ! आश्चर्य की कोई बात नहीं। यह सिद्धाश्रम है, जहाँ भी इसे देखना चाहो वहीं इसकी स्थिति सम्भव है। यहाँ से तुम अपना घर बहुत निकट पाओगे। देखो, वह रहा तुम्हारा घर।' केदार ने जब मुड़कर देखा तो उसे घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा उसके सारे प्राणी दिखाई पड़े। यही नहीं, उनका पारस्परिक वार्तालाप भी केदार ने सुना।

उस दिन जब केदार पूर्व परिचित मार्ग से ही आश्रम से वापस आये तो वे हिन्दू विश्वविद्यालय के सामने आगये। यह काशी के दक्षिण में स्थित है। अब केदार को इस आश्रम की रहस्यमयता का ज्ञान हुआ।

—※—

योगियों के शारीरिक चित्र न खींचे जा सके

१—लाहड़ी महाशय अपना चित्र खींचा जाना पसन्द नहीं करते थे। एक बार उनके मना करने पर भी कुछ शिष्यों के साथ उनका चित्र खींचा गया, किन्तु आश्चर्य। फोटो-प्लेट पर आस-पास बैठे शिष्यों का स्पष्ट चित्र अंकित था और बीच में बैठे गुरुदेव लाहिड़ी महाशय का चित्र नहीं था। इस घटना पर सभी ने आश्चर्य व्यक्त किया तथा गंगाधार बाबू ने गुरुदेव का चित्र लेने की प्रतिज्ञा की। दूसरे दिन प्रातः काल गुरुदेव के सन्ध्योपासन-काल में गंगाधार बाबू पूरी तैयारी के साथ आये। गुरुदेव लकड़ी की बेंच पर पद्मासन में विराजमान थे, उनके पीछे कपड़े का पर्दा पड़ा था। गंगाधर बाबू ने पूरी सावधानी के साथ बारह प्लेटों पर चित्र लिये, किन्तु हर प्लेट पर केवल बेंच और पर्दे के छाया चित्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। गंगाधर बाबू का अभिमान दूर हो गया और रुदन करते हुए उन्होंने गुरुदेव की बार बार प्रार्थना की। लाहिड़ी महाशय ने प्रार्थना से द्रवित होकर कहा कि तुम्हारा कैमरा सर्वव्यापी अगोचर का चित्र लेने में असमर्थ है। मैं भी उसी का एक अंश हूँ। फिर मेरा चित्र इस कैमरे द्वारा कैसे लिया जा सकता है?

गंगाधर बाबू ने पुनः प्रणाम करते हुए गुरुदेव का चित्र लेने की उत्कट अभिलाषा व्यक्त की और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। तब कहीं गुरुदेव ने चित्र लेने की अनुमति दी और दूसरे दिन प्रातः काल अपना चित्र खिचवाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२—सन् १९२८ की दुर्गा पूजा के समय चटगाँव के शशिभूषणदास गुप्त शाहबाग आये । उनकी इच्छा माँ आनन्दमयी का दर्शन कर उनका फोटो लेने की थी । माँ उस दिन सवेरे से ही भण्डार घर में जाकर एकान्त में लेट गयीं । एक स्त्री को बाहर बैठा रखा था, उससे कह दिया था कि कोई भी भीतर मेरे पास न आये । इसी बीच ज्योतिष बाबू और शशि बाबू को साथ लेकर भोलानाथ जी वहाँ पहुँचे । माँ उस समय समाधि की दशा में थीं । शरीर के चारों ओर दिव्य-ज्योति छिटक रही थी । समाधि से उठने पर कुछ देर तक भी ज्योति रही । माँ को पकड़कर फोटो लेने के लिए ठीक जगह बैठाया गया । वे उस समय भाव की दशा में थीं और अच्छी तरह आँख भी नहीं खोल सकती थीं । शशि बाबू ने १८ प्लेट लगाये लेकिन सभी बेकार हो गये । सिर्फ एक अन्तिम प्लेट अच्छा उठा मगर उसमें माँ के पीछे ज्योतिष बाबू थे जबकि वस्तुतः फोटो खींचते समय वे माँ के पीछे नहीं थे ।

—❀—

दिव्य सहायक का दिव्य प्रकाश

एक बार बालानन्द ब्रह्मचारी देवघर के निकट एक पर्वत की गुफा में निवास कर रहे थे । एक रात जब वे अकेले थे, गुफा में ताला लगाकर नीचे के हिस्से में आसन पर बैठ गये तथा ध्यान करने लगे । रात्रि के चार बजे उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने उनका कम्बल नीचे फेंक दिया है । आंखें खोलकर जब उन्होंने देखा तो कम्बल को धूनी के नीचे पाया तथा एक आदमी उन्हें पहाड़ के ऊपर चलने का इशारा कर रहा था । ब्रह्मचारी जी चुपचाप उठे और उसके साथ चल दिये । ऊपर अपनी गुफा पर आकर उन्होंने देखा तो चकित रह गये क्योंकि वे दिन में इस गुफा में ताला लगा गये थे और अब यह गुफा खुली पड़ी थी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारी जी ने फिर भी उसे भुला दिया और उस व्यक्ति के साथ गुफा में प्रविष्ट हो गये। उस समय घुप अंधेरा था ब्रह्मचारी जी गुफा में अपनी दियासलाई टटोलने लगे। इतने में वहाँ परम उज्ज्वल स्निग्ध प्रकाश छा गया और उक्त व्यक्ति अदृश्य हो गया। यह प्रकाश इतना स्वच्छ एवं तीव्र था कि इसमें सुई तक खोजी जा सकती थी। महाराज उस दिव्य प्रकाश को देख ध्यानाविष्ट हो गये। उनका ध्यान दूसरे दिन तीसरे पहर के लगभग टूटा, जब उनके शिष्य उन्हें खोजते हुए गुफा में आये तथा उन्हें जगाया।

—:*:—

बिना नशे के ऑपरेशन कराया

एक बार रामाचरण बाबू की पीठ में फोड़ा निकला जिसको शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा ठीक किया गया। जब रामा बाबू का ऑपरेशन हुआ, तब उन्होंने नशा करने से मना कर दिया। जिस समय उनका आपरेशन हो रहा था, रामा बाबू का शरीर-मात्र वहाँ पड़ा था। उन्होंने अपनी आत्मा तो गुरु-चरणों में भेज दी थी, अपनी आत्मा तो गुरु-चरणों में भेज दी थी, अतः उन्हें शल्य क्रिया के समय होने वाला कष्ट नहीं हुआ। गुरुदेव बालानन्द ब्रह्मचारी ध्यानावस्था में इस क्रिया को देख रहे थे। अपने शिष्य की योग्यता देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए। एक पत्र द्वारा उन्होंने शिष्य को आशीर्वाद युक्त प्रशंसा लिख भेजी।

—**—

विधाता का लेख टल गया

एक बार एक युवती अपने पिता के साथ तारापीठ बाबा के दर्शनार्थ आयी। वह अपने साथ शुद्ध मन और पवित्र भाव से कुछ खीर लायी थी। क्षेपा ने बड़े प्रेम से उस खीर को खाया और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—'माँ, बहुत सुन्दर खीर है। तुम धन और पुत्रों से फलो फूलो।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षेपा के आशीर्वचन सुनकर युवती रोने लगी। पूछने पर पता चला कि युवती विधवा है। अतः उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद व्यर्थ है। कुछ सोचकर क्षेपा बोले—'माँ, रोओ मत। मेरा कहना सत्य होगा। अभी-अभी तारामाई ने मुझसे कहा कि तुम्हें एक नहीं, अनेक पुत्र होंगे।

क्षेपा का यह आशीर्वाद निष्फल नहीं गया। कुछ वर्षों बाद एक धनवान वणिक् के साथ उस युवती का विवाह हो गया और वह धन तथा पुत्रों से सम्पन्न बन गयी।

—:※:—

स्पर्श से जीवन में क्रान्ति लाने वाले परमहंस देव

नरेन्द्र (बाद में स्वामी विवेकानन्द) प्रारम्भ में ईश्वर के अस्तित्व में सन्देह रखते थे। परमहंस रामकृष्णदेव ने अपने हाथ के स्पर्श से उनकी अनुभूतियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर उन्हें विवेकानन्द बना दिया। स्पर्श के समय वे प्रथम अनुभव से इतने भयभीत हो गये थे कि उसका सही मूल्यांकन नहीं कर सके। अन्य अवसर पर उन्होंने अपने गुरु पर परमहंस से ईश्वर-साक्षात्कार कराने की प्रार्थना की। ठाकुर ने समाधि की दशा में उन्हें छू दिया। रोम्यां रोलां लिखते हैं—नरेन्द्र की आँखों को सब कुछ बदला हुआ दिखाई पड़ रहा था। ईश्वर के अतिरिक्त कहीं किसी अन्य वस्तु की सत्ता नहीं प्रतीत हो रही थी। जो कुछ भी वह छूते और देखते, सर्वत्र ईश्वर ही ईश्वर दिखाई पड़ता। भागवत शक्ति से उन्मद होकर उन्होंने कुछ भी करना बन्द कर दिया। उनके माता-पिता यह सोचकर व्यग्र हो उठे कि नरेन्द्र अस्वस्थ हो गया है। कई दिनों तक यही स्थिति रही। एक दिन अचानक ही यह सारा दृश्य स्वप्न की तरह अदृश्य हो गया।

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्त महिला को ऊर्ध्व गति प्रदान की

एक दिवस मुलखराज जब ध्यान-मग्न प्रभु जी के समीप बैठे थे तो ध्यान में उन्होंने देखा कि एक भक्त महिला 'माला' देवी का सूक्ष्म लिंग शरीर आकर कुछ सहमा हुआ सा प्रभु जी के निकट स्थित हो गया। मुलखराज ने प्रभु जी से उस सूक्ष्म शरीर के सहमने का कारण पूछा। इस पर प्रभु जी ने बताया कि यह महिला शारीरिक रूप से भजन ध्यान नहीं कर पाती थी। कई बार कहने पर भी कहती कि कुटुम्ब का कार्य अधिक है, सो अवकाश नहीं मिलता। अब आज यह अपना स्थूल शरीर त्यागकर यहाँ उपस्थित हुई है। इसने नित्य हमारा दर्शन किया था, सो अब यह आकर हमारे पास स्थित हो गयी है। अब विचारना यह है कि इससे ध्यान-भजन-पूजन-दान आदि कृत्य तो कभी किये नहीं। हाँ! पाप भी कोई नहीं किया, केवल कुटुम्ब के नित्य-कर्मों में मग्न रहती थी, इसलिए इस कौन सी गति दी जाय।"

मुलखराज ने यह सुनकर निवेदन किया कि हे प्रभो। जब यह भक्त है और आपकी सेवा में नित्य उपस्थित होती थी तो आप इसे अपने चरणों में स्थान दीजिए।

प्रभु जी मुलखराज की ओर देखकर मुस्करा दिये तथा आकाश की ओर देखने लगे। आकाश से एक दिव्य विमान आया तथा प्रभु जी ने आशीर्वाद देकर मालादेवी को विमान में बैठाना चाहा। प्रभु जी के हाथ का स्पर्श होते ही माला देवी का शरीर दिव्य एवं चतुर्भुज स्वरूप हो गया। प्रभु जी को बारम्बार प्रणाम कर मालादेवी का वह दिव्य शरीर विमानारूढ़ हो दिव्य धाम को चला गया।

—※—

स्पर्श से दीर्घ समाधि

रामठाकुर के गुरुदेव थे—अनंगदेव। उनका दिव्य शरीर था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह रक्त मांस का नहीं था। गुरुदेव किसी भी क्षण कहीं से अन्तर्हित होकर दूसरे स्थान पर प्रकट हो सकते थे। इन गुरू के साथ रामठाकुर ने कई वर्ष विताये।

एक बार रामठाकुर हिमालय में घूम रहे थे। गुरुदेव ने रामठाकुर से कहा कि वे उनके शरीर का स्पर्श करके बैठें। ठाकुर महाशय ने वैसा ही किया। गुरुदेव के शरीर का स्पर्श करते ही ठाकुर को तन्द्रा की अवस्था का अनुभव हुआ और वे समाधिस्थ हो गये। उनकी वह समाधि की अवस्था दीर्घ-काल वनी रही। जव उनकी समाधि टूटी तो उन्होंने स्वयं को नग्न देह पाया। सिर की जटाएँ बड़ी बड़ी हो गयी थीं। उस समय उन्होंने देखा कि वे उस वन में भी नहीं हैं, जहाँ समाधि लगायी थी। वे नहीं समझ पा रहे थे कि मैं कौन से देश में हूँ और इस समय तक समाधि में बैठे कितना काल बीत गया है। वस्तुतः उन्हें अपने अस्तित्व का आभास भी नहीं था।

—※—

गुरु ने मूर्ख को महापण्डित बनाया

माता जी की आज्ञा के अनुसार सिखों के अष्टम गुरु श्री हरिकृष्ण जी मार्ग में अनेक स्थानों पर पड़ाव डालते और धर्म प्रचार करते हुए दिल्ली की ओर चले। कुरुक्षेत्र में लालजी नाम के एक विद्वान् रहते थे। उन्होंने इतना बड़ा लश्कर देखकर पूछा—'यह किसका डेरा है?' किसी ने बताया कि गुरु हरिकृष्ण जी का। पण्डित जी ने नाराज होकर गुरू जी से शास्त्रार्थ करना चाहा। गुरू जी ने आज्ञा दी कि पण्डित जी को दरबार में उपस्थित किया जाय। पण्डित जी दरबार में आकर विना प्रणाम किये एक ओर आकर बैठ गये। गुरू जी ने पण्डित जी के छज्जू नामक कहार को बुलवाया जो महामूर्ख गिना जाता था। उसे अपने पास विठाकर गुरू जी ने कृपा-दृष्टि डाली और उनकी आज्ञा से छज्जू ने ऐसा शास्थार्थ किया कि पण्डित जी को अपनी हार माननी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ी। पण्डित जी का सारा विद्याभिमान नष्ट हो गया और उन्होंने गुरू जी की शरण ग्रहण की।

—*—

योगी ने सोते समय भी रक्षा की

परमहंस स्वामी योगानन्द के एक शिष्य भूषणचन्द्र बसु काशी में स्वामी जी के आश्रम के निकट ही पृथक् मकान में रहते थे। वे बिल्कुल अकेले थे। एक रात वे अपने पलंग पर सो रहे थे। शय्या के निकट ही उनका योग दण्ड जमीन में गढ़ा था। उसका ऊपरी हिस्सा त्रिशूल के समान नुकीला था। बसु महाशय का शरीर बहुत वृद्ध हो चला था। लगभग रात के दो बजे वे करवट बदलते समय नीचे गिर गये। गिरने पर वे जग गये और आँखें खोलकर चारो ओर देखा। बसु महाशय ने देखा कि वे चारपाई से डेढ़ हाथ दूर गिर पड़े हैं। यों उन्हें ठीक योग दण्ड के ऊपर गिरना चाहिए था, क्योंकि योग दण्ड चारपाई से बिल्कुल सटा हुआ रखा था। इसके तुरन्त बाद ही उन्हें कमरे में कमल की दिव्य गन्ध का आभास हुआ। अब बसु महाशय की समझ में आया कि वे गुरु कृपा से बाल-बाल बच गये हैं, क्योंकि वे जानते थे कि जब गुरुदेव प्रत्यक्ष दर्शन देना नहीं चाहते हैं तो उनके आगमन की सूचना कमल की दिव्य गन्ध से मिलती है।

दूसरे दिन भूषण बाबू ने स्वामी जी को आकर रात की घटना बतायी तो स्वामी जी ने हँसते हुए कहा—'तुम लोग तो आराम से सो जाते हो, हमें सारी रात जागकर पहरा देना पड़ता है।' समीप बैठे किसी व्यक्ति ने स्वामी जी से प्रश्न किया—'बाबा ! शिष्य की आसन्न विपत्ति का अनुमान लगाकर आप वहाँ जा सकते हैं। रक्षा भी कर सकते हैं। किन्तु यह समझ में नहीं आता कि शिष्य योग निन्द्रा में डूबा हुआ है। वह आपका चिन्तन नहीं कर रहा और आप भी योगासन में समाधि मग्न हैं। ऐसी स्थिति में शिष्य की रक्षा को कैसे जा सकते हैं ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामी जी ने उस व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—'योगी जब ध्यानमग्न होता है तो समस्त विश्व में ही उसकी सत्ता प्रकट रहती है। वह केवल परिमित देह मात्र में नहीं रहता। अतः विश्व की घटना उससे अगोचर नहीं हैं। इसीलिए वह ऐसे विपत्ति के क्षणों में एकाएक जा पहुँचता है।'

—*—

योगशक्ति द्वारा शिष्य की रक्षा

काठिया बाबा के शिष्य बनने के बाद एक बार ताराकिशोर हाथी पर चढ़कर अपनी ससुराल जा रहे थे। अचानक सामने एक पेड़ की डाल उन्हें इतनी नीची दिखाई दी कि उसके नीचे से निकलने पर उनका अङ्ग-अङ्ग छिन्न-विच्छिन्न हो जायगा। डाल इतने निकट आ गयी थी कि हाथी रोका जाना या दूसरी ओर को बचाया जाना असम्भव लगा।

कुछ क्षण बीतते ही हाथी उस स्थल से निकल गया। किसी अलौकिक ऐन्द्रजालिक ढंग से हाथी के डाल के नीचे से निकलते समय डाल ऊपर उठ गयी और हाथी निकल गया। ताराकिशोर ने देखा कि अब वह डाल नीचे की ओर झुकती जा रही थी। ताराकिशोर चकित रह गये।

वृन्दावन पहुँचने पर गुरुदेव ने स्वयं ही प्रसङ्ग छेड़ा—'वत्स, पेड़ की डाल तुम्हारा क्या बिगाड़ सकती थी। तुम्हारे साथ तो सतत जागरूक भगवान् रहते हैं।'

अब ताराकिशोर को उस डाल से अपनी रक्षा का रहस्य समझ में आया। वे गुरुदेव की योग-शक्ति को पहचान कर परम आनन्दित हुए।

—:o:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरु के चित्र ने वज्रपात से रक्षा की

लाहिड़ी महाशय की एक शिष्या ने गुरूजी से एक चित्र की याचना की। शिष्या में गुरूजी के प्रति दृढ़ भक्ति थी। अतः लाहिड़ी महाशय ने उसे एक चित्र प्रदान किया और कहा—'यों तो यह एक साधारण चित्र मात्र है किन्तु यदि तुम इसे रक्षा-कवच समझोगी तो यह रक्षा कवच ही सिद्ध होगा।'

उस शिष्या ने बड़े ही भक्ति भाव से उस चित्र की पूजा-अर्चना प्रारम्भ कर दी। एक दिन चित्र सामने रखकर वही शिष्या लाहिड़ी महाशय की पुत्रवधू के साथ 'भगवद्गीता' का अध्ययन कर रही थी। इतने में तेजी से झंझावात आया और वज्रपात शुरू हो गयी। दोनों महिलाएँ डर गयीं तथा चित्र के सामने सिर झुकाकर रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगीं। प्रार्थना के समय ही तेजी से बिजली वहीं गिरी जहाँ दोनों महिलाएँ पाठ कर रही थीं, किन्तु आश्चर्य! बिजली मेज पर रखी पुस्तक पर गिरी और ये दोनों महिलाएँ बच गयीं। बाद में उस शिष्या ने बताया कि उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके चारों ओर बर्फ की तहें उनकी रक्षा के लिए रख दी गयीं हों।

—※—

योगी द्वारा दावाग्नि से रक्षा हुई

एक समय विजय कृष्ण गोस्वामी चन्द्रनाथ तीर्थ के एक जंगल में ध्यानाविष्ट बैठे थे। अकस्मात् उस जंगल में दावानल का प्रकोप हुआ और हाथी भैंसे आदि वन्य जन्तुओं की चिंघाड़ से पूरा जंगल भर गया, जिससे गोस्वामी जी की समाधि टूट गयी और उन्होंने आँखें खोलकर चारों ओर देखा तथा अपने को दावानल से परिवेष्टित देख कर डर गये। सहसा वहाँ लोकनाथ ब्रह्मचारी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने ध्यान में गोस्वामी जी की इस विपत्ति को देख लिया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारी जी ने गोस्वामी को उठा लिया और तीव्र वेग से उस जंगल से निकल गये। निरापद स्थान में गोस्वामी जी को पहुँचाकर ब्रह्मचारी जी लुप्त हो गये। गोस्वामी जी ने ब्रह्मचारी जी को इससे पूर्व कहीं नहीं देखा था, इसलिए अपरिचित साधु की अयाचित कृपा के प्रति हार्दिक आभार प्रगट करने के लिए ज्यों ही गोस्वामी जी ने साधु महाराज को देखना चाहा, तब तक ब्रह्मचारी जी वहाँ से अन्तर्हित हो चुके थे।

—:※:—

हिंसक पशुओं ने हिंसा वृत्ति छोड़ी

प्राचीन काल के महामुनि ऋष्य शृङ्ग का आश्रम तुङ्गभद्रा नदी के तट पर स्थित है। सन्यास ग्रहण करने के पश्चात् एक दिन आचार्य शंकर इस आश्रम के समीप पहुँचे। वहाँ उन्होंने जो दृश्य देखा उससे वे चकित रह गये।

आचार्य शंकर ने देखा कि अब भी इस आश्रम का प्रभाव यह है कि यहाँ के जीव जन्तु भी पारस्परिक भेद-भाव भुलाकर विचरण करते रहते हैं। आचार्य शंकर के सामने ही मेढ़क के अनेक बच्चे नदी के जल से निकल कर सामने स्थित एक विशाल शिला पर बैठ गये। उस समय असहनीय धूप पड़ रही थी। इसी समय एक विशालकाय सर्प अपना फन फैलाकर वहाँ आ गया। उसने अपने फन से उन मेढ़कों पर छाया कर दी। शंकर ने मन ही मन ऋष्यशृङ्ग को प्रणाम किया तथा आश्रम में स्थित एक वृद्ध तपस्वी की चरण वन्दना कर वे गन्तव्य स्थान को चले गये।

—:※:—

बाघ से निर्भय योगी

एक बार बाबा अवधूत कुछ सन्यासियों के साथ कामाख्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर्वत पर पहुँचे। दिन-भर पहाड़ की चढ़ाई चढ़ कर वे देवी के दर्शन कर सके। वापस आकर कुछ कन्द मूल खोजकर उन सब साधुओं ने खाये और एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे। सभी साधु थके हुए थे, अतः जल्दी ही उन्हें नींद आने लगी। यों जंगल में रहने पर ये साधु-सन्त हिंसक जन्तुओं से बचने के लिए अपने निकट ही आग जला लेते हैं और उस आग से डरकर जन्तु उधर नहीं आते। किन्तु उस दिन थकावट के कारण किसी भी सन्यासी को आग जलाने की याद न रही।

अभी सब साधु सो भी न पाये थे कि सहसा एक विशालकाय बाघ हंस बाबा की शय्या के निकट आकर खड़ा हो गया। एक साधु ने उसे देखा चिल्लाकर कहा—'महाराज! यह एक विशाल शेर हमारे बीच आ गया है। जरा उठकर देखिये तो। इससे हमारी रक्षा करो।'

दल के प्रधान सन्यासी को उस समय तेज नींद आ रही थी। वे कम्बल ओढ़ते हुए बोले—'भाई, अभी उसके साथ बातचीत करने की फुर्सत नहीं है। अगर वह रुकना चाहे तो उसे अपनी जमात में भर्ती कर लो। सवेरे बात करेंगे।' इतना कहकर प्रधान सन्यासी तो सो गये। शेष साधु चिन्तित मन हो बैठे रहे। सहसा बाघ को न मालूम क्या सूझी, वह छलांग भरता हुआ वहां से चला गया और कहीं अदृश्य हो गया।

—:*:—

बाघ ने बाबा की बात मानी

एक बार हंस बाबा अवधूत हिमालय पर अपना कुछ समय तपस्या में व्यतीत कर तराई अंचल में भ्रमण कर रहे थे। उसी समय में कुछ दिनों के लिए वे एक स्थान पर ठहर गये। यहाँ एक बाघ का बड़ा उपद्रव था। आस पास का सारा क्षेत्र इस बाघ से परेशान था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन हंस बाबा अवधूत के आश्रम में भी यह बाघ घुस आया और नर मांस की लालसा में इधर-उधर देखने लगा। सहसा उसे सामने खड़े बाबा दिखायी दिये। वह उन पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था। इतने में बाबा के मन में ध्यान आया कि सभी तो एक ही परमात्मा की सृष्टि हैं फिर परस्पर यह बैर क्यों? यह सोचकर बाबा ने हाथ जोड़कर बाघ से कहा—'महात्मन्! हम और तुम एक परमात्मा की सन्तान हैं। हमारे और तुम्हारे भीतर एक ही परमात्मा है। फिर आपके इस क्रोध और बैर का कोई कारण मुझे दिखाई नहीं देता।'

बाबा द्वारा कहे गये उक्त शब्दों ने बाघ पर जादू का असर किया और तत्काल वह बाघ वहाँ से सर नीचा करके चला गया।

—※—

बाघ चरणों में लोटा

एक बार दो ईर्ष्यालु क्रूर पुरुष लोकनाथ ब्रह्मचारी व आश्रम वासियों को मारने पीटने के विचार से अस्त्र-शस्त्रादि से सुसज्जित होकर रात्रि के नीरव वातावरण में आश्रम में प्रविष्ट हुए। सहसा उन आततायियों के समाने अलौकिक काण्ड उपस्थित हो गया। एक प्रचण्ड व्याघ्र एकाएक आश्रम में आया और आक्रमणकारियों के सम्मुख गर्जन करने लगा। आक्रमणकारी इस अप्रत्याशित हमले से डर गये और आश्रम में ही एक कोने में जाकर छिप गये।

लोकनाथ ब्रह्मचारी उस समय ध्यान मग्न बैठे थे। व्याघ्र का गर्जन सुनकर वे आसन से उठे और व्याघ्र के सामने आकर खड़े हो गये। ब्रह्मचारी जी को देखकर व्याघ्र उनके चरणों में गिर पड़ा और लोटने लगा। वे दोनों युवक इस काण्ड को देख रहे थे। अब तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारी जी ने व्याघ्र का माथा सहलाते हुए कहा—तुम्हारा इस आश्रम में आना उचित नहीं हुआ। यहाँ हर समय मनुष्यों का आगमन होता रहता है। अच्छा, अब तुम शीघ्र ही जंगल में चले जाओ। तुम्हारा भोजन वहीं मिलेगा।'

ब्रह्मचारी के कथन को व्याघ्र भली-भांति समझ गया। वह छलांग भरता हुआ आश्रम से बाहर निकल गया। अब वे लोग समझ गये कि ब्रह्मचारी जी में कितनी शक्ति है। ग्लानि-युक्त मन से वे महापुरुष के पदतल में गिर गये और क्षमा माँगने लगे। दयाभिभूत श्री लोकनाथ ने दोनों व्यक्तियों को क्षमा कर दिया।

—※—

बाघिन और योगी

एक समय लोकनाथ ब्रह्मचारी अपने साथी वेणीमाधव के साथ चन्द्रनाथ पहाड़ पर रहते थे। एक दिन दोनों योगी ध्यानाविष्ट बैठे थे। तभी निकट से ही एक बाघिन का गर्जन सुनाई पड़ा। उस बाघिन के सम्मुख सद्यो जात कई शावक पड़े थे। बाघिन के गर्जने का कारण यह था कि वह दोनों साधुओं से डर रही थी कि कहीं यह साधु उसके बच्चों को न उठा ले जाय। लोकनाथ ने आँखे खोलकर बाघिन की ओर देखा और बाघिन के आन्तरिक अभिप्राय को समझकर उसके पास गये तथा प्रेम-पूर्वक कहने लगे—'तुम आराम से इन बच्चों के साथ सोओ। हम तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं करेंगे। भाषा न समझ पाने भी बाघिन के लोकनाथ के अभिप्राय को समझ लिया और शान्त हो गयी।

दूसरे दिन उसने फिर गर्जन शुरू किया। लोकनाथ ने ध्यान द्वारा कारण जानना चाहा और बाघिन के गर्जन के अभिप्राय को समझकर उससे कहा—'तुम अपने बच्चों को यहाँ छोड़ जाओ। हम उनकी रक्षा कर लेंगे।' लोकनाथ के कथन को समझकर बाघिन चली गयी। इसी प्रकार क्रम चलता रहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन दोनों साधुओं ने वहाँ से जाना चाहा तो बाघिन गर्जन करती हुई साधु-द्वय के पीछे पीछे चलने लगी । लोकनाथ बाघिन के अभिप्राय को समझ गये और वेणी-माधव से बोले—'जब तक इसके बच्चे बड़े नहीं हो जाते तब तक यह हमें नहीं छोड़ेगी ।' यह कहकर लोकनाथ ने अपना जाना स्थगित कर दिया और एक मास वहाँ निवास किया । जब एक महीने बाद बाघिन के बच्चे बाघिन के साथ कहीं चले गये तो लोकनाथ ने भी उस स्थान को त्याग दिया ।

—※※—

योगी जिनकी बाघों से मित्रता थी

कपिल धारा में बाबा गम्भीरनाथ अनेक भक्तों एवं साधुओं से घिरे हुए बैठे थे । शास्त्र चर्चा हो रही थी । इतने में वहाँ एक बाघ आ गया । बाघ को देखते ही सब लोग डर गये तथा काँपने लगे । बाबा सबको अश्वासन देते हुए बोले—'इससे डरो मत । यह एक बाबा हैं जिन्होंने स्वेच्छल से बाघ का स्वरूप धर लिया है ।

बाबा की ओर कुछ देर देखने के बाद वह बाघ वहाँ से चला गया । यह बाघ प्रायः बाबा के यहाँ आता और बाबा को अकेला पाकर बहुत बहुत देकर तक बैठा रहता । जंगल के और कई बाघों से भी बाबा जी की मित्रता थी । गोरखपुर मठ के पिंजड़े से तो उन्होंने एक बाघ पाल भी रखा था । जब कभी यह पिंजड़े के बाहर रह जाता था तो बाबा उसका कान पकड़ कर पिंजड़े में पहुँचा देते थे । बाघ खुशी से दुम हिलाता हुआ पिंजड़े के अन्दर प्रविष्ट हो जाता ।

—:※:—

बाघ की पीठ सहलाने वाले योगी

तैलंग स्वामी नैपाल के वन में तपस्या कर रहे थे । एक बार वहाँ के राणा शिकार के लिए उसी वन में आये । उनकी दृष्टि एक बाघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
पर पड़ीं और उन्होंने उसका पीछा करना प्रारम्भ कर दिया। कई वार राणा ने वाघ पर निशाना लगा कर वार किया किन्तु हर वार निशाना चूक जाता। राणा के सारे अनुचर तथा साथी पीछे छूट गये किन्तु राणा ने बाघ का पीछा नहीं छोड़ा। कुछ देर वाद वह वाघ तैलंग स्वामी के सामने जमीन पर जाकर लेट गया। योगी ने वाघ को शरण में आया देख उसे अभय प्रदान किया तथा अपने हाथ से उसकी पीठ सहलाने लगे। विस्मयाभिमूढ़ राजा ने जव यह दृश्य देखा तो वे कुछ चिन्तित एवं भयभीत हो गये। योगीराज ने राणा की ओर मुस्कराते हुए देखा और अपने पास वुलाया। राणा ने योगीराज को प्रणाम किया और नतमस्तक होकर सामने खड़ें हो गये। स्वामी जी ने राणा के विस्मय को दूर करते हुए कहा—'यदि तुम अपने मन से हिंसा-भाव निकाल दोगे तो किसी प्रकार का कोई भी जन्तु तुम्हारा अनिष्ट नहीं कर सकता। सब जीव परमपिता की सन्तान हैं तुम उनसे प्रेम करो, वे तुमसे अवश्य प्रेम करेंगे।'

स्वामी जी के उपदेश से राणा वहुत प्रभावित हुए। दूसरे दिन नैपाल-नरेश ने राजसी ठाठ के साथ श्रद्धा-पूर्वक स्वामी जी का अभिनन्दन किया तथा आशीर्वाद प्राप्त किया।

—:※:—

योगी के तेज से भयभीत शेर भागा

एक वार महाप्रभु के आश्रम पर एक वब्वर शेर आया। तव महाप्रभु ने योगेश्वर रामलाल को चिमटा देकर उसे वाहर निकाल देने का आदेश दिया। गुरु-आज्ञा पाकर योगेश्वर शेर की ओर वढ़े। अव महाप्रभु ने अपने भ्रूपटल हाथ से उठाकर शेर की ओर देखा। महाप्रभु के देखते ही, तेज न सह सकने के कारण शेर निस्तेज हो पीठ फेर कर खड़ा हो गया। उस समय महाप्रभु की आँखों के तेज के सामने शेर की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँखों का तेज कुछ भी नहीं था। तब योगेश्वर रामलाल ने शेर पर चिमटे का प्रहार किया जिससे शेर चिल्लाकर भाग गया।

—※—

शेर से आत्मीय सम्बन्ध

बाबा रामनाथ (सं. १६२०—१६६० वि०) एकान्त सेवी सन्त थे, उनका सारा समय रामनाम के जप में ही व्यतीत होता था। राम-निवास बाग में ठाकुर हरिसिंह के डेरे के पास एक शेर पिंजड़े में बन्द था। रात को वह बड़ा शोर मचाता था। एक दिन बाबा रामनाथ कितने ही मनुष्यों की उपस्थित में शेर के मुँह पर हाथ फेरते हुए बोले—'इतना शोर मत मचाया करो।' सिंह ने इसके बाद कभी शोर नहीं मचाया।

—※—

सांप का काटा हुआ बच गया

बालानन्द ब्रह्मचारी के एक शिष्य थे—दयानिधि। एक बार इनके पुत्र को एक भयंकर विषधर सर्प ने डस लिया। विष धीरे धीरे शरीर में व्याप्त हो गया और उसके बचने की कोई आशा नहीं रहीं। दयानिधि झा ने पुत्र की इस विषय स्थिति को देखकर ब्रह्मचारी जी के चरणों में प्रणाम किया और ध्यानाविष्ट होकर बैठ गये। इसके बाद उन्होंने जो दृश्य देखा, उससे वे दंग रह गये।

दयानिधि ने देखा कि कुछ यमराज की भाँति भयंकर मूर्तियाँ उस बच्चे की तरफ बढ़ रही हैं और ब्रह्मचारी जी त्रिशूल लिए उन्हें भगा रहे हैं।

इसके बाद दयानिधि झा का वह पुत्र अप्रत्याशित रूप से बच गया।

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्प को आमन्त्रण दिया

एक समय श्री भोलानन्द गिरिजा के शिष्य गोरे गोपालराय लौकनाथ ब्रह्मचारी के आश्रम में उन्हीं के पास बैठे थे। इसी समय वहाँ एक महिला एक बाल्टी लेकर आ उपस्थित हुई। दूध आया देख ब्रह्मचारी जी 'आ-आ' कहकर किसी को पुकारने लगे। पहले तो गोरे बाबू समझ न सके कि स्वामी जी किसे पुकार रहे हैं, बाद में उन्होंने देखा कि एक प्रचण्ड विषधर सर्प ब्रह्मचारी जी के पास उनसे सटकर बैठ गया। अब ब्रह्मचारी जी आदर पूर्वक उस सर्प को दूध पिलाने लगे। जब वह दूध पी चुका तो 'अब तुम जाओ' कहकर सर्प को वहाँ से विदा कर दिया।

गोरे बाबू को भय तो नहीं लगा, किन्तु वे विस्मित हो गये थे। सर्प के चले जाने पर बचे हुए दूध में से कुछ दूध प्रसाद रूप में गोरे बाबू को भी देने लगे जिससे उन्हें कुछ भय हुआ। गोरे बाबू की मनोदशा समझ कर ब्रह्मचारी ने आश्वासन दिया—'लो-लो, कोई भय नहीं।' तब गोरे बाबू मना न कर सके और सानन्द ब्रह्मचारी जी के साथ प्रसाद रूप उस दूध को ग्रहण किया।

—:*:—

योगी ने सर्प का आतिथ्य ग्रहण किया

एक बार प्रभु श्री जगद्बन्धु वृन्दावन में कुसुम सरोवर के किनारे मृत्तिका कुटीर में निवास कर रहे थे। मथुरा के डॉक्टर सान्याल प्रभु श्री के दर्शन करने पधारे। जब वे कुटीर के द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि जगद् बन्धु दिव्य-भाव मुद्रा में बैठे हैं तथा विषधर सर्प उनके पीछे एक बिल में से अपना फण बाहर निकाल रहा है। जब प्रभु श्री का ध्यान सर्प की ओर आकर्षित किया गया तो उन्होंने मन्द स्वर में कहा—'मैंने पहले से उसे जानता हूँ। मैं उसका अतिथि हूँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अतिथि का कुछ अनिष्ट नहीं करता। वह सचमुच एक भक्त है। यदि आप लोगों का भय दूर नहीं होता तो मैं यहाँ से अपना आसन हटा लूंगा।'

किन्तु प्रभु श्री वहाँ बहुत दिन ठहरे। उसके बाद उस सर्प को वहाँ कभी नहीं देखा गया।

—:*:—

सर्प स्तम्भन

एक बार स्वामी वसु देवानन्द अपने किसी सहाध्यायी के साथ वैदिक मन्त्रों के अद्भुत सामर्थ्य की चर्चा करते हुए गणपति पर पुष्पांजलि चढ़ाने जा रहे थे। रास्ते में एक सर्प दिखाई दिया। सहाध्यायियों ने कहा—'यह अच्छा अवसर है, किसी वेद-मन्त्र के सामर्थ्य को प्रत्यक्ष दिखाइए।' महाराज ने कहा—'अच्छा।' उस सर्प के चारों ओर थोड़ी मिट्टी डाल दी और एक वेद-मन्त्र का पाठ किया। साँप उसी घेरे में अटक गया। दूसरे दिन महाराज अपने साथियों के साथ उसी स्थल पर पहुँचे तो देखा कि साँप वहीं अटका पड़ा है। महाराज ने जरा सी मिट्टी हटाकर रेखा काट दी और सर्प तीर की तरह सनसनाता हुआ वहाँ से निकल गया।

—:*:—

सर्प अपनी हिंसा वृत्ति भूल गया

अभी योगेश्वर रामलाल 'कुरुक्षेत्र' स्थित 'थानेसर' में पं० बूलराज जी के यहाँ विद्याध्ययन कर रहे थे। एक दिन आश्रम के कार्य निपटाकर दोपहर में विश्राम करने लगे। कुछ देर में आप सो गये।

दोपहर के पश्चात् गुरुदेव छात्रों को पढ़ाते थे। जब उस दिन पाठ प्रारम्भ हुआ तो रामलाल को शिष्यों के मध्य न देख गुरू जी ने शिष्यों को रामलाल को बुलाने भेजा। शिष्यों ने रामलाल के कक्ष में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाकर देखा तो डर के मारे काँपने लगे। एक सर्प काला नाग फन फैलाये आपके सिर पर छाया किये हुए था। विद्यार्थियों ने इस दृश्य को देख आपस में कुछ वार्तालाप शुरू कर दिया कोई कहता—'इनकी मृत्यु हो चुकी है।' दूसरे ने कहा—'नहीं, अभी सो रहे हैं।' एक विद्यार्थी ने साहस करके पैरों की ओर से चारपाई को खींचा। इसके साथ ही सर्प कहीं अदृश्य हो गया तथा रामलाल उठकर बैठ गये।

जब विद्यार्थियों ने सर्प के सम्बन्ध में रामलाल से कहा तो उन्होंने उत्तर दिया—'तुम लोग उसे वैसा ही बैठा रहने देते। वह तुम्हारा क्या बिगाड़ रहा था।' अब शिष्यों की समझ में आया कि यह रामलाल की योगविभूति का परिणाम है।

—:※:—

सर्प से आत्मीय सम्बन्ध

सिद्ध भगवानदास बाबा जी श्री मन्दिर की भोगारति के पश्चात् महाप्रसाद ग्रहण करते थे। बाबा ने यह प्रसाद अकेले कभी नहीं खाया। नित्य ही वे एक पुराने विषधर साँप की प्रतीक्षा करते और उसके प्रसाद ग्रहण करने के बाद ही प्रसाद पाते। वह सर्प कहाँ से आता था, इसकी जानकारी किसी को न थी। एक दिन बाबा के भक्त ने इस सर्प को रास्ते में आता देख लिया और लाठी से उठाकर आश्रम से बाहर फेंक दिया। बाबा ने जब इस घटना को सुना तो बड़े दुःखी हुए और उस भक्त को बहुत बुरा भला कहा। भक्त के बहुत अनुनय विनय करने पर बाबा का क्रोध शान्त हुआ। और बाबा ने उससे कहा—'तुम नहीं जानते, यह मेरे नाम ब्रह्म के बड़े भाई अनन्त देव हैं। भविष्य में ऐसा भयंकर अपराध मत करना।'

—※—

मौत के मुँह से बचाया

कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील सतीशचन्द्र मुखर्जी ने दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवाह किये थे, किन्तु उनकी दोनों पत्नियाँ काल-कवलित हो गयीं थीं। कहीं तीसरा विवाह होने पर वह पत्नी भी न मर जाय, इस आशंका से न तो सतीशचन्द्र ही विवाह करने को तैयार थे और न ही कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को ऐसी विपत्ति में डालना ही चाहता था। सतीश बाबू अपने पिता के एक मात्र पुत्र थे और उनके अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। इसलिए उनके पिता सदैव चिन्तित रहा करते और किसी भी प्रकार पुत्र के विवाह की योजना बनाते रहते।

सतीशचन्द्र मुखर्जी का सारा परिवार स्वामी विशुद्धानन्द का भक्त था। सतीशचन्द्र स्वयं स्वामी जी का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने समय पर स्वामी जी को दान दिये थे। एक बार हनुमान घाट पर स्वामी के निवास के लिए मकान खरीदकर उन्होंने स्वामी जी को अर्पित कर दिया था। इन सब कारणों से तथा सतीश बाबू की भक्ति-भावना के कारण स्वामी जी उन पर बड़ी कृपा-दृष्टि रखते थे।

एक बार सतीशचन्द्र के पिता काशी आये और उन्होंने बाबा से सारी परिस्थिति कह सुनायी। सुनकर बाबा ने कहा—'आप निर्भय होकर विवाह करें। अबकी सतीश की पत्नी को मैं नहीं मरने दूँगा। मैं पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ। यदि वह मर भी जायगी तो नूतन सृष्टि कर दूँगा।'

स्वामी जी के इस आश्वासन के पश्चात् सतीशचन्द्र विवाह करने को तैयार हो गये। स्वामी जी प्रेरणा से ही उमेशचन्द्र बनर्जी जो कलकत्ता के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, अपनी पुत्री कालिदासी का विवाह सतीशचन्द्र के साथ करने को तैयार हो गये। इसके बाद ही सतीश का कालिदास के साथ विवाह हो गया।

विवाह के कुछ दिनों बाद जबकि सतीश बाबू काशी में स्वामीजी की सेवा में संलग्न थे, कलकत्ता में उनकी पत्नी बीमार हो गयी। कलकत्ता से उनके ससुर ने एक तार भेजा—'कालिदास की हालत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा खराब है। डाक्टर जवाब देते जा रहे हैं। सम्भव हो तो चले आओ।' सतीश बाबू तार पाते ही आगामी विपत्ति का अनुमान लगाकर चिन्तित हो गये। उन्होंने वह तार स्वामी जी को दिखाया और कहा—'यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं कलकत्ता चला जाऊँ। स्वामी जी ने जाने से मना कर दिया और कहा—'वहाँ सब ठीक हो जायगा। तुम्हारी वहाँ कोई आवश्यकता नहीं।'

दूसरे दिन एक तार मिला—'स्थिति बहुत शोचनीय है। शीघ्र चले जाओ।' सतीश बाबू ने तार पाकर जाना चाहा किन्तु स्वामी जी ने न जाने दिया। तीसरे दिन एक तार और मिला जिसमें लिखा था—'कालिदासी को डॉक्टरों ने छोड़ दिया है। अब वह कुछ ही समय की मेहमान है। जल्दी चले आओ।' तार पाकर सतीश बाबू घबड़ा गये। स्वामी जी ने सतीश बाबू से तार लेकर पढ़ा और कहा—'आप तार भेज दीजिए कि आज रात को कालिदासी रोग मुक्त हो जायगी। किसी के निराश होने की आवश्यकता नहीं है।' सतीश बाबू को स्वामी जी की शक्ति का विश्वास था। अतः उन्होंने इस आशय का तार भिजवा दिया। और वह आश्चर्यजनक ढ़ग से स्वस्थ हो गई।

—:※:—

अन्धे का अन्धकार दूर हुआ

लाहिड़ी महाशय का एक शिष्य 'रामू' जन्मान्ध था। उसने गुरुदेव की भक्ति-भाव से लम्बे समय तक सेवा की। एक दिन गुरुदेव लाहिड़ी जी के दूसरे शिष्य केवलानन्द ने रामू से पूछा कि तुम कब से नेत्र-हीन हो। रामू ने बताया कि वह जन्मान्ध है और सांसारिक प्रकृति को उसने कभी नहीं देखा है। केवलानन्द ने रामू से कहा कि हमारे गुरुदेव सर्वशक्तिमान हैं। उनसे प्रार्थना करने पर तुम्हें नेत्रों की ज्योति मिल सकती है।

रामू ने केवलानन्द की बात स्वीकार कर ली और गुरुदेव से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेत्र-लाभ के लिए प्रार्थना की। लाहिड़ी महाशय ने किंचित् स्मित के साथ कहा—'रामू तुम्हें किसी के द्वारा मुझे कठिन परिस्थिति में डालने के लिए बहकाया गया है। मुझमें तुम्हें स्वस्थ कर पाने की शक्ति नहीं है।' गुरूजी की बात सुनकर रामू पहले तो संकोच में पड़ गया किन्तु तत्काल उसे गुरुदेव की शक्ति का भान हुआ और उसने कहा—'गुरुदेव ! आपमें आत्म-स्वरूप से स्थित अनन्तदेव निश्चय ही मुझे स्वस्थ करने में समर्थ हैं। आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए।'

गुरुदेव ने रामू के ललाटविन्दु का स्पर्श करके सात दिन तक निरन्तर राम नाम के जप का निर्देश दिया और आश्वासन दिया कि निश्चय ही उसे नेत्र-ज्योति मिल जावेगी। हुआ भी ठीक वैसा ही। रामू ने पूर्ण लगन एवं निष्ठा के साथ सात दिन राम नाम का जप किया। सातवें दिन रामू को नेत्रों से दिखाई देने लगा। उसने प्रथम बार ईश्वर की सृष्टि के दर्शन किये। उसके आनन्द का पारावार न रहा। रामू बार-बार गुरु चरणों की वन्दना करने लगा।

—:*:—

चेचक से खोयी दृष्टि फिर मिली

एक बार योगेश्वर रामलाल के समीप एक दम्पति अपनी पन्द्रह वर्ष की अन्धी कन्या को लेकर आये तथा कातर स्वर में प्रार्थना करने लगे। स्वामी जी ने उनसे आने का कारण पूछा तो वे कहने लगे—'महाराज इस कन्या की दोनों आँखें चेचक निकलने के कारण अपनी ज्योति खो चुकी हैं। अब इसके विवाह की बड़ी समस्या आ उपस्थित हुई है। आप कृपा करके इसकी आँखें सही कर दीजिए।'

स्वामी जी ने कहा कि 'यदि इसकी आँखों में थोड़ी ज्योति होती तो हम ठीक कर सकते थे, किन्तु अन्धी आँखों का कोई इलाज नहीं।' इस पर वे दम्पति बार-बार प्रार्थना करने लगे। प्रभुजी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक समीप बैठे शिष्य मुलखराज ने भी प्रभुजी से प्रार्थना की। बहुत अनुनय विनय करने के बाद प्रभु जी ने कहा—'हमारे सरोवर में कुछ दिन नित्य स्नान करने पर इस लड़की के कष्ट दूर हो सकते हैं।'

सरोवर समीप ही बाग में स्थित था। उसने दम्पति कुछ दिन नित्य उस लड़की को सरोवर में स्नान कराया जिससे उस लड़की की आँखें पूर्ववत् हो गयीं।

—:*:—

आनन्दमयी माँ की कृपा से रोगी निरोग हुए

१९२८ ई० की बात है। माता आनन्दमयी को एक अन्तेवासी नन्दू बीमार था। उसके पेट में दर्द था और सारी रात कै-दस्त होते रहे। सवेरे भोज का आयोजन था। माताजी ने कहा—'नन्दू को बुलाओ।' नन्दू को कै आ रही थी और खाट पर पड़ा था लेकिन माँ की आज्ञा से बुलाया गया। माँ ने कहा 'खाओ, जो कुछ खा सको।' उसने चावल, मछली, सब्जी सब कुछ खाया और उसी दिन अच्छा हो गया।

एक बार एक व्यक्ति लकवे से आक्रान्त कन्या को माँ के पास लाया। माँ ने कहा—गुरुवार को लाना। कथन के अनुरूप ही पिता-पुत्री बृहस्पतिवार को आ पहुँचे। माँ उस समय भोग में पान देने के लिए सुपारी काट रही थीं। माँ ने सुपारी का एक टुकड़ा लड़की की ओर फेंका और उससे उठाने के लिए कहा। लड़की ने बड़ी मुश्किल से उसे उठा लिया। दूसरे दिन लड़की के बाप ने आकर कहा—कैसा आश्चर्य है! आज सड़क पर बाजा बजता हुआ जा रहा था। मेरी बीमार लड़की लेटे-लेटे भाई-बहनों का खेल देख रही थी। एकाएक बाजे की आवाज सुनकर वह अपनी बीमारी की बात भूलकर भाई-बहनों के साथ बाहर गयी। अब वह पैदल चल सकती है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्योतिष बाबू बहुत बीमार थे। खटिया पर पड़े थे। एक दिन दोपहर को माता आनन्दमयी और भोलानाथ जी (माँ के पतिदेव) उनके घर गये। माँ ने उनसे कहा—इस सामने वाले तालाब में डुबकी तो लगा आ। उस समय घर के लोग सोये हुए थे। ज्योतिष बाबू ने उसी समय डुबकी लगायी और धोती बदलकर बिस्तर पर लेट गये। ज्योतिष बाबू डर रहे थे कि आज कहीं खून ज्यादा गिरा तो सब बुरा-भला कहेंगे कि नहाने से ही ऐसा हुआ। लेकिन उस स्नान से बीमारी कम होती गयी।

—:*:—

ध्यान से पीड़ा का शमन

एक बार स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती कैलासाश्रम ऋषीकेश में ठहरे हुए थे। रात्रि का समय था। अचानक एक बिच्छू ने स्वामी जी को काट लिया। उस समय स्वामी जी ने विश्राम करते हुए किसी भी आश्रमवासी को कष्ट देना उचित नहीं समझा।

बस, पद्मासन लगाकर निश्चल बैठ गये। चित्त अन्तर्मुख कर लिया। अतः शारीरिक पीड़ा का अनुभव स्वामी जी को नहीं हुआ। तीन घण्टे बाद जब पद्मासन से उठे तब तक पीड़ा शान्त हो चुकी थी।

—:*:—

स्पर्श मात्र से रोग निवारण की अनौखी घटनाएँ

१—एक बार स्वामी योगानन्द के मामा किसी भयंकर रोग से पीड़ित थे। वे एक बार बनारस गये तथा वहाँ भक्तों की भीड़ में बैठे तैलङ्ग स्वामी को देखा। स्वामी जी को देखकर वे उनके पास गये तथा स्वामी जी को प्रणाम किया। स्वामी जी ने अभय-मुद्रा में हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया तथा अपने हाथ से उनके शरीर का स्पर्श

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया। स्पर्श-मात्र से योगानन्द के मामा का वह कष्टदायक जीर्ण-रोग दूर हो गया।

२—एक बार योगिराज माता जी श्री जय अम्बे जीवन बीमा के कर्मचारी श्री बी० पी० कांवली के यहां ठहरे हुए थे। श्री कांम्वली किसी कार्य से बाहर गये हुए थे। अचानक उनके दो वर्षीय पुत्र को मूर्छा का दौरा हुआ। उसका सारा शरीर लकड़ी की तरह सख्त हो गया तथा हाथ पैर ठण्डे पड़ गये। केवल तालु के ऊपर कुछ भाग गरम था।

उस समय योगिराज हवन कुण्ड में श्रीफल की आहुति देने की तैयारी कर रहे थे। एकाएक उन्होंने मूर्छा के दौरे के विषय में सुना तो हवन मण्डप से उठ आये। योगिराज ने बालक के तालु को हाथ से स्पर्श किया। धीरे-धीरे बालक के शरीर में गर्मी आने लगी। कुछ मिनटों के बाद बालक पूर्ण स्वस्थ हो गया।

३—एक बार तारा माई के मन्दिर के दरवाजे पर एक मरणासन्न व्यक्ति पड़ा हुआ रो रहा था। क्षेपा ने उससे पूछा—'भाई, आनन्दमयी माँ के द्वार पर निरानन्द क्यों ?' रोगी ने देवी का प्रसाद ग्रहण की इच्छा व्यक्त की किन्तु वह पीड़ा के कारण प्रसाद लेने में असमर्थ था। बामा क्षेपा को दया हो आयी। उन्होंने उसे हाथ से छू दिया। स्पर्श मात्र से रोगी बिल्कुल भला चंगा हो गया और उसने भरपेट प्रसाद खाया।

कुछ देर बाद वह व्यक्ति बोला—'बाबा, तुम क्या साक्षात् भगवान हो ? तुम्हारे छूने मात्र से मेरे सारे दुःख दूर हो गये।'

बाबा ने उसे डपटते हुए कहा—'अगर भगवान छूता तो क्या तुम खाने के लिए इतना छटपट करता। तुम तो संसार से तर गया होता रे। मैं माई के चरणों की धूल की धूल हूँ। अब भाग यहाँ से।' इतना कहकर उसे भगा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४—एक वार विजयकृष्ण गोस्वामी दरभंगा में निवास कर रहे थे। वहाँ वे दुःसाध्य उदर रोग से पीड़ित होकर मरणासन्न स्थिति में पहुँच गये। अच्छे से अच्छे डॉक्टर भी विजयकृष्ण को रोग मुक्त न कर सके। अन्त में सब लोगों ने भगवन्नाम को आश्रय जान उसी का जप शुरू किया।

इधर गोस्वामी महाशय के एक शिष्य तीव्र गति से लोकनाथ ब्रह्मचारी के आश्रम में बारदी आये और अपने गुरुदेव की प्राण रक्षा के लिए कातर स्वर में प्रार्थना करने लगे। रोते-रोते श्यामाचरण ब्रह्मचारी जी से कहा—'गुरुदेव के प्राणों की रक्षा आपको करनी ही होगी। आप मेरी आयु उन्हें दे दें।

श्यामाचरण के सकरुण आवेदन ने ब्रह्मचारी जी को प्रभावित कर दिया। वे स्वयं भी विजयकृष्ण पर स्नेह रखते थे। दयार्द्र होकर बोले—'अच्छा, अब तुम ढाका चले जाओ। मैं विजय के पास जाऊँगा और उनकी रक्षा करूँगा।'

ब्रह्मचारी जी बारदी छोड़कर कहीं जाते ही नहीं थे। उस बार भी वे बारदी में ही रहे और सूक्ष्म शरीर से जाकर विजयकृष्ण गोस्वामी की शय्या के निकट आविर्भूत हुए और गोस्वामी जी को हाथ के स्पर्श से आशीर्वाद दिया। कुछ ही समय में गोस्वामी जी बिल्कुल स्वस्थ हो गये।

—:※:—

आशीर्वाद माग से रोग मुक्ति

ढाका जिले के एक ग्राम के निवासी चण्डीचरण वसु दीर्घ काल से बहुमूत्र रोग से पीड़ित थे। बहुत चिकित्सा कराने के बाद भी उन्हें रोग से छुटकारा न मिल सका। कुछ दिनों बाद ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब बसु महोदय अधिक जीवित नहीं रहेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरणासन्न चण्डीचरण ने सोचा कि मरना तो है ही, फिर किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेने के बाद मृत्यु हो तो अधिक अच्छा रहे । यह सोचकर वे स्वामी भास्करानन्द सरस्वती के पास आये । स्वामी जी ने उनसे कहा कि दीक्षा ग्रहण करने के लिए पहले कुल गुरु से दीक्षित होना आवश्यक है ।

अब चण्डीचरण चिन्तित हो उठे । सुदूर पूर्व निवास स्थान पर जाकर गुरुदेव को खोजने का समय नहीं था । भगवत् कृपा एवं स्वामी जी के अनुग्रह से उनकी यह चिन्ता शीघ्र ही दूर हो गयी । काशी में ही उनके कुलगुरु मिल गये जो उन दिनों तीर्थ यात्रा के लिए काशी आये थे । चण्डीचरण उनसे दीक्षा लेने के बाद स्वामी भास्करानन्द जी के पास आये ।

स्वामी जी चण्डीचरण को सुपात्र जानकर मंत्र दान प्रदान किया और आशीर्वाद दिया कि उन चालीस दिनों में तुम्हारा यह रोग दूर हो जावेगा ।

स्वामी जी द्वारा निर्धारित अवधि में ही चण्डीचरण बसु का रोग दूर हो गया और वे पूर्ण स्वस्थ हो गये ।

—※※—

स्मरण करते ही आविर्भाव और रोग मुक्ति

बाबा सन्त दास के एक शिष्य थे—धीरेन्द्र दास गुप्त । इनकी एक कन्या मरणासन्न हो गयी थी । सभी प्रकार की चिकित्सा व्यर्थ गयी थी । किसी भी उपाय ने काम नहीं किया । अन्त में गुप्त जी की पत्नी को गुरुदेव की याद आयी । वे एकान्त कमरे में जाकर गुरुदेव का स्मरण कर प्रार्थना करने लगीं । कुछ देर प्रार्थना के बाद गुरुदेव ने दर्शन दिये और कन्या के शरीर को स्पर्श कर तथा आशीर्वाद देकर अन्तर्हित हो गये । कुछ ही समय बाद वह कन्या रोग मुक्त हो गयी ।

—※※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगीराज के प्रसाद सेवन से जीर्ण रोग नष्ट हुआ

एक बार सुखीरपुर निवासी एक ब्राह्मण किसी उदर रोग से पीड़ित हो गया । वह जो कुछ खाता, वह उल्टी हो जाने से बाहर हो जाता । इस व्याधि से उसका शरीर बहुत दुर्बल हो गया था । व्याधि से छुटकारा पाने की इच्छा से वह स्वामी भास्करानन्द जी के पास आया । स्वामीजी उसके आते ही उसकी कामना समझ गये तथा रसोइये से बोले—'पांडे जी, जल्दी से भोजन तैयार करो ।'

स्वामी जी के आदेशानुसार खिचड़ी पकायी गयी । स्वामी जी ने उसमें से कण-मात्र ग्रहण किया । बाकी प्रसाद उस ब्राह्मण को दिया गया उस प्रसाद को खाने से ब्राह्मण का वह जीर्ण रोग तुरन्त ही ठीक हो गया ।

—※—

चित्र से प्रकट हुई दिव्य ज्योति ने भक्त का रोग निवारण किया

भगवती चरण घोष ने लाहिड़ी महाशय का चित्र अपने घर में एक वेदी पर प्रतिष्ठित कर दिया था और नित्य ही सपरिवार भक्ति श्रद्धा-पूर्वक उस चित्र की पूजा करते । एक बार घोष जी का पुत्र मुकुन्द लाल घोष (बाद में योगानन्द परमहंस नाम से प्रसिद्ध) हैजे से पीड़ित हो गया । जीवन की कोई आशा नहीं रही, सभी चिकित्सक निराश हो गये । बालक की मां ने कातर भाव से वहीं सिरहाने दीवाल पर टंगे चित्र की ओर देखा और अपने पुत्र से मन ही मन लाहिड़ी गुरु को साष्टाङ्ग प्रणाम करने को कहा । बालक मुकुन्दलाल ने अधीरता-पूर्वक हृदय से गुरुदेव का स्मरण करते हुए चित्र की ओर देखा । कुछ काल पश्चात् कमरे में एक चौधियाँ देने वाली प्रखर ज्योति प्रकट हुई जिसके स्पर्श मात्रा से बालक के समस्त रोग एवं अशक्तता समाप्त हो गयी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने तुरन्त उठकर माँ के चरण स्पर्श किये तथा उस चित्र को भी प्रणाम किया।

चित्र से प्रकट हुई उस दिव्य ज्योति को माँ ने भी देखा था। उन्होंने बार-बार उस छोटे से चित्र को सिर नवाया और कहा—"हे गर्वव्यापी गुरुदेव! आपको धन्यवाद है कि आपके आलोक ने मेरे लाल को अच्छा कर दिया।"

—※—

योगी के पैर के आघात से हार्निया दूर हुआ

बेल-ग्राम का निमाई हार्निया रोग से पीड़ित था। एक तो रोग, उस पर भी भीषण दरिद्रता। परिवार का भरण-पोषण एक समस्या बन गया। हारकर उसने आत्महत्या करने का विचार किया। तारापीठ के श्मशान के पास जंगल में पेड़ की डाल में रस्सी लटका कर वह फाँसी खाने की तैयारी कर रहा था। अकस्मात् कहीं से उधर बाबा बामाक्षेपा आ पहुँचे। उसे आत्महत्या करते देख जोर से बोले—'अबे साला! आत्महत्या मत कर। यह पाप है। अब भाग जा।'

उस समय निमाई बच गया किन्तु उसने निश्चय किया कि अब घर नहीं जायगा। इसलिए तारापीठ के मन्दिर में ही चला आया। एक दिन बाबा कहीं गये थे। निमाई ने उनके पीछे बाबा की धूनी से गांजा की चिलम के लिए आग ले ली। इसी बीच क्षेपा वहाँ आ पहुँचे और उसके पेट में जोर से लात का प्रहार किया। निमाई मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

होश आने पर जब वह उठा तो रोग मुक्त हो चुका था। इसके बाद बहुत दिनों तक स्वस्थ रहकर लौकिक काम-काज में लगा रहा और बाबा का भक्त बन गया।

—※—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महारानी को दर्द से छुटकारा मिला

एक बार मुगल बादशाह अकबर की प्रियतमा राजमहिषी कठिन शूल रोग से आक्रान्त हो गयी । कई हकीमों, वैद्यों से चिकित्सा करायी गयी किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ एक दिन रात्रि में उसी महिषी ने एक स्वप्न देखा कि यमुना के किनारे परमयोगी सन्यासी तपस्या कर रहा है । वह उसके पास गयी है तथा औषधि लेकर आयी है । उस औषधि के सेवन से उसका रोग दूर हो गया है ।

दूसरे दिन प्रातः काल महिषी ने अपना स्वप्न अकबर को सुनाया अकबर शुरू से ही साधु संन्यासियों तथा फ़कीरों पर विश्वास करता था अतः उसने स्वप्न की बात को सत्य माना तथा संन्यासी की खोज प्रारम्भ करवा दी ।

उन दिन मधुसूदन सरस्वती यमुना किनारे तपस्या कर रहे थे । अकबर ने जब सुना तो छद्म वेश में महिषी के साथ आया । मधुसूदन उग्र तपस्या में रत थे । उनके चारों ओर मिट्टी का एक ढ़ेर लग गया था जिससे उनका अधिकांश शरीर ढक गया था ।

कई दिन बाद मधुसूदन ने समाधि भंग की । सामने उपस्थित सम्राट और साम्राज्ञी से उनके आगमन का कारण पूछा । कातरता पूर्वक राजमहिषी ने अपने कष्ट की सारी कथा सुना दी जिसे सुनकर मधुसूदन मधुर वाणी में बोले—'माँ, अब तुम घर जाओ । आज से तुम्हें शूल-विकार परेशान नहीं करेगा । भगवान् की कृपा आपको प्राप्त है ।'

मधुसूदन सरस्वती के उक्त कथन से ही साम्राज्ञी का शूल-विकार दूर हो गया प्रसन्न होकर अकबर ने संन्यासी को बहुत सा धन भेंट करना चाहा, किन्तु मधुसूदन ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा—'सम्राट्, आप धर्म और प्रजा के रक्षक हैं । आप अपने कर्तव्य का पालन करते रहें, यही मेरी इच्छा है'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्राट् अकबर मधुसूदन सरस्वती की प्रशंसा करते हुए अपने राजमहल लौट आये।

—:※:—

सर्पदंश का अनोखा उपचार

एक दिन तैलंग स्वामी असी घाट के सामने गंगा में विहार कर रहे थे। इसी समय उनकी दृष्टि एक हृदय-विदारक दृश्य पर पड़ी। एक स्त्री का पति साँप के काटने से मर गया था। लोग उसे गंगा में प्रवाहित करने के लिए ला रहे थे। पीछे-पीछे वह स्त्री भी उन्मादिनी की तरह रोती-चिल्लाती हुई आ रही थी।

स्वामी जी ने जब यह कारुणिक दृश्य देखा तो उन से नहीं रहा गया। वे झटपट बाहर निकल आये और गंगाजल की रेती की मिट्टी उठाकर उस व्यक्ति के सर्पदंश के स्थान पर लगा दी। इसके बाद स्वामी जी गंगा में कहीं अदृश्य हो गये।

कुछ देर बाद मृतक के शरीर में प्राण संचार होने लगा तथा उसने आँखें खोल दीं। साथ के व्यक्ति भौंचक्के से इस घटना को देख रहे थे। मृतक को जीवित देख वे सब प्रकृतिस्थ हुए। उन सबने स्वामी जी को खोजना चाहा किन्तु योगीराज उन्हें न मिल सकते थे और न मिले ही।

—※—

दुःख हारी योगी

एक बार एक व्यक्ति को अपच की बीमारी हो गयी। वह चाहे जितनी हल्की चीजें खाता, किन्तु उसे हजम ही नहीं होती थीं। इस प्रकार वह बहुत दुर्बल हो गया। अन्ततः वह योगी श्री नागा महाराज के पास पहुँचा। योगी महाराज ने अपने सामने उसे भर पेट रोटी-दाल खिलाया। वह उसे भली भांति पच गया। उस दिन के बाद उसे कभी अपच नहीं हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी प्रकार एक बार अमर नाथ नामक योगी महाराज का एक भक्त तीव्र ज्वर से पीड़ित हो गया। वह बाबा की शरण में आया। बाबा ने उसके वस्त्र बदलवाकर उसे पूड़ी, साग, अचार, दूध खिलाया। वह भक्त तो उसी समय ठीक हो गया, किन्तु बाबा को ज्वर आ गया। कुछ ही समय बाद बाबा भी पूर्ण स्वस्थ हो गये।

एक बार फतेहपुर में योगी श्री नागा महाराज की एक भक्त महिला क्षय-रोग से पीड़ित हो गयी। बाबा ने उसे एक सामान्य सी जड़ी पीस खाने को दी। कुछ ही समय बाद वह महिला पूर्ण स्वस्थ हो गयी। जब जड़ी एक दूसरे क्षय-रोग से पीड़ित रोगी को दी गयी। किन्तु उससे उसे कोई लाभ नहीं हुआ। अब लोगों की समझ में आया कि वह जड़ी तो निमित्त मात्र थी। वस्तुतः वह भक्त महिला बाबा के संकल्प-मात्र से ही स्वस्थ हुई थी।

—:※:—

कष्ट शमन के लिए योगी का दिव्य आविर्भाव

एक बार बाबा विशुद्धानन्द भवानीपुर (कलकत्ता) में ठहरे थे। उस समय कविराज गोपीनाथ गोदौलिया के निकट सर्वमंगला लेन के एक मकान में काशी में रहते थे। कविराज जी की धर्म पत्नी की हालत उन दिनों बहुत खराब थी। काशी के सभी डॉक्टरों ने चिकित्सा की थी किन्तु कोई लाभ न हुआ। एक दिन उनकी तबियत बहुत अधिक खराब हो गयी। कुछ व्यक्तियों ने इसकी सूचना गुरुदेव स्वामी विशुद्धानन्द को भेजने को कहा, किन्तु कविराज जी ने बाबा को शरीर-मात्र के लिए कष्ट देना उचित न समझा और बाबा को सूचना नहीं दी। रोगी की हालत गिरती जा रही थी। एकाएक रात को ११-१२ बजे के लगभग रोगी के कमरे से पद्मगन्ध आती महसूस हुई। कविराज जी समझ गये कि गुरुदेव पधारे हैं। उसी समय से उनकी पत्नी की स्थिति में सुधार होने लगा। दौरे पड़ने बन्द हो गये। रोग शान्त हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन उनकी पत्नी बाथरूम में जा रहीं थीं। आंगन पार करते हुए कमजोरी के कारण वे रुक न सकी और गिरने लगीं। ठीक उसी समय गुरूजी स्थूल शरीर में आविर्भूत हुए और शिष्य को पत्नी के शरीर को हाथ से पकड़ कर गिरने से रोक लिया। गुरुदेव ने उन्हें कुछ गोलियाँ खाने को दीं और उनके सेवन की विधि बताकर अदृश्य हो गये। उस समय पत्नी ने गुरुदेव की दाढ़ी का स्पर्श भी अनुभव किया था।

गुरुदेव के अन्तर्ध्यान हो जाने के बाद उन्होंने अपने पतिदेव को बुलाया। वे उस समय नीचे की मंजिल में बैठे अध्ययन कर रहे थे। शीघ्रता पूर्वक वे ऊपर आए। पत्नी ने उनसे गुरुदेव के आगमन का सारा वृतान्त कह सुनाया. किन्तु वे उन गोलियों के सेवन की विधि भूल गयीं। कविराज जी ने पत्र द्वारा दवा की सेवन विधि बाबा से मँगायी। बाबा ने यथेष्ट निर्देश पूर्वक सेवन विधि पत्र में लिख दी जिसके सेवन से वे बिल्कुल स्वस्थ हो गयीं।

—※—

एक मास में कुष्ठ-निवारण किया

डोम जाति का नन्द नाम का एक व्यक्ति बाबा वामाक्षेपा का भक्त था। उसका हाथ घिनौने कुष्ठ रोग से पीड़ित था। वह बाबा के सारे काम करता। पानी भरकर लाता, कुत्तों की देखभाल करता आदि। जब कुछ भक्तों ने बाबा से नन्द के हाथ का पानी पीने को मना किया तो वे क्रोधित होकर बोले—'मैं उसके हाथ का पानी पीता हूँ, इससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?'

बाबा को नन्द के ऊपर इतना स्नेह था। फिर भी उसका रोग दूर नहीं हो रहा था। धीरे-धीरे रोग बहुत बढ़ गया। शर्म से नन्द ने बाबा के पास आना छोड़ दिया, लगभग एक सप्ताह बाद बाबा ने नन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को बुलवाया और उसे फटकारने लगे—'पापी, पाप करते समय सब भूल जाता है। कर्मों का फल भोग। अब तुम्हारा हाथ ही गलकर गिर जायगा।'

नन्द फफक-फफक कर रो उठा। कुछ देर बाद बाबा शान्त हुए, बोले—अब पाप नहीं करना रे! तारामाई का नाम लेना। जा, रोग ठीक हो जायगा। इस श्मशान की धूल रोज घाव पर लगाना।'

नन्द ने बाबा की आज्ञानुसार ही काम किया। एक महीने में ही उसका रोग ठीक हो गया।

—※—

गंगा की मिट्टी से असाध्य रोग ठीक किया

एक बार पूर्णचन्द्र घोष किसी रोग से पीड़ित हो गये। जीवन की आशा समाप्त हो चली, तो घोष जी ने लोकनाथ ब्रह्मचारी का आश्रय ग्रहण किया और रोग मुक्त हो गये। महा व्याधि सदा को दूर हो जाय, इस विचार से ब्रह्मचारी जी ने उन्हें बूढ़ी गंगा की मिट्टी मलने को कहा। श्री घोष कुछ दिन तक गंगा की मिट्टी मलकर गंगा के किनारे ही बैठे रहते थे।

एक बार श्री घोष के एक घनिष्ठ मित्र ने गंगा के किनारे बैठे अपने मित्र को देखा तो आश्चर्य पूर्वक उनसे पूछा कि आपकी यह दुर्दशा क्यों हो गयी? पूर्णचन्द्र घोष ने हर्ष मिश्रित स्वर में कहा—'भाई, यह मेरी दुर्दशा नहीं है। मेरी दारुण व्याधि लोकनाथ ब्रह्मचारी की कृपा से दूर हो गयी है। अब इस व्याधि के समूल नाश के लिए उन्होंने मुझे यह आदेश दिया है। इसके पीछे नास्तिकों को विश्वास दिलाने की भावना भी अन्तर्हित है।'

यह सुनकर मित्र बहुत प्रसन्न हुए और ब्रह्मचारी जी को मन ही मन प्रणाम करते हुए चले गये।

—※—

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंगारज से भयंकर रोग निवारण

सीतानाथ वंद्योपाध्याय नामक एक व्यक्ति दीर्घकाल से यक्ष्मा रोग से पीड़ित था। उसका शरीर कंकाल तुल्य बन गया था। एक दिन वह गंगा स्नान के लिए आया और पीड़ा की असहनीयता के कारण वेहोश होकर गिर पड़ा। आसपास के यात्री एकत्रित हो गये और भांति भांति से उसकी परिचर्या करने लगे। कुछ लोग हाय-हाय करने लगे। अकस्मात् उधर से तैलंग स्वामी आ निकले। उस व्यक्ति को मरणासन्न जान उनका हृदय दयाभिभूत हो उठा। स्वामी जी ने अपनी अंगुली से उसके वक्ष को स्पर्श किया जिससे उसकी वेहोशी दूर हो गयी। ब्राह्मण सीतानाथ ने होश में आकर स्वामी जो से अपने रोग के विषय में निवेदन किया। स्वामी जी ने गंगा जी की कुछ मिट्टी उठाकर रोगी को दे दी जिसके कुछ सेवन से कुछ काल बाद ही वह उस भयंकर रोग से छुटकारा पा गया। उसके बाद वह स्वामी जी का सेवक बन गया।

—※※—

फल खिलाकर प्राणघातो रोग से रक्षा की

एक बार बनारस के विख्यात होमियोपैथ चिकित्सक ईश्वर चौधरी का बच्चा किसी घातक रोग से आक्रान्त हो गया। वैज्ञानिक पद्धति से सब प्रकार से चिकित्सा की गयी किन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त में चौधरी साहब स्वामी भास्करानन्द जी की शरण में पहुँचे और अपनी सारी कथा कह सुनायी। पहले तो स्वामी जी ने कहा कि मैं कोई वैद्य या डॉक्टर नहीं हूँ। एक अकिंचन साधक मात्र हूँ। किन्तु चौधरी साहब ने उनके चरण नहीं छोड़े। अतः स्वामी जी ने दयार्द्र होकर सामने रखी टोकरी से एक फल उठाकर चौधरी साहब को दे दिया और कहा—'इस फल को जाकर रोगी को खिला दो, उसे अवश्य लाभ होगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौधरी साहब शीघ्र घर आये। फल खाने के बाद वह बालक कुछ ही समय में अच्छा-भला हो गया।

—:※:—

कुपथ्य द्वारा रोग निवारण का यौगिक चमत्कार

एक बार ढ़ाका निवासी पुलिन बिहारी मुखोपाध्याय के पुत्र वीरेन्द्रमोहन मलेरिया रोग से ग्रस्त हो गये। रोग धीरे-धीरे जड़ पकड़ गया और चिकित्सा व्यर्थ होने लगी। लाभ न होने से सब लोग निराश हो चुके थे।

उन दिनों 'बारदी' के आश्रम में लोकनाथ ब्रह्मचारी रहते थे। बंगाल में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। पुलिन बिहारी भी ब्रह्मचारी जी की शक्ति से परिचित थे। वे अपने पुत्र को महात्मा जी के पास ले गये और कातर स्वर में अपने पुत्र का कष्ट कह सुनाया। महात्मा जी ने कहा—'मैं कोई वैद्य या डाक्टर नहीं हूँ, भाई। तुम इसे किसी डाक्टर को दिखाओ।'

पुलिन बाबू ने प्रार्थना के स्वर में पुनः कहा—'गुरुदेव अब हम आपकी ही शरण में हैं। इसकी चिकित्सा में कोई कसर नहीं रखी गयी है, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ है।'

पुलिन बाबू के यह कहने पर महात्मा क्रोधित हो गये और वीरेन्द्र को डण्डे से मारने लगे। वीरेन्द्र चोट खाकर महात्मा के चरणों में गिर गया और बोला—'अब तो आपके चरणों में ही मेरा जीवन समाप्त होगा। मैं अब इस हालत में यहाँ से नहीं जाऊँगा।'

इतनी परीक्षा लेने के बाद महात्मा द्रवीभूत हुए और उन्होंने वीरेन्द्र को समीपस्थ पोखर में स्नान करने की आज्ञा दी। वीरेन्द्र ने पोखर में स्नान किया और लौटकर आने पर महात्मा द्वारा दिया गया दही-भात खाया। इस कुपथ्य से ही वीरेन्द्र का इतना पुराना रोग तनिक में नष्ट हो गया और वह पूर्ण स्वस्थ हो गया।

—:※:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेलपत्र से कुष्ठशमन किया

कुछ दिन तैलंग स्वामी ने असी घाट पर तुलसीदास के वगीचे में निवास किया था। एक दिन वे असीघाट से लोलार्क कुण्ड पर आये। कुण्ड पर उन्होंने देखा कि एक कुष्ठ रोगी जो जन्म से ही वधिर था, मार्ग के निकट ही पीड़ा से कराह रहा है। स्वामी जी उस रोगी के पास गये। महापुरुष योगीराज के दर्शन से रोगी को कुछ सांत्वना मिली और अकस्मात् उसके मुख से शिवाराधना के कुछ पद्य निःसृत होने लगे। उन पद्यों को सुनकर तथा रोगी के कष्ट को जानकर स्वामी जी के मन में दया उमड़ आयी। उन्होंने रोगी को वेलपत्र प्रदान करते हुए कहा—'तुम आज ही लोलार्क कुण्ड में स्नान करने के वाद अपने मस्तक पर यह वेलपत्र धारण कर लेना। शीघ्र ही तुम्हें इस रोग से छुटकारा मिल जायगा।

उस व्यक्ति ने वैसा ही किया। कुछ ही दिनों में वह उस भयंकर रोग से मुक्त हो गया। इस रोगी का नाम ब्रह्मसिंह था तथा यह अजमेर का निवासी था। रोग-मुक्त होने के वाद ब्रह्मसिंह स्वामी जी की सेवा करने लगा। उसकी गणना स्वामी जी के एकनिष्ठ सेवक के रूप में होने लगी।

—:※:—

योग शक्ति से मस्तिष्क का विकार दूर हुआ

प्रभु जी महाराज का सत्संग चल रहा था। एक भद्र महिला सत्संग में पधारी और गुरुदेव को प्रणाम कर दीन वचनों में कहा—'गुरुदेव, लगभग एक मास से मेरे पतिदेव अस्वस्थ हो गये हैं। वे पागलों की भाँति व्यवहार करते हैं, घर के बर्तन तोड़ना, वस्त्र फाड़ना, आने जाने वालों को मारने लगना आदि करते रहते हैं। मंत्र-तंत्र तथा इलाज से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। अब मैं आपकी शरण में आयी हूँ। कोई उपाय बताइये जिससे मेरे पति ठीक हो जायें।' गुरुदेव ने सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिस्थिति पर विचार करके कहा कि तुम एक नई कमीज सिलवा कर हमारे शिष्य मुलखराज को ला देना तथा कल इनकी कमीज ले जाना। कमीज सिर पर ही डालते ही उसका आवेश समाप्त हो जायगा तथा उसे पहनते ही वह बिल्कुल ठीक हो जायगा। दूसरे दिन वह महिला कमीज सिलवाकर लाई तथा मुलखराज जी की कमीज ले जाकर गुरुदेव के आदेशानुसार किया। कुछ ही देर में उसके पति का मस्तिष्क ठीक हो गया और वे साधारण मनुष्य की भाँति बात-चीत एवं कार्य करने लगे।

—:※:—

मृत्यु के बाद भी सदेह दर्शन दिये

परमहंस स्वामी विशुद्धानन्द अपने शिष्यों से निर्वाणकाल के उपरान्त भी सम्बन्ध बनाये हुए हैं। वे अपने भक्तों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करते हैं। गुजरात में उनके एक भक्त हैं, जिन्होंने जीवन काल में कभी भी स्वामी जी के दर्शन नहीं किये थे। अब स्वामी जी के निर्वाण काल के उपरान्त स्वामी जी कभी-कभी उस भक्त के घर जाकर दर्शन देते हैं। बाबा के आशीर्वाद से भक्त को एक पुत्र की प्राप्ति हुई है। यह पुत्र भी बाबा का स्थूल शरीर में दर्शन लाभ करता है।

स्वामी जी से सम्बन्धित इस घटना का उल्लेख डॉ० भगवती-प्रसाद सिंह ने 'मनीषी की लोक-यात्रा' नामक पुस्तक में किया है।

—※—

साधु अवज्ञा का कुफल-अग्नि देवता का कोप

एक बार रामदास अपने गुरू देवदास के साथ भ्रमण कर रहे थे। दोनों महात्मा लाहौर के निकट किसी ग्राम में ठहरे। कुछ अन्य संन्यासी भी वहाँ आ गये। संख्या एक हजार से भी अधिक हो गयी। उस ग्राम के एक सेठ शाल का व्यवसाय करता था तथा काफी धनी-मानी व्यक्ति था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन प्रातः काल गुरू जी के धूनी के समीप वह बैठा हुआ था। महात्मा ने उससे उस दिन साधुओं का भंडारा देने को कहा। संख्या अधिक होने के कारण सेठ तैयार नहीं हुआ, साथ ही उसने साधुओं को कुछ भला बुरा भी कहा। इससे गुरू देवदास रुष्ट होकर, बोले—'बनिया, तू बड़ा घमण्डी हो गया है। क्या तुझे नहीं मालूम कि साधुओं का तिरस्कार पाप है? आज तुझे इस पाप का फल भोगना होगा। घर जाकर देख, तेरे शाल के गट्ठर में अग्नि देवता ने कोप किया है।'

सेठ शीघ्र ही घर आया तथा शाल के गट्ठर को जलता देख भाग कर संन्यासी जी के पास गया और रोते हुए कहने लगा—'भगवन्! मेरा अपराध क्षमा कर दें। मेरा सर्वनाश हुआ जा रहा है। कृपा करके मेरी रक्षा करें। अब भविष्य में कभी ऐसा अपराध नहीं होगा। मेरा गोदाम तो बहुत सुरक्षित था। पता नहीं किस प्रकार वहाँ आग पहुँच गयी। मैं इस जमात को सात दिन तक भंडारा दूँगा। आप मेरी रक्षा कीजिए।'

अब सन्त देवदास को दया आयी। बोले—'अच्छा बेटा। गोदाम की आग बुझ गयी है। हाँ इतना दण्ड तुम्हें दिया गया है कि एक शाल जल गयी है। भविष्य में कभी साधु-अवज्ञा का गम्भीर अपराध न करना।'

सेठ ने घर आकर देखा तो उसकी एक शाल जल गयी थी, दूसरे मालों पर असर भी नहीं पड़ा था। अब सेठ को गुरुदेव की योग-शक्ति का ज्ञान हुआ। वह शीघ्र ही देवदास जी का शिष्य बन गया। आगे चलकर यह सेठ उच्च कोटि का साधक एवं योगी बना। देवदास ने उसे आध्यात्मिक मार्ग पर लाने के लिए ही यह लीला की थी।

—:*:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T